RNI-MPHIN/2005/14721
Po-Malwa Div/244/2020-22
Desp. 02 September, 2022

अंक – 3 (मासिक) वर्ष – 18 सितम्बर, 2022 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

प्रकृति ही परमात्मा

महिला संगठन का महाअधिवेशन

शंखनाद 2022

9-10-11 अक्टूबर | कोटा

युवा संगठन ने किया भव्य आयोजन

"हम है सुपर स्टॉर"

श्री माहेश्वरी मेलापक

वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2022
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

बात हम सबकी
सुने हर शनिवार

Contemporary Range of Home Essentials, Crafted by Experts

FANS | LIGHTING
APPLIANCES | SWITCHES

Toll Free : 18001032676 | Email : customercare@rrglobal.com | Website: www.rrglobal.com | Follow us

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-03 ▸▸ सितम्बर 2022 ▸▸ वर्ष-18

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
त्रिभुवन काबरा, वडोदरा

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)
गोविन्द मालू (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 900/- for Three years
Rs. 3500/- for Life Time (12 Years)

विचार क्रान्ति

अकिंचनता का सुख

महाभारत कथा में शरशय्याशायी भीष्म पितामह के देहत्याग से पूर्व युधिष्ठिर ने मनुष्यता का प्रतिनिधि बन अनेक प्रश्न पूछे थे। उनमें एक था, 'पितामह! संसार में निर्धन लोग दुःखी रहते हैं, यह तो समझ आता है किंतु धनवान तक दुःखी देखे जाते हैं, ऐसा क्यों है?'

यह प्रश्न आज भी जस का तस उपस्थित है। इसलिए कि सुख का सम्बन्ध कतई धन से नहीं है। यदि होता तो धनवानों को दुःख नहीं होता। मगर यदि इस धरती पर धन वाले भी दुःखी दिखाई देते हैं तो इसका कारण दूसरा ही है। वह क्या है, इसे समझाने के लिए भीष्म ने एक कहानी सुनाई।

हस्तिनापुर राज्य में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था जिसका नाम शम्पाक था। धनाभाव के कारण उसके पास पहनने के वस्त्र तक न थे। वह फ़टे-पुराने वस्त्रों में ही घूमता था। दुर्भाग्य से पत्नी झगड़ालू थी इस कारण अनेक बार घर पर खाना न बनने से वह भूखा रह जाता था। भीष्म के अनुसार एक बार जब स्वयं उनकी शम्पाक से भेंट हुई तब भी वह भूख से व्याकुल था। शम्पाक ने अपनी कथा भीष्म को बताई लेकिन अपने जीवन से उसे कोई शिकायत न थी। इतनी उथलपुथल व निर्धनता के बावजूद वह प्रसन्न और शांत था।

उसकी इस शांति ने भीष्म को आकर्षित किया और उन्होंने शम्पाक से इसका रहस्य पूछा तो उसने कहा, 'अकिंचनता।' जैसा कि महाभारत के शांतिपर्व के 176 वें अध्याय में शम्पाक का शब्दशः उत्तर है कि मैं तीनों लोकों पर दृष्टि डालकर देखता हूँ तो मुझे अकिंचन, शुद्र और सब ओर से वैराग्य से भरा कोई मनुष्य दिखाई ही नहीं देता। इसीलिए तो सब दुःखी हैं।

शम्पाक का कहना है, 'आकिंचन्यं सुखं लोके पथ्यं शिवमनामयम्। अनमित्रपथो ह्येष दुर्लभः सुलभो मतः।।' अर्थात् संसार में अकिंचनता ही सुख है। वही हितकारक, कल्याणकारी और निरापद है। इस मार्ग में किसी प्रकार के शत्रु का खतरा भी नहीं है। यह दुर्लभ होने पर भी सुलभ है।

साधो! अकिंचनता के दो अर्थ है। एक स्वयं की सत्ता का अहंकार न होना और दूसरा वस्तुओं का परिग्रह न करना। यदि शम्पाक की भाँति अकिंचन भाव सध जाए तो निर्धनता, भूख और सन्ताप में भी सुख है। न सधे तो धन की सम्पन्नता के बावजूद दुःख है। लोग अहंकार और वस्तुओं के संग्रह की होड़ में दुःखी है। फिर चाहे धनी हो या निर्धन। अन्यथा सच्चा सुख केवल अकिंचनता में ही सम्भव है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

...और आदत कभी नहीं जाती

दुष्यंत कुमार की यह पंक्तियां मेरे लिए हमेशा प्रेरणीय रही है। पूरी पंक्ति हैं... ''एक आदत सी बन गई है तू... और आदत कभी नहीं जाती...।'' निश्चित ही पर्यावरण के मामले में यह पंक्ति मेरे लिए कुछ इससे ज्यादा ही साबित हुई है। बचपन में स्कूल और युवावस्था में समाज के साथ पर्यावरण के प्रति आस्था बढ़ती गई लेकिन यह सब औपचारिक ही रहा। तब मन के किसी कोने में यह पंक्ति कहीं गूंजती रही। बस इसके साथ पर्यावरण के साथ एक रिश्ता सा बन गया। घर आंगन से लेकर समाज के बीच पर्यावरण को लेकर कुछ न कुछ करते रहने की ललक आदत बन गई।

आज मैं अपने आस-पास भी जब नजर डालता हूं तो कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने पर्यावरण को अपनी आदत में शामिल कर लिया है। मेरे एक इंजीनियर दोस्त ने अपने घर आंगन में पौधे लगाए। वे जब भी ऑफिस के लिए निकलते हैं तो उन पौधों को दुलराते हुए जाते हैं और जब लौटते हैं तो भी उनसे बतियाना नहीं भूलते। छुट्टी के दिन उन पौधों के साथ वक्त गुजारना उनकी आदत है। उनका अनुभव है कि उनके पौधे अन्य लोगों के आंगन के पौधों से ज्यादा तेजी से बढ़े... वे प्रसन्नचित्त नजर आते हैं... और उन्हें देख कर मेरा मन भी प्रफुल्लित हो जाता है। एक परिचित समाजसेवी हैं जो घोषित रूप से पर्यावरण के लिए काम करते हैं। पौधारोपण को अभियान बना कर स्कूली बच्चों को इसके लिए हरदम प्रेरित करना उनका काम है। बच्चों को लेकर वे निकल जाते हैं... कहीं पौधे लगाते हैं तो कहीं लगाए गए पौधों की देखभाल में उन्हें जुटा देते हैं। ऐसे ही एक अन्य व्यवसायी हैं जो अपनी कमाई का कुछ हिस्सा पौधे बांटने पर खर्च करते हैं। वे उन्हीं को पौधे देते हैं जो उनकी देखभाल में सक्षम हैं। एक शिक्षक ने अपने घर में नर्सरी बना ली है, जहां पौधे और खाद तैयार कर वे खाली जमीन पर उन्हें लगा आते हैं और देखभाल भी करते हैं। उनका खाली वक्त इसी काम में गुजरता है। ऐसे ही एक सज्जन सुबह की सैर में अपनी साइकिल पर पानी की केन भर कर चलते हैं और पौधों को सींचते चलते हैं।.... आदि... आदि... कई किस्से हैं उन लोगों के जिन्होंने पर्यावरण को अपनी आदत में शामिल कर लिया है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए जरूरी नहीं कि आप सब कुछ छोड़ कर इसी में जुट जाएं। आपके पास जितना वक्त है, जितनी सामर्थ्य है, उसमें भी इस भलाई को किया जा सकता है। अन्यथा उन लोगों की संख्या इन लोगों से ज्यादा है जो एक पौधे के साथ पूरी टीम फोटो खिंचवा कर मीडिया में येनकेन प्रकारेण प्रसारित करा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। उनका यह पर्यावरण प्रेम केवल ढकोसला मात्र है। उस प्रेम का कोई अस्तित्व है ही नहीं। उसे प्रेम कहा भी नहीं जा सकता। ...एक आदत सी बन गई है तू... यह केवल पर्यावरण ही नहीं बल्कि हर उस काम के लिए जरूरी है जो जनजीवन की भलाई का है। स्वच्छता को लेकर जब केंद्र सरकार ने मिशन शुरू किया तो लगता था, भारत जैसे देश में यह कैसे संभव है, लेकिन अब स्वच्छता हमारी आदत बन गई है।... बेटियों के प्रति नजरिया बदला है।...ऐसे और भी अनुभव हम महसूस कर सकते हैं।... पर्यावरण को जब तक हम अपनी आदत में शामिल नहीं करेंगे तब तक उसकी सुरक्षा पौधे के साथ फोटो खिंचवाने जैसी ही औपचारिक है। हमें स्वच्छता, पॉलीथिन और सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद करने, पौधारोपण और उनकी सुरक्षा, पीओपी की प्रतिमाओं से दूरी जैसे कई निर्णय स्वतः लेना होंगे और उन्हें अपनी आदत में शामिल करना होगा।

अपनी बात मैं ओशो की इस कहानी के साथ समाप्त करता हूं कि शराब बंदी वाले इलाके में बारात में गए व्यसनी आधी रात को भी शराब खोज कर ले आते हैं। यह इसलिए संभव है कि वे अपनी आदत के लिए पूरी शिद्दत के साथ जुटते हैं, वे किसी बहाने को आड़े नहीं आने देते। इसलिये अपनी आदत को सकारात्मकता की ओर बढ़ाऐं। इसी कामना व अपेक्षा के साथ पर्यावरण को समर्पित यह अंक प्रस्तुत किया गया है। प्रयास है, पर्यावरण के प्रति समर्पित व्यक्तित्व तथा कृतित्व को प्रोत्साहित कर समाज को इस ओर प्रेरित किया जाऐ। आशा है आपको यह अंक अवश्य ही पसंद आऐगा। अपनी प्रतिक्रिया भी हमें अवश्य ही दें।

जय महेश!

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

ख्यात उद्यमी, समाजसेवी तथा समाज चिंतक के रूप में पहचान रखने वाले वडोदरा निवासी त्रिभुवन काबरा का जन्म 07 अगस्त 1954 को नेपाल स्थित विराटनगर में श्री रामेश्वरलाल काबरा के यहाँ हुआ। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी के रूप में समाज में जाने जाते हैं। छोटे से रीटेल व्यवसाय से व्यापार की शुरुआत कर आज आर.आर.ग्लोबल ग्रुप ऑफ कंपनीज के चेयरमेन के रूप में देश-विदेश में एक सफल बिजनेसमेन के रूप में ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्व हैं। आपको आदर से भाईजी के नाम से अनुबोधित करते हैं। वर्तमान में ''अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा'' में मध्यांचल से उपसभापति पद पर रहते हुये समाज के विकास में अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं। इसके पूर्व भी ''गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी सभा'' सत्र 2016-2019 के अध्यक्ष के रूप में भी सेवा दे चुके हैं तथा माहेश्वरी समाज के लिए ''महेश सेवा ट्रस्ट'' के संरक्षक पद पर भी अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। आप वनबंधु परिषद व ''फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल सोसायटी'' के वडोदरा चैप्टर के प्रेसिडेंट के रूप में जिम्मेदारी निभा रहे हैं। इसके साथ-साथ आप ''ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ पुष्कर न्यास'' पुष्कर के ट्रस्टी एवं ''MRKM महिला सशक्तिकरण ट्रस्ट'' मुंबई के चेयरमेन के रूप में भी समाज को अपनी सेवा दे रहे हैं। आप अभी तक आदित्य बिरला ग्रुप द्वारा ''श्रेष्ठ इंडस्ट्रियलिस्ट'', वर्ष 2017 में दिव्य भास्कर द्वारा ''Entrepreneurial Excellence'', BMA (बरोड़ा मेनेजमेंट एसोसिएशन) द्वारा श्रीमती राजश्री बिरला के हाथों श्रेष्ठ इंडस्ट्रियलिस्ट के अवार्ड से सम्मानित हो चुके हैं। वर्ष 2017 में IIIMM, वडोदरा द्वारा ऑनरेरी फेलोशिप के साथ संरक्षक पद द्वारा सम्मानित किया गया। औरंगाबाद में आयोजित इंडस्ट्रियल ट्रेड फेयर में माहेश्वरी युवा मण्डल द्वारा भाईजी को श्रेष्ठ उद्योगपति का सम्मान दिया गया। वर्ष 2018 में फेडरेशन ऑफ गुजरात इंडस्ट्रीज, वडोदरा द्वारा केन्द्रीय मंत्री मेनका गांधी के हाथों से आपको ऑउटस्टेंडिंग इंटरप्रेन्योर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

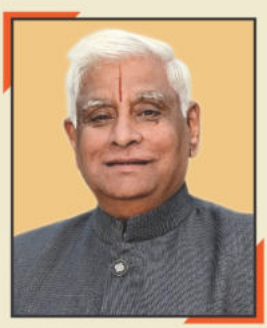

अपनी शक्ति का करें सही उपयोग

स्वतंत्रता दिवस पर पूरे देश ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर आजादी की 75वीं वर्षगाँठ अमृत महोत्सव के रूप में मनाई। इसमें प्रधानमंत्रीजी ने राष्ट्र की भावना को देश के हर नागरिक में उत्पन्न करने के लिये ''हर घर तिरंगा अभियान'' का आह्वान किया। इसका परिणाम सभी के सामने है कि इस स्वतंत्रता दिवस पर पूरे देश में घर-घर स्वेच्छा से इतने तिरंगे लहरा रहे थे, कि शायद विश्व में ऐसा कहीं कभी नहीं हुआ होगा। इस अभियान ने पूरी दुनिया को हमारे देशवासियों की देशभक्ति से परिचित करवा दिया।

14 अगस्त 1947 को देश की आजादी की रूपरेखा बन रही थी। इसी विषय पर ब्रिटिश सरकार से चर्चा चल रही थी। आखिरकार मतभेदों को दूर नहीं किया जा सका और 15 अगस्त 1947 को देश दो भागों भारत और पाकिस्तान में विभाजित होकर ही स्वतंत्र हो पाया।

उस समय हमारा जन्म भी नहीं हुआ था लेकिन हम उस समय की स्थिति की कल्पना कर सकते हैं। यहां तक कि मेरा परिवार भी विभाजन के बाद पाकिस्तान से भारत में स्थानांतरित हुआ था। जिन्हे उस समय की विषम परिस्थियों के बारे में जानकारी है, उन्हें अमृत महोत्सव मनाने का महत्त्व समझ आएगा। हमारे प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण भारत को प्रत्येक क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अग्रिम श्रेणी में ले जाना है। सोच है प्रत्येक नागरिक को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र हित के कार्य को गतिशील बनाने के लिए राष्ट्र की मुख्य धारा का समर्थन करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी जीएसटी और आईटी के माध्यम से सरकार को पारिश्रमिक देना भी है।

'हर घर तिरंगा' अभियान ने लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जगाई है और इससे भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता भी बढ़ी है। लोगों ने अपने घरों, कारखानों, दुकानों और वाहनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और प्रदर्शित किया। इससे एक भारतीय नागरिक के रूप में लोगों को अधिक गर्व महसूस हुआ।

मेरे आदर्श हैं - नितिन गडकरी, जिनमें शक्ति का उपयोग करने की अद्भुत क्षमता है। इस स्वतंत्रता दिवस समारोह के संदर्भ में, मैं श्री गडकरीजी को दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क बनाने की महान उपलब्धि के लिए बधाई देना चाहता हूं, जो कुल 5.89 मिलियन किलोमीटर में फैला है।

नितिन जयराम गडकरी एक ऐसे भारतीय राजनेता हैं जो वर्तमान में मोदी सरकार में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री के रूप में सेवारत हैं। उन्हें पार्टी और आम जनता के साथ उनके व्यापक काम के लिए सराहा जाता है। वे कहते हैं कि - 'आदमी को उसके द्वारा रखी गई संगत से आंका जाता है।' नितिन गडकरीजी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के साथ लंबे समय से जुड़े होने के कारण प्रतिबद्धता, समर्पण, अनुशासन, नेतृत्व, नवाचार और रचनात्मकता जैसे गुणों का विकास हुआ है, साथ ही राष्ट्र-प्रथम इस दृष्टिकोण का भी भाव निर्मित हुआ है।

आज इस सड़क नेटवर्क के विकास के कारण हमारे वाहन संचालन में ईंधन की खपत और रखरखाव में भी कमी आई है। उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग सड़कों और जलमार्गों को विकसित करके परिवहन क्षेत्र को बदलने के लिए किया है जो पूरे देश में आश्चर्यजनक है।

हम सभी के पास शक्ति है। बस कुछ इसका सही तरीके से उपयोग कर सकते हैं, कुछ यह नहीं जानते कि इसका उपयोग कैसे किया जाए। जो व्यक्ति अपनी शक्ति का उपयोग करना जानता है वह अपने जीवन में सफल होता है। शक्तिशाली लोग दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं, संस्थान बदलते हैं, और व्यापार में बड़ा प्रभाव डालते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हम अगले साल स्वतंत्रता दिवस को और अधिक उत्साह और बेहतर तरीके से मनाएंगे।

झंडा ऊँचा रहे हमारा !! वन्दे मातरम!

त्रिभुवन काबरा, वडोदरा
अतिथि सम्पादक

श्री बंगर माताजी

श्री बंगर माताजी माहेश्वरी जाति की सोमाणी खांप की कुलदेवी है। बंगर माताजी का मंदिर राजस्थान में चित्तौड़गढ़ जिले के करीब 70 किमी पर गांव कानड़ा-खेड़ा, पोस्ट-ताना वाया अकोला, तहसील-कपासन के ऊँचे पहाड़ पर स्थित है।

■ टीम SMT

एक रास्ता रतलाम-नीमच से निम्बाहेड़ा स्टेशन से भी है। पहाड़ की ऊँचाई करीब 300 मीटर है। माताजी का मंदिर अति प्राचीन है। बंगर माताजी का मंदिर बिजासन माताजी के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर चौकला के पंचों ने संवत्-2012 भादवा शुक्ल पक्ष नवमी के कालू खां मिस्त्री के द्वारा बनवाया था। मंदिर में माताजी के साथ उनकी बहन तथा भैरव भी विराजमान हैं। माँ का तेजस्वी आकर्षक रूप मन को बड़ी शांति देता है। माँ के दर्शन करने पर पहाड़ चढ़ते की थकान महसुस नहीं होती। नीचे से मंदिर तक आराम से चढ़ने पर करीबन 45 से 60 मिनट का समय लगता है। वापस उतरने में करीब 20-25 मिनट लगते हैं। पहाड़ पर होने से वर्तमान में बिजली तथा पानी की सुविधा नहीं है। मंदिर के साथ ही एक बड़ा पक्का कमरा है तथा एक चबूतरा है। आसपास के सभी गांवों के लोगों की माताजी पर अटूट श्रद्धा है।

विशेष आयोजन

नवरात्र में नवमी के दिन यहाँ मेले का आयोजन होता है तथा सभी गाँव के लोग यहाँ सामूहिक प्रसाद (भोजन) ग्रहण करते हैं। इस दिन गाँववाले टेम्पपरी नीचे से बिजली का तार लगाकर मंदिर में लाइट का प्रबंध करते हैं। दो खुली बगैर चौखट-दरवाजे की खिड़की बनी है। उसमें से छोटे नवजात बच्चों को लाकर माताजी के सामने लेटाया जाता है। भोपाजी ताराजी वृद्ध पंडितजी पूजा करते हैं। गाँव के लोग व बच्चों का सहयोग सराहनीय है।

कैसे पहुंचे

मंदिर चित्तौड़गढ़-उदयपुर 4 लेन नेशनल हाईवे पर चित्तौड़गढ़ से करीबन 70 किमी की दूरी पर है। रतलाम-नीमच की तरफ से आते वक्त निम्बाहेड़ा स्टेशन से नेशनल हाईवे का रास्ता है। यहाँ से करीब 60 किमी की दूरी पर है।

समीपस्थ दर्शनीय स्थल

निम्बाहेड़ा के तथा चित्तौड़गढ़ से माताजी के रास्ते में सांवरिया सेठ (श्रीकृष्णाजी) का भव्य अति सुंदर दर्शनीय मंदिर आता है। यहाँ बड़ी-बड़ी धर्मशाला तथा सभी सुविधाएँ हैं। यहाँ से भगवान का दर्शन कर पीर की चौकी से कानड़खेड़ा गाँव जाना चाहिए। वापसी में रास्ते में शनिदेवजी का काफी बड़ा जागृत मंदिर दर्शनीय है। कानड़ खेड़ा से 2 किमी पर ताना गाँव है। यहाँ एक सोमानी परिवार मांगीलाल सोमानी का घर है। ताना गाँव से भी मंदिर जा सकते हैं। श्री मांगीलालजी तथा उनका परिवार बड़ा ही स्नेही, मिलनसार तथा सहयोगी है।

कुलदेवी माताजी की जानकारी हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।
द्वारकादास परसराम सोमानी
नागपुर-440018
मो. 93231 55109, 87887 18195

युवाओं ने बताया हम हैं 'सुपरस्टार'

अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन ने किया भव्य आयोजन

'श्री बसन्तीलाल मनोरमादेवी काल्या अ.भा. माहेश्वरी युवा फाउंडेशन' द्वारा विजेताओं को दिये पुरस्कार

रायपुर। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आतिथ्य एवं रायपुर जिला माहेश्वरी युवा संगठन के आयोजकत्व में संपूर्ण भारतवर्ष के 27 प्रदेशों व नेपाल से आये 2500 से अधिक युवा सदस्यों, समाजबंधु व प्रतिभागियों की उपस्थिति में 19 से 21 अगस्त तक अपार सफलताओं के साथ राष्ट्रीय सांस्कृति महोत्सव ''हम हैं सुपरस्टार'' संपन्न हुआ। साथ ही राष्ट्रीय कार्यसमिति एवं कार्यकारी मंडल बैठक भी आयोजित हुई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या ने बताया कि युवा संगठन ने इस कार्यक्रम के माध्यम से नए आयाम स्थापित किए हैं। इस आयोजन के विजेताओं को युवा संगठन के ट्रस्ट 'श्री बसन्तीलाल मनोरमादेवी काल्या अ.भा. माहेश्वरी युवा फाउंडेशन' द्वारा साधन और संसाधन उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने का प्रयास किया जाऐगा। इन्हीं विजेताओं में से कोई किसी फिल्म में गाना गाते हुए दिखाई दे, कोई सीरियल या फिल्म में कार्य करते हुए दिखाई दे, ऐसी आशा श्री काल्या ने व्यक्त की। राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री राजेश मंत्री ने देशभर से आये सभी सदस्यों का अभिनंदन किया। राष्ट्रीय महामंत्री आशीष जाखोटिया ने सभी अतिथियों, सदस्यों व प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

सबसे बड़ा युवा कुंभ

यह युवा संगठन का अब तक का सबसे बड़ा युवाकुंभ रहा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या, महामंत्री आशीष जाखोटिया, सांस्कृतिक मंत्री राजेश मंत्री, कोषाध्यक्ष राहुल बाहेती, संगठन मंत्री भरत तोतला, खेल मंत्री अर्पित धूत, निवर्तमान महामंत्री प्रवीण सोमानी आदि अपनी सम्पूर्ण टीम के साथ उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अनिल मानधनी, दीपक चांडक, विवेक मोहता मधु मालू अमित सारड़ा, शैलेंद्र करवा, अजय राठी, राकेश झंवर आदि की विशेष उपस्थिति रही। छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष रामरतन मूंधड़ा, महामंत्री सुरेश मूंधड़ा एवं टीम, छत्तीसगढ़ प्रादेशिक युवा संगठन अध्यक्ष रूपेश गांधी, महामंत्री अरुण डागा एवं टीम, रायपुर जिला अध्यक्ष रमेश झंवर, महामंत्री राकेश सोमानी एवं टीम उपस्थित थे। इस सम्पूर्ण आयोजन के स्वागत अध्यक्ष आलोक माहेश्वरी, कार्यक्रम संयोजक नीलेश मूंधड़ा, प्रादेशिक संयोजक मुकेश राठी एवं जिला संयोजक ललित सोमानी थे। इस महाकुम्भ मे विविध सांस्कृतिक आयोजन सिंगिंग, डांसिंग, ग्रुप डांसिंग, मिस्टर एंड मिसेज माहेश्वरी, माहेश्वरी गोट टैलेंट, दिव्यांग प्रतिभा सम्मान समारोह में देशभर के माहेश्वरी युवाओं ने भाग लिया।

ये रहे प्रतियोगिताओं के विजेता

सिंगिंग जूनियर ग्रुप विजेता सोनाक्षी मुथा पश्चिमी राजस्थान, उपविजेता युवराज लोया विदर्भ, ग्रुप विजेता निरझर चांडक छत्तीसगढ़, उपविजेता प्रतीची मालपानी महाराष्ट्र, ग्रुप में विजेता वरुण काबरा गुजरात, उपविजेता पवन झंवर महाराष्ट्र रहे। म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट में जूनियर वर्ग में विजेता राघव बजाज तमिलनाडु, उपविजेता नीलकुमार भूतड़ा महाराष्ट्र, सीनियर वर्ग में विजेता केशव काबरा महाराष्ट्र, उपविजेता ऋषि लाहोटी गुजरात रहे। क्लासिकल एवं फॉक डांस में विजेता मानवी राठी पश्चिमी

राजस्थान, उपविजेता राशि सोनी तेलंगाना रही। ग्रुप डांस में विजेता विदर्भ प्रदेश की टीम एवं उपविजेता तमिलनाडु की टीम रही। सोलो डांस जूनियर ग्रुप में चारवी माहेश्वरी पश्चिमी राजस्थान प्रथम, आश्वि तोतला मध्य राजस्थान द्वितीय, ग्रुप में विजेता लाइशा छप्परवाल महाराष्ट्र उपविजेता नयन पुंगलिया गुजरात, ग्रुप में विजेता आलोक माहेश्वरी मध्य राजस्थान,

उपविजेता ऋषिका माहेश्वरी पश्चिमी राजस्थान रही। स्टैंडअप कॉमेडी में विजेता रवि भट्टड़ महाराष्ट्र एवं उपविजेता सुनील करवा कर्नाटक रहे। इस वर्ष मिस्टर माहेश्वरी का खिताब कृष्णन गोपाल मानधना कोलकाता को मिला तो वहीं उपविजेता आशीष माहेश्वरी गुजरात रहे। मिस माहेश्वरी का खिताब रुचिका बागड़ी उत्तरी राजस्थान एवं उपविजेता रुचि भट्टड़ महाराष्ट्र को मिला। सभी विजेताओं और उप विजेताओं को युवा संगठन के ट्रस्ट 'श्री बसन्तीलाल मनोरमादेवी काल्या अ.भा. माहेश्वरी युवा फाउंडेशन' द्वारा पारितोषिक प्रदान किया गया।

कार्यसमिति एवं कार्यकारी मंडल बैठक में लिए गए कई महत्वपूर्ण निर्णय

राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव 'हम हैं सुपरस्टार' के साथ रायपुर (छत्तीसगढ़) में तृतीय कार्यकारी मंडल एवं त्रयोदश कार्यसमिति बैठक भी आयोजित हुई। सभी प्रदेशों के अध्यक्ष, सचिव, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य, कार्यकारी मंडल सदस्य व राष्ट्रीय पदाधिकारी बैठक में उपस्थित रहे। बैठक का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री आशीष जाखोटिया ने किया। राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री राजेश मंत्री ने बताया कि संपूर्ण भारतवर्ष व नेपाल से 2500 से अधिक युवा साथी प्रतिभागी इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने रायपुर पहुंचे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री काल्या ने बताया कि युवा संगठन के विधान संसोधन की जरूरत काफी वर्षों से महसूस हो रही है इसलिए विधान संशोधन किया जाना अपेक्षित है, जिस पर सदन में

विस्तृत चर्चा की गई और कई प्रकार के सुझाव प्राप्त किए। जल्द ही विधान संशोधन किया जाएगा। राष्ट्रीय खेल मंत्री अर्पित धूत ने बताया कि आगामी 23-24-25 दिसंबर को राष्ट्रीय खेल महोत्सव ''ऑल इंडिया माहेश्वरी स्पोर्ट्स कॉम्पीटीशन'' का आयोजन पश्चिमी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आयोजकत्व व जोधपुर जिला माहेश्वरी युवा संगठन के आतिथ्य में होगा। युवा संगठन द्वारा युवाओं व समाज बंधुओं के आपस में व्यापार-व्यवसाय बढ़ाने व रोजगार प्रदान करने हेतु होने वाली ऐप लॉन्चिंग की सभी ने सराहना की। अनिल मानधनी, प्रवीण सोमानी, शैलेंद्र करवा, राकेश झंवर, दीपक चांडक, विवेक मोहता, अमित सारड़ा, मधु मालू ने भी बैठक में अपने विचार व्यक्त किए। हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के साथियों ने आगामी 13-14-15 नवंबर 2022 को मां वैष्णो देवी के दर्शनों के साथ वहां कार्यसमिति बैठक आयोजित करने की जानकारी सदन के सम्मुख रखी।

महिला संगठन ने जन्माष्टमी पर दी मनमोहक प्रस्तुति

बीकानेर, जोधपुर, अजमेर, जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा सहित पूरे राजस्थान से एक ही ट्रेन में लगभग 325 से अधिक युवा साथी प्रतिभागी रायपुर पहुंचे। मानो पूरी की पूरी ट्रेन ही युवा संगठन ने बुक करा ली हो। एयरपोर्ट पर लगा ऐसा मजमा कि देखने वाले दंग रह गये। कहीं फ्लाइट पूरी की पूरी समाज के युवा साथियों और प्रतिभागियों से फुल थी, मानो चार्टर प्लेन ही लेकर आ रहे हों। महिला संगठन ने जन्माष्टमी पर ऐसी मनमोहक प्रस्तुत दी, जिसे सराहे बिना कोई न रह सका। निवर्तमान राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री संदीप करनानी तथा विशाल होलानी, प्रमोद जाजू, लविता माहेश्वरी आदि का अति सराहनीय योगदान रहा है।

सशक्त नारी समृद्ध समाज का ''शंखनाद''

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन का शिक्षा नगरी कोटा में होगा भव्य त्रिदिवसीय आयोजन

कोटा। अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वावधान में द्वादश सत्र के महिला महाधिवेशन ''शंखनाद 2022'' का आयोजन सशक्त नारी समृद्ध समाज की थीम पर होगा। इस कार्यक्रम का संयोजन पूर्वी राजस्थान माहेश्वरी महिला संगठन, आतिथ्य कोटा जिला माहेश्वरी महिला संगठन एवं कुन्हाड़ी महिला संगठन तथा आयोजन माहेश्वरी महिला मंडल कोटा करेगा। यह त्रिदिवसीय आयोजन 9 से 11 अक्टूबर तक 6 सद्गुण सभागार, एलन सम्यक लैंडमार्क सिटी, कुन्हाड़ी (कोटा) में हो रहा है।

महिला संगठन अध्यक्ष आशा माहेश्वरी (कोटा) तथा महामंत्री मंजू बांगड़ (कानपुर) के नेतृत्व में आयोजित इस महाधिवेशन में ममता मोदानी (भीलवाड़ा) स्वागताध्यक्ष तथा किरण मानधना (कोटा) स्वागत मंत्री की भूमिका निभाऐंगी। कोषाध्यक्ष ज्योति राठी (रायपुर) तथा संगठन मंत्री शैला कलंत्री (येवला) भी अहम भूमिका निभाऐंगी। इस आयोजन का प्रमुख लक्ष्य नारी को अपने संस्कारों के साथ सशक्त तथा समृद्ध बनाना है, जिससे सही मायने में माहेश्वरी नारी शक्ति अपने आपको समृद्ध कह सके। इसके लिये इसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्कार एवं संस्कृति संवर्धन के साथ प्रतिभा प्रदर्शन एवं मनोरंजन होगा। इसके साथ पर्यावरण संवर्धन हेतु ''प्लास्टिक मुक्त भारत तथा अन्न बचाओ'' संकल्प द्वारा जन जागरण, विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर चिंतन (लघु नाटिकाओं द्वारा), माहेश्वरी समाज की गौरवशाली सशक्त महिलाओं तथा किशोरी प्रतिभाओं का सम्मान, आध्यात्मिक व उपयोगी विषयों पर व्याख्यान, संगठन की शक्ति तथा विभिन्न कार्यों का प्रदर्शन, विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा का आदान प्रदान, डिजिटल समाज हेतु अत्याधुनिक साधनों का प्रयोग तथा कोविड-19 में प्रभावित परिवारों की महिलाओं को रोजगार का अवसर प्रदान करने हेतु महिला सेवा ट्रस्ट द्वारा एक एग्जीबिशन का आयोजन होगा।

अतिथियों के सम्मान से शुभारम्भ

महाधिवेशन का आगाज भारत की शैक्षणिक नगरी कोटा में माहेश्वरी समाज की विशिष्ट विभूतियों एवं राष्ट्रीय पदाधिकारियों के स्वागत से होगा। ''प्रकृति संरक्षण-जीवन रक्षण'' नामक ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति की आंचलिक नृत्य नाटिका अन्तर्गत पूर्वांचल-गाय, उत्तरांचल- गंगा, दक्षिणांचल- ग्राम, पश्चिमांचल-गीता, मध्यांचल-गोविंद जैसे विषयों पर नृत्य नाटिका की प्रस्तुति देंगे। ''कर्मसारथी 2022'' शीर्षक से व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति की क्विज कॉम्पिटीशन आयोजित होगी। यह प्रतियोगिता सभी प्रदेश पदाधिकारियों के लिए आयोजित की गई। पांच राउंड में सम्पन्न होने वाली इस प्रतियोगिता के प्रथम तीन वर्चुअल राउंड सम्पन्न हुए। ग्रांड फिनाले शंखनाद अधिवेशन में मंच पर (कोटा में) आयोजित होगा। इस प्रकार के कार्यक्रम से संगठन की जानकारी, प्रोटोकॉल व कार्य करने की शैली की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है व कार्यकर्ताओं की सोच को मजबूती मिलती है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य संगठन के संविधान को बारीकी से समझना एवं विस्तृत जानकारी प्रदान करना है।

ऐसे औपचारिक उद्घाटन

उदघाटन बाल एवं किशोरी विकास समिति अंतर्गत भारतीय संस्कृति के अनुरूप बाल एवं किशोरियों की मनोहारी प्रस्तुतियों द्वारा भव्य स्नेह स्वागत से किया जायेगा। दीप प्रज्जवलन, अतिथि स्वागत आदि औपचारिकता के साथ ख्याति प्राप्त उद्योगपति, राजनीतिज्ञ, वरिष्ठ समाजसेवी, पदाधिकारियों का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा। समाज विभूति पदमभूषण राजश्री बिरला एवं लोकसभा अध्यक्ष ओम कृष्ण बिरला के कर कमलों से उद्घाटन होगा। सशक्त महिला सम्मान एवं किशोरी प्रतिभा सम्मान के साथ अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गीता मूंदड़ा एवं विमला साबू के अतुलनीय सामाजिक योगदान के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय मंच पर उनका अभिनंदन किया जायेगा। ''शरद रास माधुर्य'' आयोजन में पर्व एवं सांस्कृतिक समिति द्वारा उत्सव के अनुरूप भजनों पर लाइव प्रस्तुति देकर सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा शरद उत्सव मनाया जायेगा। इसके विषय कृष्ण लीला व महारास रहेंगे। इसके लिये हर अंचल को 2 टॉपिक समान रूप से दिए हैं।

शोभायात्रा के द्वितीय दिवस का शुभारम्भ

अगले दिन10 अक्टूबर को ''दिव्य प्रभात शोभा यात्रा'' अध्यात्म एवं स्वाध्याय समिति अंतर्गत निकलेगी। इसमें महिला परिधान पूर्वांचल - पहाड़ी रंग (ब्राउन), पश्चिमांचल- केशरिया रंग, मध्यांचल- गुलाबी रंग, उत्तरांचल-हरा रंग, दक्षिणांचल- नीला रंग तथा, सभी पुरूषों का परिधान-सफेद कुर्ता पायजामा रहेगा। ''भगवत गीता संदेश प्रतियोगिता'' में प्रत्येक प्रदेश द्वारा भगवत गीता पर आधारित दो संदेश पट्टिका का समावेश होगा। प्रभात यात्रा में सभी अंचल से प्रमुख मंदिरों के भगवान के स्वरूप की झांकियां शोभायमान रहेगी। उत्तरांचल- भगवान बद्रीनाथ, पूर्वांचल-भगवान जगन्नाथजी, मध्यांचल- भगवान द्वारकाधीश, दक्षिणांचल-भगवान रामेश्वरम, पश्चिमांचल- भगवान श्रीनाथजी की झाँकी प्रस्तुत करेंगे। ''मोटीवेशनल व्याख्यान'' में प्रसिद्ध वक्ता द्वारा प्रेरक व्याख्यान से सभी को वास्तविक धरातल का एहसास कराते हुए उच्च लक्ष्य की प्राप्ति में मार्गदशन दिया जायेगा। ''जागृति कवयित्री व्याख्यान'' राष्ट्रीय साहित्य समिति अंतर्गत आयोजित होगा। इसमें प्रत्येक प्रदेश से एक प्रतिभागी 4 से 5 मिनट का स्वरचित काव्य प्रस्तुत करेंगी। विविध विषय एवं विविधता पूर्ण शैली द्वारा काव्य पाठ किया जायेगा। प्रत्येक विषय मानव जीवन दर्शन, भावनाओं एवं चिंतन मनन पर आधारित होगा। ''कौन बनेगी मणिकर्णिका?'' स्पर्धा महिला अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति द्वारा आयोजित होगी। इसमें चाहे खेल हों, कुकिंग हो, शिक्षा संबंधित क्षेत्र हों या आईपीएस सेवा, सभी मिलकर करवाऐंगे शौर्यवान

महिलाओं से साक्षात्कार, जो वो मंच से पहले लिखित राउंड्स में और फिर मंच पर अपनी बुद्धि तथा विवेक से करवायेंगी।

''बदलती धारणाओं'' से अंतिम दिवस का शुभारम्भ

स्वास्थ्य पारिवारिक समरसता समिति व विवाह संबंध सहयोग समिति द्वारा लघुनाटिका प्रतियोगिता 'बदलती धारणायें' आयोजित होगी। इसमें पारिवारिक समरसता व सौम्यता, परिवार को एकसूत्र में पिरोने हेतु क्या प्रयास किये जा सकते हैं? इसके लिये विभिन्न विषयों पर विभिन्न अंचलों द्वारा प्रस्तुति दी जाऐगी। किसी भी आयोजन की सफलता उसके कार्यकर्ताओं के सहयोग पर निर्भर है। अतः इस आयोजन में सहयोग हेतु कार्यकर्ताओं के सम्मान के साथ कार्यक्रम का समापन होगा।

इन बातों का रखें ध्यान

इस आयोजन के लिये कम्प्यूटर समिति लेकर आ रही है एनी टाईम मार्गदर्शन अर्थात इन्फो डेस्क जिसमें उपलब्ध रहेगी- महाअधिवेशन ''शंखनाद-2022'' के कार्यक्रमों की जानकारी, संगठन की विस्तृत जानकारी व गतिविधियों तथा प्रकल्प, ट्रस्टों की जानकारी, सम्पर्क ऐप आदि और साथ-साथ उपलब्ध हैं निजी तकनीकी समस्याओं का सहायता केंद्र। बायोडाटा मैंचिंग काउंटर का 20 सितम्बर 2022 से पूर्व गठबंधन ऐप से लोड हो चुके बायोडाटा में से अभिभावक अपने विवाह योग्य बच्चों के संबंध ढूंढने में निःशुल्क सुविधा का लाभ ले सकते हैं। आयोजन के रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 30 अगस्त है। स्पॉट रजिस्ट्रेशन नहीं होगा। जिनके पति साथ आ रहे हैं उनका भी रजिस्ट्रेशन फॉर्म (गूगल फार्म) भरना अनिवार्य है। सभी प्रतियोगी को अपना पहचान पत्र रखना अनिवार्य है। राष्ट्रीय महिला अधिवेशन शंखनाद में आयोजित प्रतियोगिता मूलक कार्यक्रमों में केवल राष्ट्रीय पदाधिकारी, समिति प्रभारी तथा प्रदेश अध्यक्ष भाग नहीं ले सकते हैं बाकी सभी के लिए मान्य है। परंतु कर्म सारथी 2022 क्विज प्रतियोगिता में प्रदेश अध्यक्ष भी अपने प्रदेश के पदाधिकारियों के साथ सहभागी होंगे।

आजादी के अमृत महोत्सव का किया आयोजन

कोलकाता। स्वाधीनता की 76 वीं वर्षगांठ पर माहेश्वरी सभा द्वारा अपनी शाखा एवं संबंधित संस्थाओं के सहयोग से स्वतंत्रता दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। सुबह लगभग 10:00 बजे श्री माहेश्वरी विद्यालय एवं माहेश्वरी बालिका विद्यालय के स्काउट्स एवं गाइड्स द्वारा अथितियों को गार्ड ऑफ ऑनर देने के बाद कार्यक्रम के अथितियों और सभा के सभापति एवं उपसभापति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया।स्काउट्स एवं गाइड्स के छात्र-छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को सलामी गारद दिया गया। श्री माहेश्वरी विद्यालय, माहेश्वरी बालिका विद्यालय एवं शिशु विहार के छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति के गीतों एवं नृत्य की प्रस्तुति दी। पिछले सत्र में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक (कॉमर्स, आर्ट्स एवं साइंस) की परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन कर उत्कृष्ट अंको से उत्तीर्ण श्री माहेश्वरी विद्यालय एवं माहेश्वरी बालिका विद्यालय के छात्र-छात्राओं को मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। समारोह की अध्यक्षता विद्यालय के ही भूतपूर्व छात्र सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी राधेश्याम केजरीवाल ने की। प्रधान अतिथि के रूप में बीमा क्षेत्र के कुशल विशेषज्ञ रमेश कुमार दम्मानी उपस्थित थे।

ऐश्वर्या आईआईटी में चयनित

भंडारा। संतोष लालचंदजी असावा भंडारा की सुपुत्री कु. ऐश्वर्या असावा का इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रुड़की में मास्टर इन इनोवेशन मैनेजमेंट के कोर्स के लिए चयन हुआ है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले ऐश्वर्या एनआईटी वरंगल से एमएससी मैथमेटिक्स की डिग्री प्राप्त कर चुकी हैं।

सत्तु तीज पर की सामूहिक पूजा

रायपुर (छत्तीसगढ़)। सत्तू तीज की पूजा विधि विधान के साथ स्थानीय समाज द्वारा संयुक्त रूप से की गई। इसमें डॉ. छाया राठी, डॉ. साधना चांडक, डॉ. ज्योति चांडक, डॉ. ममता चांडक आदि उपस्थित थीं।

प्रवीण भूतड़ा का हुआ सम्मान

दुर्ग (छत्तीसगढ़)। व्यवसायी प्रवीण भूतड़ा का आल इंडिया टेंट कैटरिंग एसोसिएशन दिल्ली ने प्रगति मैदान दिल्ली में आयोजित 'आकार एग्जिबिशन', कार्यक्रम में गत 13 अगस्त 2022 को मोमेंटो और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। श्री भूतड़ा अ. भा. माहेश्वरी महासभा के कार्यसमिति सदस्य व निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष छत्तीसगढ़ प्रदेश माहेश्वरी सभा विठ्ठल भूतड़ा के सुपुत्र तथा राजेश टेंट हाउस- द वेडिंग कॉर्पोरेट सत्तीचौरा दुर्ग के संचालक हैं। आप आदित्य विक्रम बिड़ला मेमोरियल व्यापार सहयोग केंद्र चेन्नई व श्री बांगड़ माहेश्वरी मेडिकल वेलफेयर सोसायटी के ट्रस्टी एवं छत्तीसगढ़ महेश सेवा निधि ट्रस्ट के संरक्षक सदस्य भी हैं।

भगवान शिव की उपासना का मास श्रावण भगवान महेश के वंशजो ने पूरे उल्लास एवं श्रृद्धाभाव के साथ मनाया। इसके अंतगर्त विभिन्न धार्मिक आयोजन तो हुए ही साथ ही रचनात्मक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों से समाज की प्रतिभाओं को मंच भी प्रदान किया।

महोत्सव के साथ किया सावन का स्वागत

भीलवाड़ा। आर. के. आर. सी. माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत अध्यक्ष इंदिरा हेड़ा और सचिव चेतना जागेटिया के नेतृत्व में सावन महोत्सव का आयोजन आर. के. आर. सी. महेश भवन पर किया गया। प्रचार मंत्री मीनू झंवर ने बताया कि सावन महोत्सव में हाऊजी, अंत्याक्षरी जैसे मनोरंजक खेलों के साथ-साथ मिसेज सावन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत महिलाओं ने लहरिया पहनकर सोलह श्रृंगार के साथ सज-धज कर भाग लिया। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में ममता मोदानी, शिखा भदादा, अनिला अजमेरा, सीमा कोगटा, प्रीति लोहिया, भारती बाहेती, रीना डाड, लीला राठी आदि उपस्थित थीं। निर्णायक की भूमिका में रीटा बूलिया, आशा अग्रवाल, अनिता नौलखा आदि उपस्थित थीं। सावन माह के अंतर्गत प्रत्येक सदस्या द्वारा कम से कम पांच पौधे लगाने तथा उनकी देखरेख करने की जिम्मेदारी की शपथ ली गई। कार्यक्रम में स्नेहलता तोषनीवाल, सुनीता मूंदड़ा, मंजुला मंत्री, चंद्रकांता गगरानी, सुमित्रा दरगड, रंजना बिड़ला, सुशीला अजमेरा, रेनू समदानी, मितिका लड्ढा, विनीता नुवाल, पूनम डाड आदि कई सदस्याओं का विशेष सहयोग रहा।

जोधपुर। माहेश्वरी महिला संगठन पूर्वी क्षेत्र द्वारा गत 28 जुलाई को मंडल की सदस्याओं द्वारा सावन उत्सव हरियाली अमावस्या के उपलक्ष्य में मनाया गया। अध्यक्ष सुशीला बजाज ने बताया कि इस उत्सव में करीबन 100 से भी अधिक सदस्याओं ने हरे रंग के वस्त्र पहनकर भजन कीर्तन किए एवं हरियाली अमावस्या की एक दुसरे को शुभकामनाएं दी। सचिव गीता सोनी ने बताया कि सावन के मधुर गीतों का सभी ने खूब आनंद उठाया। कुसुमलता बाहेती कार्यक्रम संयोजिका थी। कोषाध्यक्ष सुनीता डागा ने बताया कि इस उत्सव में प्रदेश सचिव कमला मूंदड़ा भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम में गीता राठी, संजू सोनी, अनीता सोनी, रमा कपूरिया, शोभा डागा, निर्मला लोहिया, लीला सोनी, शशि राठी सहित मंडल की सदस्याओं का योगदान रहा।

राजनांदगांव। महिला मंडल द्वारा विगत 20 जुलाई को माहेश्वरी भवन में सावन उत्सव का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की थीम सावन में आने वाले सभी प्रमुख त्योहार जैसे रक्षाबंधन, तीज, जन्माष्टमी, स्वतंत्रता दिवस आदि पर गायन, नृत्य एवं नाटक की प्रस्तुति देना था। अध्यक्षीय उद्बोधन शीला गांधी द्वारा दिया गया एवं कार्यक्रम का संचालन सचिव सुषमा राठी एवं अलका सुरजन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण संरक्षक गण एवं पदाधिकारियों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में एक आकर्षक सीटिंग डांस की प्रस्तुति रही। सभी प्रतिभागी को स्मृति चिन्ह के रूप पर्यावरण में उपयोगी पौधा लगा हुआ गमला जिला सचिव विनीता डागा व शशि चितलांगिया द्वारा वितरित किया गया। आभार प्रदर्शन कोषाध्यक्ष अनीता चितलांगिया द्वारा किया गया।

मलकापुर। माहेश्वरी बहू मंडल द्वारा सावन के विभिन्न कार्यक्रम माहेश्वरी भवन में आयोजित किए गए। बहू मंडल की अध्यक्षा शिल्पा मुंधड़ा, उपाध्यक्ष सोनिया केला तथा सचिव पूनम टावरी ने कार्यक्रम की रुपरेखा सभी सदस्यों के साथ मिलकर तैयार की। 23 जुलाई को अचार के मसालों से रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। 24 जुलाई को लड्डू गोपाल की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की। दूसरी प्रतियोगिता ''बच्चों का टैलेंट शो'' आयोजित की गई। तीसरी प्रतियोगिता राधा कृष्णा थीम पर डुएट डांस प्रतियोगिता बहुत ही उत्साह से आयोजित की गई। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. ज्योति केला एवं पूनम टावरी ने किया। मयुरी काबरा, अनीता केला, पूनम मूंधड़ा, पूनम बाहेती, काजल मालू, अंकिता मालपानी, संगीता चांडक, मिलन बाहेती, सोनल धूत तथा बहू मंडल की सभी सदस्यायों ने योगदान प्रदान किया।

लोहार्गल धाम का किया भ्रमण

जोधपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन सचिव उषा बंग ने बताया कि सावन की हरियाली अमावस्या पर संगठन की सदस्याओं ने भगवान महेश के वंशज माहेश्वरियों के उत्पत्ति स्थल लोहार्गल धाम के पवित्र सूर्य कुंड में स्नान किया। पुष्कर के बाद इसे दूसरा तीर्थ स्थल माना जाता है। यह अरावली पर्वत श्रंखला में स्थित अत्यंत ही रमणीय स्थल है। यहाँ स्थित माहेश्वरी कुलदेवी के दर्शन कर सालासर धाम एवं खाटू श्याम जी के भी दर्शन किए। अध्यक्ष शिवकन्या धूत ने बताया कि श्रीकांता बूब, वीणा सोनी, संजू राठी, छाया राठी, पश्चिमी जोन अध्यक्ष सुनीता जैसलमेरिया, दक्षिणी जोन सचिव प्रमिला वैद्य, उत्तरी जोन उपाध्यक्ष संतोष भूतड़ा, प्रेरणा मंत्री, संतोष भैया, ममता शाह आदि ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का आनंद भी लिया।

लड्डू गोपाल सजाओ स्पर्धा सम्पन्न

पाली। श्री माहेश्वरी महिला संगठन पाली के तत्वावधान में हरियाली अमावस्या पर लड्डू गोपाल सजाओ प्रतियोगिता रखी गयी। संगठन की अध्यक्षा शान्ति कासट ने बताया कि सभी ने उत्साह के साथ ठाकुर जी का शृंगार किया गया। इसमें प्रथम राज भट्टड़, द्वितीय गोविदी राठी, तृतीय राधिका बागड़ी रहीं। सावन प्रतियोगिता में प्रथम दीपा सावल व द्वितीय सुनीति बागड़ी रहीं।

रुद्राभिषेक से गोवंश के कल्याण की कामना

संगरिया। स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा भगवान शिव के रुद्राभिषेक का सामूहिक आयोजन कर गोवंश में जारी लंपी रोग के निवारण की कामना की गई। गुरुनानक नगर में आरटीपी माइनर के नजदीक स्थित सन्यास आश्रम भारती कुटिया में स्वामी बालानंद गिरि के सान्निध्य में पारद शिवलिंग पर रुद्राभिषेक संपन्न करवाया गया। माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल राठी, सचिव लखन करवा पार्षद, जिला संगठन मंत्री पवन राठी, संगरिया सालासर धर्मशाला के अध्यक्ष तनसुख दास राठी, माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष महेश लखोटिया व युवा संगठन के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य कपिल करवा ने बताया कि माहेश्वरी समाज द्वारा प्रतिवर्ष भगवान शिव के प्रिय श्रावण मास में एक सामूहिक आयोजन किया जाता है। इस बार वर्तमान स्थिति को देखते हुए गोवंश की गंभीर स्थिति को मद्देनजर रखते हुए रुद्राभिषेक में संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना के साथ-साथ गोवंश के रोग निवारण की कामना विशेष रूप से की गई।

सेवा सदन की बैठक सम्पन्न

हरिद्वार। श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन हरिद्वार-बद्रीनाथ भवन निमर्काण व्यवस्था समिति बैठक सेवा सदन के अध्यक्ष रामकुमार भूतड़ा और रमेश छापरवाल महामंत्री की उपस्थिति सम्पन्न हुई। हरिद्वार बद्रीनाथ समिति के सदस्यगण नीरज चांडक सहारनपुर, संयोजक प्रल्हाद राठी, कमल किशोर चांडक आदि कई सदस्य इस बैठक में उपस्थित थे।

तिरंगा यात्रा के साथ नीम महोत्सव

बाडमेर (राज.)। पदमश्री बी.एल. राठी के जन्मदिवस तथा को मारवाड़ी महासभा के पूर्व अध्यक्ष मनमोहन गुप्ता, सीए इंस्टीट्यूट के उपाध्यक्ष सुनील पाटोदिया व राकेश झुनझुनवाला की स्मृति में महेश राठी द्वारा पाकिस्तान बार्डर के पास बाड़मेर में नीम महोत्सव आयोजित किया गया। इसी के साथ स्वतंत्रता दिवस पर देश की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर "तिरंगा" फहराकर देश की स्वतंत्रता को नमन भी किया गया।

असहायों के लिये भोजन व्यवस्था

परकोटा। क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा परकोटा द्वारा पुनः असहाय वर्ग के लिए बांगड़ हॉस्पिटल मे भोजन प्रसादी की व्यवस्था की गई। यह क्षेत्रीय सभा का चौथा आयोजन था। इस आयोजन में 1000 से अधिक लोगो ने प्रसादी पाई। परकोटा सभा द्वारा नीता नाहर सिंह फोफलिया का इसमें विशेष सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया गया। इसमें ओमप्रकाश मंधना अध्यक्ष, अनिल माहेश्वरी (अत्तार) (मंत्री), द्वारकादास जाजू कोषाध्यक्ष व रामकिशन सोनी संगठन मंत्री आदि उपस्थित थे।

जाने कौन सी शोहरत पर इंसान को इतना नाज है जबकि वो आखरी सफल के लिये भी औरों का मोहताज है।

माहेश्वरी समाज ने अपना पारम्परिक पर्व सातुड़ी (कजरी) तीज गत भाद्रपद कृष्णपक्ष तृतीया को पूरे उत्साह के साथ मनाया। इसमें घर-घर नीमड़ी पूजन के साथ महिलाओं ने अखंड सौभाग्य की कामना की, वहीं कई जगह समाज संगठनों ने सामूहिक रूप से भी सातुड़ी तीज (पर्व) का आयोजन किया। इन आयोजनों के कई फोटो हमें प्राप्त हुऐ, लेकिन अधिकांश निर्धारित मापदण्ड के अनुसार नही पाये गये। फिर भी चयन समिति ने अत्यंत कठिनता से श्रेष्ठ फोटो का चयन कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

माहेश्वरी परम्परों के साथ मना सातुड़ी तीज पर्व

दीपा कोठारी, मुरैना (म.प्र.)

राधेशम न्याति और परिवार सरजेपुरा, अहमदनगर।

हंसा केला, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)

माहेश्वरी डॉट ओ आर जी की प्रबंध संचालक शर्मिला राठी नई दिल्ली अपनी पुत्रवधू के साथ तीज उत्सव पर नई दिल्ली

उमेश मंत्री, पदमा राजगोपाल झंवर
आंनद बिल्डिंग, 723 गुरुवार पेठ, राष्ट्रभूषण चौक, पुणे

'समय' और 'स्थिति' कभी भी बदल सकती है, कभी किसी का अपमान मत करो व कभी किसी को कम मत समझो। आप शक्तिशाली हो पर समय आपसे भी अधिक शक्तिशाली है।

महिला संगठन दिल्ली प्रदेश ने आयोजित किया मयूरी अधिवेशन

दिल्ली। गत 9 और 10 जुलाई को राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में तेरा पंथ भवन, छत्तरपुर में दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन ने 2 दिवसीय मयूरी अधिवेशन का आयोजन किया। इसमें सातों क्षेत्रों की क्रियात्मकता, सृजनात्मकता, रचनात्मकता का प्रदर्शन हुआ। उद्घाटन सत्र का शुभारंभ महिमा मंत्री की महेश वंदना पर नृत्यांजलि से हुआ। अतिथि के रूप में राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष आशा माहेश्वरी, राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़, रा. उपाध्यक्ष ममता मोदानी, उद्योगपति एस. एन. चांडक, रा. प्रभारी प्रेमा झंवर, शर्मिला राठी व मंजू मांधना उपस्थित थीं। प्रदेश अध्यक्ष श्यामा भांगडिया ने अध्यक्षीय स्वागत उद्बोधन दिया। मंजू बांगड़, ममता मोदानी, एस. एन. चांडक, रा. समिति प्रभारी प्रेमा झंवर ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन नीरू लाहोटी एवम शालू सोनी ने किया। बाल एवम किशोरी विकास तथा स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समितियों के अंतर्गत ''लो पासा पलट गया'' वाद विवाद प्रतियोगिता में सोशल मीडिया के लाभ और नुकसान पर बड़ी ही सारगर्भित अभिव्यक्तियां हुई। रात्रि में ''इश्क ए दिल्ली'' स्वरचित गायन प्रतियोगिता आयोजित हुई। कार्यक्रम का संचालन मोनिका दम्मानी एवं सरोज साबू ने किया। प्रथम स्थान पर पूर्वी क्षेत्र, द्वितीय स्थान पर दक्षिणी क्षेत्र, तृतीय स्थान पर पश्चिमी क्षेत्र रहे। द्वितीय दिवस को प्रातः काल कंप्यूटर समिति के अंतर्गत जुंबा एवं विभिन्न गेम्स खिलाए गए।

जलियांवाला बाग अमृतसर का भ्रमण एवं तीज महोत्सव

अमृतसर। हरियाणा पंजाब प्रादेशिक महिला संगठन की चतुर्थ कार्यकारिणी बैठक ''सात्विका'' गत 29 एवं 30 अगस्त को अमृतसर में आयोजित हुई। बैठक को भ्रमण का रूप दिया गया। पूरे हरियाणा पंजाब प्रदेश से 75 सदस्याओं ने इसमें भाग लिया। प्रदेश अध्यक्ष सुमन जाजू ने बताया कि मुख्य अतिथि के रूप में विवाह समिति राष्ट्रीय प्रभारी शर्मिला राठी एवं महिला सशक्तिकरण समिति राष्ट्रीय प्रभारी उषा मोहंता, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य पूनम राठी एवं विवाह समिति सह प्रभारी मंजू सोमानी भी उपस्थित थीं। 29 जुलाई को अमृतसर पहुंचने पर जलियांवाला बाग का भ्रमण किया गया। फरीदाबाद संगठन की सदस्याओं द्वारा ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अंतर्गत राष्ट्र को समर्पित एक देश भक्ति गीत की प्रस्तुति दी गई। नीतू भूतड़ा द्वारा संगठन की सदस्याओं एवं महिला पुलिस बल को ध्यान मुद्राओं द्वारा कई बीमारियों का निवारण भी बताया गया। अटारी एवं बाघा बॉर्डर का भी भ्रमण किया एवं अटारी बॉर्डर पर प्रदेश की सदस्याओं ने

तिरंगा फहराया एवं देशभक्ति गीतों पर अपनी नृत्य प्रस्तुति दी। देश की सुरक्षा करने वाले वीर सैनिकों को राखी भी बांधी। रात्रि में स्वर्ण मंदिर एवं दरबार साहिब दर्शन कर सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। प्रदेश संगठन द्वारा 25 किलो चावल स्वर्ण मंदिर में दान स्वरूप दिए गए। जलियांवाला बाग ACP द्वारा प्रदेश संगठन के कुशल नेतृत्व के लिए अध्यक्ष सुमन जाजू एवं सचिव सीमा मूंदड़ा को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। 30 जुलाई को प्रदेश महिला संगठन की बैठक रखी गई एवं हरियाली तीज महोत्सव मनाया गया। अमृतसर संगठन की अध्यक्ष रेखा बियानी एवं अन्य सदस्याओं द्वारा सभी का स्वागत किया गया। मंच का संचालन अमृतसर संगठन सचिव सुधा मंत्री, प्रदेश सचिव सीमा मूंदड़ा, अनु सोमानी एवं जयश्री पेडिवाल द्वारा किया गया। प्रदेश अध्यक्ष सुमन जाजू द्वारा सम्मान प्रतीक भेंट कर सभी का स्वागत किया गया। इस उत्सव में विशेष अतिथि के रुप में डॉ. कुंवर विजय प्रताप सिंह, विधायक अमृतसर नार्थ उपस्थित थीं।

महेश धाम का किया अवलोकन

उज्जैन। बुलढाना अर्बन को-ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड के सीएमडी डॉ. सुकेश झंवर उज्जैन प्रवास के दौरान श्री महाकाल महेश सेवा ट्रस्ट द्वारा निर्मित किये जा रहे 'श्री महेश धाम' का अवलोकन करने हेतु 4 अगस्त को प्रातः 12 बजे निर्माण स्थल पर आये। इस अवसर पर उपस्थित ट्रस्ट अध्यक्ष जयप्रकाश राठी एवं एवं महेश धाम गौशाला संयोजक शैलेंद्र राठी ने डॉ. झंवर का पुष्पमाला से स्वागत किया। डॉ. झंवर ने निर्माण कार्य पर अपनी प्रसन्नता जाहिर करते हुए उज्जैन समाज के बंधुओं और ट्रस्ट को बधाई व शुभकामना दी। उन्होंने आश्वस्त किया कि बुलढाना बैंक भी श्री महेश धाम में सहभागी बनेगा। इस अवसर पर बुलढाना बैंक के रीजनल मैनेजर प्रसन्न चाण्डक, हास्य कवि अशोक नागर, आशीष गुप्ता, पुष्कर बाहेती भी उपस्थित थे।

पुण्य स्मृति में भजन संध्या आयोजित

भीलवाड़ा। स्वर्गीय श्रीमती जतन देवी डाड की पुण्य स्मृति में 'भजन संध्या-हर बात को तुम भूलो भले मां बाप को मत भूलना' आयोजित की गई। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय भजन गायिका ने अनेक भावनात्मक भजन गाकर उपस्थित जनों को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम का प्रारंभ राजा ठाकुर सोडाणी ने दीप प्रज्वलित करके किया तथा सभी का आभार अनिता सोडाणी ने प्रकट किया।

तिरंगा रैली का किया आयोजन

शाजापुर। आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में हर घर तिरंगा अभियान में 4 अगस्त को माहेश्वरी समाज शाजापुर एवं वैश्य महासम्मेलन जिला अध्यक्ष कमल नारायण माहेश्वरी द्वारा संयुक्त रूप से तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। तिरंगा रैली उत्कृष्ट विद्यालय बस स्टैंड से प्रारंभ होकर मुख्य मार्गो से होती हुई नई सड़क चौक बाजार में सम्पन्न हुई। रैली का शुभारंभ शाजापुर पुलिस अधीक्षक जगदीश डावर ने किया।

सावन सिंजारा उत्सव का हुआ आयोजन

सूरत। राधिका महिला मंडल (माहेश्वरी समाज) अड़ाजन द्वारा गत 6 अगस्त को सावन सिंजारा का आयोजन हनी पार्क रोड, अड़ाजन सूरत पर ग्रीन रेजिडेंसी के क्लब हाउस में किया गया। इसमें माहेश्वरी समाज की करीब 150 महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में परंपरागत रूप से लोकगीतों पर नृत्य किया और पारम्परिक खेलों का आयोजन कर इस कार्यक्रम का आनंद अल्पाहार के साथ लिया। इस कार्यक्रम की संयोजिका रेखा रामसहाय सोनी ने अन्त में सभी आगुंतकों का आभार व्यक्त किया।

सवा लाख शिवलिंग का किया रुद्राभिषेक

हैदराबाद। संस्कार धारा एवं भजन सत्संग समिति कोठी सुल्तान बाजार द्वारा सावन के पावन माह में पाँच दिवसीय सवा लाख शिवलिंग का रुद्राभिषेक सुल्तान बाजार स्थित श्री नृसिंह मंदिर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम प्रधान संयोजिका कलावती जाजू ने बताया कि पाँच दिनों तक प्रतिदिन प्रातःकाल 6:00 बजे से हर दिन 25,000 शिवलिंग बनाये गये। पाँच दिनों में सवालाख शिवलिंग का रूद्राभिषेक हुआ। अंतिम दिन रुद्राभिषेक के बाद हवन तथा भण्डारे का भी आयोजन किया गया। प्रतिदिन रूद्राभिषेक में 30 से 35 लोगों ने भाग लिया। मुख्य यजमान नारायण दास इन्द्रादेवी भराडिया, दैनिक यजमान रामेश्वरलाल शकुन्तला देवी जाजू, बद्रीनारायण गोविन्द राठी, शोभा अटल, सुरेश मंजू लाहोटी, शिवप्रसाद मनोजकुमार चोकडा, रमेश राम मणियार आदि सभी सदस्य-सदस्याओं ने योगदान दिया।

किसी को गीता में ज्ञान न मिला
किसी को कुरान में ईमान ना मिला,
उस बंदे को आसमान में रब क्या मिलेगा
जिसे... इंसान में इंसान ना मिला।

'सीप के मोती' का हुआ विमोचन

उज्जैन। ऋषिमुनि प्रकाशन उज्जैन द्वारा प्रकाशित एवं नागपुर की ख्यात लेखिका शोभा रमेश गाँधी द्वारा संकलित ''सीप के मोती'' भाग-2 का विमोचन बुलढाना अर्बन को.आप.सोसायटी लिमिटेड के सीएमडी डॉ. सुकेश झंवर के करकमलों से गत 04 अगस्त को ऋषिमुनि प्रकाशन कार्यालय पर हुआ। 1200 से अधिक सकारात्मक विचारों वाली इस पुस्तक में व्यावहारिक मोटिवेशनल कोटेशन समाहित हैं। पुस्तक का विमोचन करते हुए डॉ. झंवर ने लेखिका श्रीमती गाँधी को शुभकामनाएँ दी और कहा कि यह पुस्तक सबके लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। इस अवसर पर प्रसिद्ध हास्य कवि अशोक नागर, आशीष गुप्ता, प्रसन्न चाण्डक (रिजनल मैनेजर बुलढाना बैंक), प्रकाशक पुष्कर बाहेती, मुनि बाहेती आदि उपस्थित थे।

एनसीसी अधिकारियों को बांधी राखी

वरंगल। राखी पर्व पर स्थानीय राजस्थानी महिला मंडल, की सदस्याओं ने वरंगल के एनसीसी के अधिकारियों के साथ राखी पर्व मनाया। इसमें सभी ने एनसीसी के ऑफिसरो को राखी बाँधी। सभी के लिए मिठाई एवं अल्पाहार की व्यवस्था रही। उक्त जानकारी समाज की मंत्री ने दी।

तिरंगा का किया वितरण

निजामाबाद। तेलंगाना आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा एवं निजामाबाद जिला माहेश्वरी सभा के संयुक्त तत्वावधान में 75वें आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत हर घर तिरंगा अभियान में निजामाबाद के सभी माहेश्वरी बंधुओं के घर में जिला माहेश्वरी युवा संगठन के साथियों द्वारा तिरंगे वितरित किए गए। इसका शुभारंभ 12 अगस्त को प्रातः 11:00 बजे स्थानीय माहेश्वरी भवन में डॉ आनंद मालू द्वारा किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव आयोजित

दिल्ली। देश की आजादी का अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2022 को श्री जयचंदलाल करवा माहेश्वरी (जेसीकेएम) छात्रावास दिल्ली में उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। ट्रस्टी श्याम सुंदर कल्याणी ने सम्मानित अतिथि संजय लोहिया (आईएएस) का स्वागत किया। श्री लोहिया ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और इसके बाद राष्ट्रगान का पाठ किया गया। श्री लोहिया ने छात्रों को भी संबोधित किया जिसके बाद वंदे मातरम का पाठ किया गया। प्रबंध न्यासी बृजमोहन राठी ने भी छात्रों को संबोधित किया। देशभक्ति गीतों के बीच जलपान कराया गया। इसके बाद श्री लोहिया के साथ एक कॉन्क्लेव संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिन्होंने एक आईएएस अधिकारी के जीवन के अंशों को अपने 25 वर्षों के समृद्ध अनुभव से साझा किया।

गौवंश को खिलाई लम्पी की दवा

कालांवाली-सिरसा (हरियाणा)। बेसहारा गो बंश के लम्पी बीमारी से बचाव के लिए युवा समाजसेवी संयोग माहेश्वरी ने दवाइयों की खरीद करके, इसे माहेश्वरी युवा संगठन और जय गो माता समिति कालांवाली के सदस्यों को देकर गो वंश को दवा देने का अभियान प्रारम्भ किया। इससे पहले देसी दवाईया भी दी गई थी। अव वेटनरी सर्जन के अनुसार दवाइयों की खुराक गो बंश को खिलाई जा रही हैं तांकि यह रोग आगे ना फैले। संयोग कोठारी प्रदेश माहेश्वरी युवा संगठन पंजाब हरियाणा हिमाचल जम्मू कश्मीर के संगठन मंत्री और नरेश माहेश्वरी (कोठारी) के सुपुत्र हैं।

'स्वाद' और 'विवाद' दोनों को छोड़ दो
'स्वाद' छोड़ो तो शरीर का फायदा
'विवाद' छोड़ो तो संबंधों का फायदा।

श्री बांगड़ मेडिकल वेलफेयर सोसायटी की बैठक सम्पन्न

ब्यावरा। श्री बांगड़ माहेश्वरी मेडिकल वेलफेयर सोसायटी की 14वीं बैठक श्रीसीमेन्ट रास ब्यावर में गत 31 जुलाई को हरिमोहन बांगड़ चेयरमेन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। श्री बांगड़ ने अपने उदबोधन में सामूहिक बीमा योजना का पूर्ण प्रचार करने व इसके लिए सहायता राशि 30 लाख करने का प्रस्ताव रखा। डिप्टी चेयरमेन रामपाल सोनी ने अपने उदबोधन में कहा कि रक्तदान शिविर अधिक आयोजित किये जाने चाहिये। इसके लिये सहयोग 3 लाख रुपये किये जाने का विचार व्यक्त किया। राधेश्याम सोमाणी मंत्री ने वर्तमान सामूहिक बीमा के लिए दी जा रही सहायता का विवरण पेश किया। इसके साथ ही वर्ष 2022-23 का पूरक अनुमानित बजट भी पेश किया। राजकुमार काल्या अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन ने सोसायटी की कार्य प्रणाली की सराहना की और सुझाव दिया कि बड़े जिलों में डायलिसिस की व्यवस्था में सहयोग करें। जुगलकिशोर सोमाणी ने फेमेली आईडी नियमों में सरलीकरण का सुझाव दिया, जिससे आय से कमजोर परिवारों को तुरंत सहयोग प्राप्त हो। बैठक में महासभा संगठन मंत्री अजय काबरा सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

नागोरी की पुण्य तिथि पर गीता प्रवचन एवं सम्मान समारोह

कोलकाता। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी रामगोपाल सोहिनी देवी नागोरी चैरीटेबल ट्रस्ट, डीडवाना नागरिक सभा एवं कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के संयुक्त तत्वावधान में श्रद्धेय स्व. श्री बद्री विशाल नागोरी की 20वीं पुण्य तिथि पर वार्षिक व्याख्यानमाला का आयोजन स्थानीय कला कुंज सभागार में किया गया। 'गीता के ज्ञान से कैसे सुखी रह सकते हैं?' विषय पर ओजस्वी वक्ता एवं गीता मर्मज्ञ, इस्कॉन के स्वामीजी ऋतुद्वीप गौर दास महाराज का व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सव्यसाची रमण मिश्रा, आईजीपी, काउंटर इनसर्जेंसी फोर्स, प.बंगाल ने की। स्व. बद्री विशाल नागोरी स्मृति सम्मान द्वारा गौरीशंकर माहेश्वरी चेयरमैन दिनहाटा नगर पालिका को सम्मानित किया गया। मधु माहेश्वरी ने भगवद्गीता एवं अपने पिता स्व. श्री नागौरी पर अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में नागोरी परिवार की हीरामणी, ओमप्रकाश, डॉ. श्रीबल्लभ, राजेश, नरेश, किशन, कुलदीप, सूरज नागोरी, महेश माहेश्वरी एवं विमला देवी बियानी आदि उपस्थित थे। मुरली मनोहर मानधना, रमेश भईया, विनोद भराडिया, राजीव केजरीवाल, देवकिशन मुंधड़ा, मुकुंद राठी, भँवरलाल राठी, भागीरथ चाँडक सीताराम मुंधड़ा, श्रीबल्लभ भूतड़ा, अरुण लढा आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

भारती भूतड़ा बनी निर्विरोध नगर पंचायत अध्यक्ष

विदिशा। जिले की शमशाबाद नगर पंचायत में भारती भूतड़ा को भाजपा एवं सभी चुने गये पार्षदों द्वारा निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। श्रीमती भूतड़ा माहेश्वरी समाज के पूर्व नगर अध्यक्ष प्रदीप भूतड़ा की पत्नी व पूर्व जनपद अध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी मूलचंद भूतड़ा की बहू है।

हाईकू

राम मूंदड़ा, इंदौर

मेरे तो
दर्द भी
औरों के
काम आते हैं....

गर मैं
रो पड़ूं,
तो कई **लोग**
मुस्कुराते हैं!!

■

सुई चलती है
तो **बेहतरीन**
पोशाक बनाती है।

हर **चुभने** वाली
चीज़ का **मक़सद**
बुरा नहीं होता है।

■

महोब्बतें
खत्म मत कर,
दोस्तियां
मत **उजाड़**।

अभी जीनी
है **दुनिया,**
खटखटाने हैं
फिर **किवाड़**।

■

दर्द दे-दे के
दवा बेचेगा,
बाद फिर इसके
दुआ बेचेगा।।

माल को **बेचने**
में माहिर है,
कौन जाने वो
क्या क्या बेचेगा?

तिरंगा प्रभात फेरी का किया आयोजन

सहारनपुर। महानगर चेंबर ऑफ इंडस्ट्रीज एंड सर्विसेज द्वारा हर घर तिरंगा प्रभात फेरी बड़ी धूम धाम से निकाली गई। इसमें महानगर अध्यक्ष रवीन्द्र मिगलानी, उपाध्यक्ष नीरज माहेश्वरी, दिनेश जाजू, कोषाध्यक्ष घनश्याम माहेश्वरी, संजय मोहता, शिशिर मोहता सहित समस्त सी. ई.एस परिवार सदस्य सम्मलित रहें।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर का हुआ आयोजन

हैदराबाद। सिकन्दराबाद मारवाडी महिला योगदान, फ्रेन्डस इन सर्विस हैदराबाद का निःशुल्क चिकित्सा शिविर स्वास्थ्य समिति द्वारा आर्यकन्या विद्यालय में आयोजित किया गया। संगठन की अध्यक्षा कलावती जाजू एवं मंत्री मंजू लाहोटी ने बताया कि इस शिविर का उदघाटन अमृत कुमार जैन के कर कमलों से हुआ। मुख्य अतिथि मंजू गोपाल बल्दवा थे। विशेष अतिथि के रूप में लीला डागा एवं वेद ज्वेलर्स की उपस्थिति रही। इसमें लगभग 335 लोगों ने शिविर का लाभ लिया। माहेश्वरी सभा के मंत्री कैलाश डालिया, महेश बैंक के चेयरमेन रमेश बंग, महेश बैंक डायरेक्टर समाजसेवी गोविंद नारायण राठी एवं राजकुमार लोया आदि की विशेष की उपस्थिति रहीं।

तीज-सावन की फुहार उत्सव हुआ आयोजित

छापर। माहेश्वरी महिला समिति द्वारा 'तीज-सावन की फुहार' उत्सव का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। समाज की महिलाओं तथा बच्चियों ने बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई तथा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में कुछ प्रतियोगिताये भी आयोजित की गयी। कार्यक्रम के अंत में लकी ड्रॉ निकाला गया। इसकी विजेता पुष्पा देवी पेडीवाल रही। मंच का संचालन श्वेता तापड़िया ने किया। सरला लाहोटी, सरोज जाजू, मनीषा मुंदड़ा, गीतांजली तापड़िया, संजू सारड़ा, वीना बिहानी व नीलम तापड़िया आदि ने सहयोग प्रदान किया।

फुटबॉल प्रतियोगिता में प्राप्त किया तृतीय स्थान

चंद्रपुर। सुब्रतो मुखर्जी जिला स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता 2022-23 में बजाज विदया भवन के विदयार्थियों ने उत्साह के साथ सहभाग लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया। सर्वोदय महिला मंडल की अध्यक्षा नील बजाज, सी.ई.ओ भरत बजाज, बजाज विदया भवन की निर्देशिका ममता बजाज एवं प्राचार्या सिंधु राव ने विद्यार्थियों व खेल शिक्षक का अभिनंदन किया।

शिवधाम से किया सत्र प्रारम्भ

गान्तोक। सिक्किम माहेश्वरी महिला संगठन के नए सत्र का शिवजी के धाम की यात्रा से शुभारम्भ हुआ। इसमें गान्तोक से 38 सदस्याओं द्वारा बस द्वारा शहर से 50 किलोमीटर दूर सांग स्थित जिंगला मंदिर जाकर पूजा अर्चना, अभिषेक किया गया। संगठन के सदस्यों द्वारा शिव अभिषेक, फलाहार एवं खाने की तैयारी की गई। उक्त जानकारी मधु मर्दा ने दी।

सभापति सोनी से लिया मार्गदर्शन

लखनऊ। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के सभापति श्याम सोनी के अयोध्या प्रवास से वापसी में लखनऊ आगमन पर माहेश्वरी समाज के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने उनसे उचित मार्गदर्शन हेतु मिलने का अनुरोध किया। पूर्वी उत्तर प्रदेश के मंत्री राधेश्याम जाजू के आवास पर सभापति का आगमन एवं स्वागत माहेश्वरी समाज लखनऊ एवं ट्रांस गोमती समाज के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। श्री सोनी ने समाज के विकास एवं विस्तार के लिए विचार-विमर्श किया। उक्त जानकारी विनोद प्रकाश माहेश्वरी ने दी।

जिंदगी में रोकने टोकने वाला कोई है तो एहसान मानिये क्योंकि जिन बागों में माली नहीं वो बाग जल्दी ही उजड़ जाते हैं।

सत्तु तीज सिंजारा हुआ आयोजित

नागपुर। त्रिनयन माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से गत 6 अगस्त को सांई सभागृह (शंकर नगर) में हर्षोल्लास से सत्तू तीज सिंजारा मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अध्यक्ष नीलिमा लोया के हाथों महेश पूजन व दीपप्रज्वलन से हुई। इस अवसर पर संगठन द्वारा नागपूर की सशक्त महिलाएं जो कि त्रिनयन सदस्या भी हैं, उनको सम्मानित किया गया। इनमें पूनम राठी (पाककला), अलका भांगड़े (समाजसेवी) व सुधा चांडक (स्वयंस्फूर्त), एवं पूजा राठी का स्वागत तुलसीवृंद देकर किया गया। कार्यक्रम में रौनक मंत्री द्वारा हाउजी प्राइजेस स्पॉन्सर किये गये। मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति भी दी गई। इस अवसर पर नोक-झोंक प्रतियोगिता रखी गई। इस आयोजन को सफल बनाने में प्रकल्प अधिकारी के रूप में मंगला भूतड़ा, रेखा राठी, कविता भांगड़े, शांता सांवल, वर्षा पनपालिया, भारती राठी आदि ने अथक प्रयास किया। सहसचिव निर्मला सारडा ने आभार व्यक्त किया। समापन भोजन के साथ हुआ। उक्त जानकारी प्रचार मंत्री कविता भांगड़े ने दी।

आजादी का अमृत महोत्सव मनाया

वरंगल। माहेश्वरी कला समिति वरंगल द्वारा प्रगतिशील मारवाडी समाज भवन में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 75वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रगतिशील मारवाडी समाज के अध्यक्ष वेणुगोपाल मूंदड़ा, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष रमेशचंद बंग एवं समाज के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के गणमान्य सदस्य, महिला सदस्य एवं समिति के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। माहेश्वरी समिति के अध्यक्ष नवलकिशोर मुंदडा की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। ध्वजारोहण के पश्चात केंद्र सरकार द्वारा हर घर तिरंगा के उपलक्ष्य में माहेश्वरी समाज द्वारा भव्य बाइक रैली समाज भवन से मारुति कंवेंशन, रंगमपेट वरंगल तक निकाली गई जिसमें 200 से भी ज्यादा बाइक शामिल थीं। समिति के मंत्री रामकिशोर मनियर ने उक्त जानकारी दी।

प्रथम पुण्य स्मरण

जीवन पथ पर प्रेरणा हो आप, यादों में खुशनुमा अहसास हो आप
क्या हुआ जो पास, नही सदा हमारे पास हो आप

स्व. श्री प्रवीण मालू
(श्रीजी शरण दिनांक 7 सितम्बर 2021)

मालू परिवार
अमरावती

मोदानी के 83 वें बलिदान दिवस का हुआ आयोजन

निजामाबाद। अमर शहीद राधाकिशन मोदानी स्मारक समिति एवं शहीद राधाकृष्ण शिक्षा समिति ट्रस्ट, निजामाबाद के संयुक्त तत्वावधान में अमर शहीद श्रीराधाकिशन मोदानी की पंचधातु आदम कद प्रतिमा पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सर्व प्रथम वेद मंत्रों द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ कर वेंकट नरसय्या, सूर्यवंशी, रामगिरी श्रवण कुमार, आचार्य वेद मित्रा, सिद्धि रामलू, एम. जी. राजलू द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर रामनिवास राठी, मदनलाल गिल्डा, कैलाश गोयंका, डॉक्टर सुरेश जाजू, किशन गोपाल गिल्डा (सभापति - शहीद राधाकृष्ण शिक्षा समिति ट्रस्ट), ओम प्रकाश लोया, ओमप्रकाश मोदानी, प्रबंध न्यासी- शहीद राधा कृष्ण शिक्षा समिति ट्रस्ट सूर्यप्रकाश मोदानी आदि अनेक महानुभावो ने पुष्प माला पहनाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्लास्टिक जनजागरूकता रैली का किया आयोजन

नागपुर। तेजस्विनी महिला मंच व ज्योति महिला मंडल द्वारा संयुक्त रूप से आजादी के अमृत महोत्सव पर ''हर घर तिरंगा'' उत्सव का शुभारंभ पूर्व से लेकर पश्चिम नागपुर तक प्रतिबंधित प्लास्टिक के उपयोग न करने संबंधी जन जागरूकता रैली के साथ किया गया। तेजस्विनी महिला मंच व ज्योति महिला मंडल महल द्वारा आयोजित रैली का शुभारंभ शोभा सुरजन द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। मार्ग में ग्राहकों को प्लास्टिक की थैली का प्रयोग बंद करने हेतु प्रेरित किया गया। दो पहिया वाहन पर लगभग 50 सदस्यों ने इस रैली में भाग लिया। प्लास्टिक के प्रयोग बंद कर पर्यावरण संरक्षण के नारों से नागपुर की सड़कें गूंज उठी। तेजस्विनी सखियों ने भी डिस्पोजेबल का उपयोग नही करने की ठानी। सभी अपने साथ प्लेट, चम्मच, ग्लास आदि लेकर आए। किरण मुंदड़ा, अर्चना बिंझानी, संगीता मंत्री, स्वाति सांवल, सोनल चांडक, कल्पना मोहता, संगीता भट्टड, किरण राठी, निशी सावल आदि ने योगदान दिया। सुशीला मंत्री का विशेष सहयोग रहा।

परी का हुआ सम्मान

नोखा। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा आयोजित माध्यमिक परीक्षा-2022 में 96.33 प्रतिशत अंक प्राप्त करके नोखा शहर में प्रथम व तहसील स्तर पर द्वितीय स्थान परी लाहोटी सुपुत्री डॉ.राधेश्याम-ममता लाहोटी ने प्राप्त किया । इस उपलब्धि पर स्वतंत्रता दिवस पर 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत राजकीय बाबा छोटूनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में उपखण्ड (तहसील) स्तर पर सम्मानित किया गया।

देवांश को सिल्वर मेडल

इंदौर। पीथमपुर जैसे छोटे से इलाके में रहने वाले अशोक मीनादेवी भंसाली के पौत्र व आशय निहारिका भंसाली के सुपुत्र देवांश भंसाली 8 वर्ष ने इंदौर में आयोजित राज्य स्तरीय 'क्वान की डो' स्पर्धा में सिल्वर मेडल हासिल कर पूरे माहेश्वरी समाज व मध्यप्रदेश का नाम रोशन किया है। इसमें पूरे मध्यप्रदेश से प्रतियोगी सम्मिलित हुए थे। दिलीप भंसाली ने बताया कि ये प्रतियोगिता 7 अगस्त को इंदौर में आयोजित की गई थी जिसमे 38 किलोग्राम में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए देवांश ने ये उपलब्धि हासिल की।

सत्य की मिसाल- अकाल
पड़ा है पूरी दुनिया में
प्रेम और सम्मान का
क्योंकि लेना सभी चाहते हैं
पर देना कोई नहीं चाहता।

निमड़ी पूजन का हुआ आयोजन

अमृतसर। माहेश्वरी समाज अमृतसर की महिलाओं ने निमड़ी पूजन राधेश्याम साबू के घर पर किया। इसमें शांतिबंग, सरला बूब, सरोज नीलम साबू, उमा पारीख, पूजा, किरण, आरती, अदिति मालू, मनीषा, प्रभा तापड़िया आदि कई महिलाओं ने भाग लिया।

नुवाल की कम्पनी को मिला सेना का ऑर्डर

नागपुर। सत्यनारायण नुवाल की कंपनी 'इकोनोमिक एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड' को भारतीय सेना से बड़ा ऑर्डर मिला है। निजी क्षेत्र की कंपनी को यह ऑर्डर सेना ने अनेक सूक्ष्म परीक्षणों के बाद न केवल दिया है, बल्कि सेना के उच्च पदाधिकारियों ने उत्कृष्ट उत्पाद के लिए श्री नोवाल का शानदार स्वागत करते हुए उनका विशिष्ट सम्मान भी किया है।

खरी-खरी

छैनी सहती शिला ने
कातर करी पुकार

शिल्पकार मत दे मुझे
ईश्वर का आकार

भक्ति दिखावा हो गयी
श्रद्धा प्रायः लुप्त

अब ईश्वर के नाम पर
होता है व्यापार

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

तिरंगा बाइक रैली का किया आयोजन

वरंगल। भारत की आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा एक विशाल तिरंगा बाइक रैली का स्वतंत्रता दिवस को आयोजन किया गया। यह रैली स्थानीय प्रगतिशील मारवाड़ी समाज भवन से प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न मार्ग से होते हुए रंगमपेट स्थित प्रगतिशील मारवाड़ी एवं माहेश्वरी चैरिटेबल ट्रस्ट भवन पहुँची। इस तिरंगा रैली मे समाज के बंधु, महिला मण्डल के सदस्य सहित युवा संगठन के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इस रैली के अपने गंतव्य स्थान पहुंचने पर प्रगतिशील मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष वेणुगोपाल मुंदडा एवं माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष रमेश चंद बंग द्वारा ध्वजारोहन किया गया। रैली में अध्यक्ष संदीप मूंदड़ा का मार्गदर्शन रहा। उक्त जानकारी सचिव प्रतीक लाहोटी ने दी।

वनविहार का हुआ आयोजन

सूरत। श्री सूरत जैसल माहेश्वरी महिला मैत्री मंडल की ओर से ठाकुरजी के वन विहार का कार्यक्रम एसआरजे फार्म हाउस पर रखा गया। कार्यक्रम में 56 भोग, चुनरी मनोरथ, नौका विहार, झूले, मटकी फोड़, नृत्य आदि मनोरथ रखे गए। गिरिराजजी की बहुत ही सुंदर सजावट की गई तथा विभिन्न झाकियों के साथ सभी ने प्रसादी ग्रहण की। श्री सूरत जैसल माहेश्वरी महिला मैत्री मंडल द्वारा महेश नवमी के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया। सावन में राधे फार्म पर पिकनिक रखी गई जिसमें 30 महिलाओं ने भाग लिया। वहाँ स्विमिंग, नाश्ता, भोजन, हाई टी, और बहुत सारे गेम और हाउजी का सभी ने आनंद लिया। डुमस के लिए 21 जून को पिकनिक रखी गई जिसमें करीब 55 महिलाएं शामिल थीं। वहाँ चाय और पकोडा पार्टी का सभी ने आनंद लिया और गणेश जी के मंदिर में दर्शन का लाभ भी लिया।

पांच चीजे अभी से छोड़ दो- सबको खुश रखना, दूसरों से ज्यादा उम्मीद करना, पास्ट में जिन्दगी जीना, अपने आपको किसी से कम आंकना, बहुत ज्यादा सोचना।

युवक-युवती परिचय सम्मेलन का हुआ आयोजन

जलगाँव। श्री माहेश्वरी विवाह सहयोग समिति की ओर से गत 21 अगस्त को माहेश्वरी समाज द्वारा शिक्षित-उच्च शिक्षित विवाह योग्य युवक-युवतियों का 28 वाँ परिचय सम्मेलन छत्रपति संभाजीराजे नाट्य मंदिर, जलगाँव पर आयोजित किया गया। अध्यक्ष मनीष झंवर, सचिव डॉ.जगदीश लड्ढा, प्रकल्प प्रमुख प्रा. संजय दहाड, उपाध्यक्ष प्रमोद झंवर, सहसचिव तेजस देपुरा, कोषाध्यक्ष विवेकानंद सोनी, सहकोषाध्यक्ष वासुदेव बेहेडे, सह प्रकल्प प्रमुख कैलाश लाठी आदि मंचासीन थे। महेश वंदना, मनीषा झंवर, सायली झंवर और वैष्णवी झंवर ने प्रस्तुत की। प्रस्तावना सचिव डॉ.जगदीश लड्ढा ने की। अध्यक्षीय भाषण में मनीष झंवर ने परिचय सम्मेलन की विशेषता बताई। आभार प्रदर्शन तेजस देपुरा ने किया। इस आयोजन में 100 युवती और 300 युवकों ने भाग लिया। विवाह योग्य युवक-युवती, उनके परिवार के सदस्य और बड़ी संख्या में समाज बांधव उपस्थित थे। सभी ने मंच पर आकर परिचय दिया। सुभाष जाखेटे, सुरजमल सोमाणी, दीपक लड्ढा, विशाल मंत्री, जगदीश जाखेटे, गिरीश झंवर, विनोद मुंदडा, एड. राहुल झंवर, हर्षल जाखेटे, गोविंद लाठी, चेतन दहाड़, अजय दहाड़ आदि समस्त सदस्यों ने सहयोग प्रदान किया।

कृष्णा लीला और फलाहारी व्यंजन प्रतियोगिता सम्पन्न

अहमदाबाद (गुजरात)। माहेश्वरी सखी संगठन द्वारा जन्माष्टमी के अवसर पर कृष्ण लीला का कार्यक्रम 16 अगस्त बुधवार के दिन स्पोर्ट्स क्लब में आयोजित किया गया। इस अवसर पर फलाहारी व्यंजन बनाने की प्रतियोगिता भी आयोजित हुई। सावन में हिंडोला सजाने के लिए और स्वतंत्रता दिवस पर परिवार के साथ तिरंगा लहराने के लिए सखियो को लकी ड्रा द्वारा प्राइज दिए गए। माहेश्वरी सखियों के बच्चों को दसवीं और बारहवीं की परीक्षा में 80 प्रतिशत से ऊपर नंबर लाने के लिए सम्मानित किया गया। सभी विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

दोस्त, किताब, रास्ता और सोच ये चारों जीवन में सही मिले तो जिंदगी 'निखर' जाती है वर्ना 'बिखर' जाती है।

कविता

डॉ. आभा माहेश्वरी
अलीगढ़ यूपी

धरती का बढ़ता तापमान

धरती अम्बर सब कांप रहे हैं
हलचल मची है सागरतल में
सूरज भी अग्नि उगल रहा है
घनघोर शोर मचा है नभ थल में।

वृक्षों का दिल चीर दिया है
इस दुष्ट क्रूर मानवता ने
हरियाली को नष्ट भ्रष्ट कर
जयघोष किया हतभागी मानव ने।

पर्वतों का सीना फाड़ दिया
अनगिन राहों का निर्माण किया
उनकी गोदी में क्रीड़ा करते
पशुपक्षियों को गृहविहीन किया।

नदियों में पानी सूख रहा
हिमखंड पिघलते जा रहे हैं
चप्पा चप्पा धरती का शोर मचा रहा है
ये अधिक आकांक्षी उसे जला रहा है।

ये धरती का बढ़ता तापमान
अब इससे ज्यादा कितना होगा
ये हमारी धरती माता का अपमान
और हम कर रहे अपना शौर्य गान।

निकालो अपने को इस काल गर्त से
करो धरा को प्रदूषण मुक्त
करें हम तुम वृक्षारोपण
स्वच्छ हो वायु और दूर प्रदूषण।

फिर हरी भरी वसुंधरा पे
नील नीला हो गगन
जननी हमारी ये धरणी
दे हमें आर्शीवचन।
धरती का बढ़ता तापमान हो कम
हम खायें ये कसम?

छोटी तीज पर किया नीमड़ी पूजन

खरगोन। माहेश्वरी समाज द्वारा छोटी तीज का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। माहेश्वरी समाज की अध्यक्ष अलका सोमानी के नेतृत्व में पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया और कजली तीज पर नीमड़ी को 15 अगस्त के डेकोरेशन से बहुत अच्छे से सजाया गया। इस मौके पर जानकी खटोड, उषा सोमानी, किरण आगाल, उषा सिंगी, निशा भट्टर, उमा सोमानी, पूजा कोठारी, सुमन खटोड सहित कई महिलाऐं उपस्थित थी।

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण

सिकन्दराबाद। माहेश्वरी सेवा संघ, माहेश्वरी भवन चैरीटेबल ट्रस्ट, माहेश्वरी महिला मण्डल, माहेश्वरी युवा संगठन व माहेश्वरी युवती संगठन के संयुक्त तत्वावधान में देश की आजादी की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव नवनिर्मित माहेश्वरी भवन ताडवन सिकन्दराबाद में मनाया गया। संस्था के मंत्री पी.डी. जाखोटिया ने सभी समाज जनों को स्वतंत्रतादिवस व आजादी के अमृत महोत्सव की बधाई देते हुए भवन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भवन 4 फ्लोर का बनेगा। बेसमेण्ड में पार्किंग व स्टोर रूम, ग्राउण्ड फ्लोर में कीचन व डाईनिंग हॉल, फस्ट फ्लोर में कान्फ्रेंस हॉल तथा सेकण्ड फ्लोर में 10 रूम बनेंगे।

तीज सिंधारा का हुआ आयोजन

गंगटोक (सिक्किम)। सिक्किम माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 9 अगस्त को माहेश्वरी परिवार के सदस्यों के साथ तीज सिंजारा का कार्यक्रम रखा गया। पारंपरिक परिधान, रंग बिरंगी सजावट, डांस, गीतों ने समां बांध दिया। साथ हा हाऊजी, प्रश्नोत्तरी भी रखी गई। विशेष बात यह रही कि सदस्यों ने मिल जुल कर तिरंगे की थीम पर सजावट की और तिरंगा रिस्ट बैंड भी बनाया। हाई-टी के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उक्त जानकारी मधु मर्दा ने दी।

भण्डारी सराहनीय पत्रकारिता के लिए सम्मानित

बनेड़ा (भीलवाड़ा)। देश की आजादी की 75 वीं वर्षगांठ पर आजादी के अमृत महोत्सव के तहत भीलवाड़ा जिले के बनेड़ा कस्बे में स्वाधीनता दिवस पर उपखंड स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम के दौरान सराहनीय पत्रकारिता के लिए जिले के उभरते युवा पत्रकार कमलेश कुमार भण्डारी (केके) सहित 23 प्रतिभाओ को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने पर उपखण्ड अधिकारी अंशुल सिंह (सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट) द्वारा सम्मानित किया। सन 2016 में शौकिया तौर पर पत्रकारिता की शुरुआत करने वाले युवा पत्रकार श्री भण्डारी वर्तमान में विभिन्न समाचार पत्रों, न्यूज़ पोर्टल्स, इलेक्ट्रॉनिक चैनल आदि में निःशुल्क और निष्पक्ष खबरें उपलब्ध कराते हैं।

टीकाकरण शिविर का हुआ आयोजन

चंद्रपुर। गत 31 जुलाई को श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर सभागृह, मेन रोड, चंद्रपुर में आम नागरिकों के लिए निःशुल्क अतिरिक्त टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस टीकाकरण शिविर में कोविशिल्ड और कोवैक्सिन दोनों मिलाकर कुल 267 लाभार्थियों ने अतिरिक्त टीके का लाभ लिया। रेडीमेड कपड़ा असोसिएशन के अध्यक्ष दिनेश बजाज ने शिविर के सफल आयोजन के लिए श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर संस्था का आभार व्यक्त किया। संयोजक दीपक सोमानी ने बताया कि इस शिविर में श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर संस्था के अध्यक्ष कैलाशचंद्र सोमानी, सचिव जुगलकिशोर सोमानी, कोषाध्यक्ष राजगोपाल तोषणीवाल, दिनेश बजाज, आशीष तोषनीवाल, सहित समस्त सदस्यों ने सहयोग किया।

सदगुणों की शुरुआत स्वयं से ही करनी होती है क्योंकि जब तक आपकी अंगुली पर कुमकुम ना होगा तब तक सामने वाले के ललाट पर तिलक कैसे लगेगा।

संगम उद्योग समूह का हरियाली बढ़ाने हेतु अनूठा कदम

1 लाख पौधे व 5 हजार ट्री गार्ड का किया वितरण, सभी ने की सराहना

भीलवाडा। संगम उद्योग समूह द्वारा लगातार 7वें वर्ष एक लाख पौधे व 5 हजार ट्रीगार्ड वितरण अभियान का आयोजन भीलवाड़ा जिले में हरियाली बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। संगम समूह के अध्यक्ष रामपाल सोनी की तरह ही अन्य उद्योगपति भी हरियाली बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ाने हेतु आगे आएं।

यह बात संगम उद्योग समूह के पौधा वितरण अभियान के शुभारम्भ के अवसर पर भीलवाड़ा जिला कलेक्टर आशीष मोदी व पुलिस अधीक्षक आदर्श सिद्धू ने सोनी हॉस्पीटल परिसर में कही। अभियान के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर राजेश गोयल, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के क्षेत्रीय अधिकारी विनय कट्टा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ज्यैष्ठा मैत्रेयी, उपवन संरक्षक वीरसिंह ओला का आतिथ्य रहा। अभियान में संगम समूह के प्रबंध निदेशक एस.एन. मोदानी, वी.के. सोडानी, अनुराग सोनी, राधा सोनी, कृपी सोनी आदि की भागीदारी रही। अभियान में उद्योगपति आर.एल. नोलखा, समाजसेवी राधेश्याम सोमानी, कैलाश कोठारी, जगदीशप्रसाद कोगटा सहित अनेक उद्योगपतियों व समाजसेवियों ने शिरकत की। अतिथियों द्वारा इस अभियान को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अद्भुत बताते हुए इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की गई।

पौधा वितरण कार्यक्रम प्रभारी बाबूलाल जाजू ने बताया कि अभियान के तहत 25 से अधिक प्रजातियों के फलदार, फूलदार, छायांदार, औषधीय व गमलों के पौधों के साथ ही उनकी सुरक्षा हेतु 5 हजार ट्रीगार्ड आमजन, समाजसेवी संस्थाओं, धार्मिक व सार्वजनिक स्थलों, श्मशानों, विद्यालयों, राजकीय कार्यालयों को दिये गये। निःशुल्क पौधे प्राप्त कर शहर को हरा-भरा बनाने की आमजन में होड़ रही। प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्तियों व संस्थाओं द्वारा पौधे व ट्री-गार्ड प्राप्त किये गये।

महिला मंडल ने मनाया नंदोत्सव

रतनगढ़। माहेश्वरी महिला मंडल के तत्वावधान में माहेश्वरी भवन में नन्द महोत्सव मनाया गया । शहर के विभिन्न स्थानों से लड्डू गोपाल को लेकर महिलाएं कार्यक्रम में पहुंची। कार्यक्रम में समाज के बच्चो ने सांस्कृतिक कार्यक्रमो की प्रस्तुतियां दी। महिला मंडल की सदस्यों ने भगवान कृष्ण के भजनों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में युवतियों द्वारा राधा कृष्ण संग नृत्य, महारास की प्रस्तुतियां दी। इस दौरान अग्रवाल सम्मेलन महिला इकाई की जिलाध्यक्ष ललिता रामगढ़िया का भी माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम में केक काटकर भगवान कृष्ण का जन्मदिन मनाया गया। सामूहिक आरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया। मण्डल की अध्यक्ष सरिता चांडक ने आभार प्रकट किया। पूर्णिमा लड्ढ़ा के संचालन में हुए कार्यक्रम में महिला मंडल की मंत्री चन्दा सोनी, जयश्री जाजू, मंजू पेड़ीवाल, ज्योति लड्ढा, मंजू लड्ढा, कृष्णा जाजू, कमला चांडक, कांता जाजू, सीतादेवी तापड़िया आदि कई महिलाएं उपस्थित थी।

कावड़ यात्रा का किया आयोजन

कोलकाता। मध्य कोलकाता माहेश्वरी सभा, महिला एवं युवा संगठन के संयुक्त तत्वाधान में एक विशाल कावड़ यात्रा का आयोजन गत 7 अगस्त को हावड़ा स्थित बांधा घाट बड़ा मंदिर से कोलकाता के भूतनाथ धाम तक किया गया। इस यात्रा में महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों सहित कुल 147 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। बांधा घाट मंदिर में भगवान शिव की भव्य आरती करने के पश्चात यह धार्मिक यात्रा हावड़ा एवं कोलकाता के विभिन्न मार्गो से होते हुए भूतनाथ मंदिर पहुंची। महासभा के पूर्वांचल संयुक्त मंत्री श्याम राठी, कार्यसमिति सदस्य गोपाल दम्मानी, युवा पूर्वांचल के उपसभापति सुरेश कोठारी, प्रदेश युवा के सभापति केशव डागा एवं प्रदेश व अंचल के कई गणमान्यजन मौजूद थे।

अजीब सी दुनिया है अजीब से ठिकाने हैं,
यहां लोग मिलते कम हैं, झांकते ज्यादा है।

हर वर्ष की तरह इस बार भी देश की कठिनतम परीक्षाओं में से एक आईसीएआई की अंतिम परीक्षा में बड़ी संख्या में माहेश्वरी समाजजनों ने सफलता का ध्वज फहराया। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार समस्त नवागत चार्ट्ड अकाउंटेट्स का अभिनंदन करता है।

सीए की अंतिम परीक्षा में फहराया सफलता का परचम

अंचल मूंदड़ा
हुगली

अर्चना भट्टड़
हावड़ा

बारुन सोमानी
हावड़ा

दक्ष बियाणी
हावड़ा

दिव्या करनानी
हावड़ा

गौरव दम्मानी
हावड़ा

घनश्याम बजाज
बेलुर

गिरिराज मूंधड़ा
हावड़ा

गोपाल लोहिया
हावड़ा

गुंजन पेड़िवाल
हावड़ा

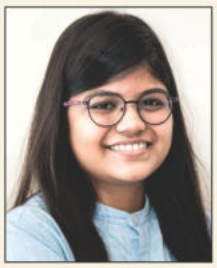
कृतिका मालानी
हावड़ा

पूजनचंद राठी
हावड़ा

राधेश्याम राठी
हावड़ा

राधिका लाहोटी
हावड़ा

शीतल बागड़ी
हावड़ा

श्वेता सारडा
हावड़ा

विकास भट्टड़
कोलकाता

मिनल लाहोटी
अमरावता

संचित को 98.6 प्रतिशत अंक

भाटापारा। सीबीएसई 10वी बोर्ड परीक्षा में छात्र संचित राठी ने 98.6 प्रतिशत अंक अर्जित कर सम्पूर्ण जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। संचित प्रतिष्ठित व्यवसायी व राठी ट्रेडर्स के संचालक राजेश राठी के सुपुत्र हैं।

सानिका को 94 प्रतिशत अंक

अमरावती (महा.)। डॉ. रामकिशोर कलंत्री की पौत्री तथा डॉ. ज्योति व संदीप कलंत्री की सुपुत्री सानिका ने स्टेट बोर्ड 10वीं की परीक्षा 94 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की। पढ़ाई के साथ ही सानिका खेलकुद व कत्थक नृत्य में भी रूची रखती हैं। वे कत्थक नृत्य में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पैरिस में प्रदर्शन के लिये चयनित हुई है।

कार्तिक को 93.4 प्रतिशत अंक

मंदसौर। समाज के वरिष्ठ राधेश्याम झंवर के पौत्र तथा चंद्रेश व मेघना झंवर के सुपुत्र कार्तिक ने सीबीएसई 12वीं गणित-कॉमर्स संकाय की परीक्षा 93.4 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

तनिशा को 96 प्रतिशत अंक

झाबुआ (म.प्र.)। समाज सदस्य अनिल व योगिता कोठारी की सुपुत्री तनिशा ने सीबीएसई 12वीं कॉमर्स-गणित संकाय की परीक्षा 96.6 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। इसमें उन्होंने बिजनेस स्टडीज में शतप्रतिशत अंक प्राप्त किए।

आदी को 99.17 प्रतिशत अंक

मुंबई (महाराष्ट्र)। आनंद और अलका कांकाणी के सुपुत्र आदी कांकाणी ने आईसीएसई बोर्ड 10वीं की परीक्षा 99.17% अंक से उत्तीर्ण की। उन्होंने ऑल इंडिया मेरिट रैंक 3 हासिल की व इसमें 5 विषयों में पूरे 100 अंक हासिल किए हैं।

निष्ठा को 98.5 प्रतिशत अंक

सीतापुर (उ.प्र.)। मूलतः जोधपुर व वर्तमान में मिश्रिख जिला सीतापुर यूपी निवासी शंकरलाल मून्दड़ा की सुपौत्री व गणेश मून्दड़ा की सुपुत्री निष्ठा माहेश्वरी ने सीबीएसई कक्षा 10 की परीक्षा 98.5% अंकों के साथ उत्तीर्ण की।

पलक को 97 प्रतिशत अंक

जयपुर। मूलतः करणसर व वर्तमान में जयपुर निवासी चौथमल जाजू की सुपौत्री व श्यामसुंदर जाजू की सुपुत्री पलक जाजू ने सीबीएसई कक्षा 12वीं की परीक्षा 97% अंकों के साथ उत्तीर्ण की।

सत्तू तीज का हुआ आयोजन

उज्जैन। माहेश्वरी सामाज की महिलाओं द्वारा सत्तू तीज (कजरी तीज) पर्व भाद्रपद कृष्ण पक्ष की तृतीया पर मनाया गया। इस दिन महिलाओं ने नीम की पूजा कर अखंड सौभाग्य की कामना की। पूजा के पश्चात चंद्र दर्शन कर सत्तू ग्रहण कर व्रत पूर्ण किया। इस अवसर पर शांतादेवी सोडानी, मंगला माहेश्वरी, कविता माहेश्वरी, चंदा माहेश्वरी, सरिता बाहेती, अनिता सोडानी, चेतना सोमानी, राधिका माहेश्वरी, अमिषा, दिव्या, सिया, अर्पिता आदि उपस्थित थीं।

देशभक्ति गीत में बदनावर प्रथम

बदनावर (धार-म.प्र.)। पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वाधान में पर्व एवं सांस्कृतिक समिति के अंतर्गत आजादी की 75वीं वर्षगाँठ पर आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। इसके अंतर्गत देश भक्ति गीत प्रतियोगिता का आयोजन प्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष वीणा सोमानी, सचिव उषा सोडाणी एवं पर्व समिति प्रदेश प्रभारी हेमलता के नेतृत्व में हुआ। इसमें धार जिला अध्यक्ष सुलेखा माहेश्वरी, जिला सचिव सावित्री छापरवाल एवं पर्व सांस्कृतिक समिति जिला प्रभारी हर्षा सोमानी, बदनावर अध्यक्ष प्रेमलता सोमानी व सचिव संगीता डांगरा के अथक प्रयास से धार जिले के बदनावर महिला मंडल ने जिले एवं प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रदेश में धार जिले का परचम लहराया। इसमें प्रदेश स्तर पर विष्णुकांता सोमानी, विनीता सोमानी, गरिमा सोमानी, सीमा सोनी एवं स्वाति बलदेवा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जो आनंद अपनी छोटी पहचान बनाने में है वो किसी बड़े की परछाई बनने में नहीं है। संघर्ष पिता से सीखे, संस्कार मां से सीखे बाकी सब दुनिया सीखा देगी।

स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार का सम्मान

वाराणसी। स्वतंत्रता के अमृत महोत्सवी वर्ष में अपने प्रदेश के स्वतंत्रता-सेनानियों के प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्ति हेतु पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी सभा के संकल्प को पूरा करने हेतु उसके तृतीय चरण में 'माहेश्वरी परिषद' वाराणसी ने गत 31 जुलाई को साधारण सभा में इस क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार वालों का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया। तिरंगी आभा से सजे दम्मानी सभागार में मंत्री गोविंद भरानी के ओजपूर्ण स्वर में गाए गए गीतों ने वातावरण में तिरंगा फहरा दिया। इसके अंतर्गत श्रद्धेय सत्यनारायण माहेश्वरी जमानिया (गाजीपुर) के सुपुत्र महेंद्र कुमार मानधनी (फरीदाबाद), अनिल माहेश्वरी (मानधनी), गोरखपुर व सत्यनारायणजी की सुपुत्री श्रीमती सुनीता राजाराम चाण्डक वाराणसी का सम्मान किया गया। श्रद्धेय श्री किशन काबरा, वाराणसी के परिवार में सुपुत्री सरिता व उनके पति प्रतिष्ठित वैज्ञानिक (प्रो.) डॉ. सुभाषचंद्र लखोटिया तथा उनके भतीजे विजय काबरा का सम्मान किया गया। इसी प्रकार श्रद्धेय रामेश्वरदयाल मंत्री, वाराणसी के परिवार में सुपुत्री श्रीमती (प्रो.) डॉ. आशिमारानी लखोटिया, सुपुत्र अनिरुद्ध मंत्री, पुत्रवधु मधु मंत्री, पौत्र अंशुमान, पौत्रवधु प्रीति, प्रपौत्र अद्विक, प्रपौत्री आराध्या आदि का सम्मान किया गया।

गौवंश का करवाया टीकाकरण

रतनगढ़। माहेश्वरी सभा ट्रस्ट व पशुपालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में रामचंद्र काशी प्रसाद झंवर के आर्थिक सौजन्य से दो दिवसीय टीकाकरण शिविर में शहर व देहात में गौ माता में फैलनी वाली लम्पी स्किन डिसीज से पीड़ित पशुओं का इलाज व टीकाकरण करवाया। बीमारी की रोकथाम के लिए रतनगढ़ शहर, गांवजालेऊ, गोरीसर, मालपुर, सेहला, हरिपुरा चारनवासी, सुलखनिया, हरदेसर, टीडियासर में पशु चिकित्सक विभाग की टीम ने पीड़ित गोवंश का इलाज एवं जांच कार्य किया। आइसोलेशन वार्ड में 19 व ग्रामीण क्षेत्र में निराश्रित तथा गरीब पशुपालकों के190 गोवंशो का इलाज किया गया। पशु चिकित्सक हनुताराम ने उपखण्ड अधिकारी रतनगढ़ की मीटिंग में बताया कि लम्पी रोग से सम्बंधित सरकार द्वारा उपलब्ध दवाइयों के अतिरिक्त रतनगढ़ के भामाशाहों व रतनगढ़ माहेश्वरी सभा ट्रस्ट द्वारा भी गोवंश हेतु निःशुल्क दवाईया उपलब्ध करवायी जा रही है। शिविर में रजनीकांत सोनी, नरेंद्र झंवर, नरेश पेड़ीवाल, रामोतार चांडक, राकेश जाजू आदि ने सेवाएं दी।

जरूरी नहीं कि इंसान सुंदर हो और बेहद खुबसूरत हो अच्छा तो वही इंसान है जो आपके साथ तब हो जब आपको उसकी जरूरत हो।

देहदानी भी बनी श्रीमती प्रभा करनानी

सरदारशहर। समाज की वरिष्ठ प्रभादेवी करनाणी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री विजयकुमार करनानी का गत 16 अगस्त 2022 को देहावसान हो गया। उनकी अंतिम अच्छानुसार उनके नेत्र जरुरतमंदों को दानकर उनकी देह भी मेडिकल कॉलेज को दान की गई। आप कोलकाता निवासी दिनेश कुमार करनानी की माता थीं।

श्री प्रभुदास मांधना

जयपुर। माहेश्वरी समाज के संरक्षक श्री प्रभुदास मांधना का गत 27 अगस्त को स्वर्गवास हो गया। आप अपने पीछे शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं।

श्री मदनगोपाल राठी

जयपुर। ख्यात सीए श्री मदन गोपाल राठी सुपुत्र स्व. श्री केसरीमल राठी का गत 24 अगस्त को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे धर्मपत्नी चंदादेवी, भाई, भतीजे-भतीजी आदि का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं। आपकी अंतिम इच्छानुसार परिवार ने आपका देहदान जेएनयू अस्पताल जगतपुरा को किया गया।

श्रीमती जमुनादेवी कोठ्यारी

जयपुर। माहेश्वरी समाज के संरक्षक, भूतपूर्व अध्यक्ष और अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के पूर्व कार्यकारी मण्डल सदस्य रामस्वरूप कोठ्यारी की धर्मपत्नी श्रीमती जमुनादेवी कोठ्यारी का गत 21 अगस्त को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

आपके जीवनसाथी की खोज में

माहेश्वरी समाज की सबसे पुरानी
और सफल वैवाहिक सेवा

www.maheshwari.org

हमारी अन्य सेवाएं
www.jain2jain.org
www.agarwal2agarwal.org

निःशुल्क
पंजीकरण
9312946867

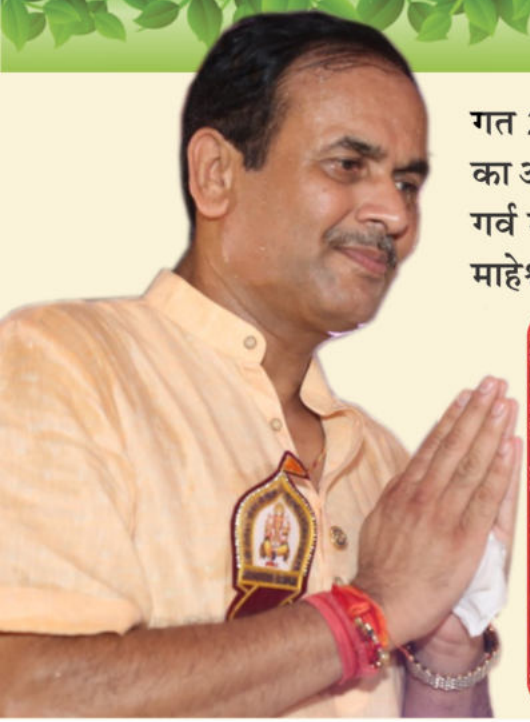

गत 20 वर्षों से दिल्ली में ''दिल्ली का महाराजा'' नाम से भव्य गणेश महोत्सव का आयोजन हो रहा है, जो महानगर की शान बन चुका है। आपको यह जानकर गर्व महसूस होगा कि इस गरिमामय आयोजन की शुरुआत करने का श्रेय भी माहेश्वरी समाजजन महेन्द्र लड्ढा को जाता है।

गणेशोत्सव 'दिल्ली का महाराजा' के संस्थापक महेन्द्र लड्ढा

गत 20 वर्षों की भांति इस वर्ष भी श्री गणेश सेवा मंडल (लक्ष्मी नगर) दिल्ली (Regd.) गणेश चतुर्थी के पर्व पर 21वे गणेश महोत्सव 'दिल्ली का महाराजा' का आयोजन कर रहा है। लवली पब्लिक स्कूल, प्रियदर्शिनी विहार, दिल्ली 92 में, 31 अगस्त से 4 सितम्बर 2022 तक भगवान गणपति की स्थापना होगी एवं सभी दिन राष्ट्रीय एवं भक्तिमय कार्यक्रम होंगे। 75 वे आजादी के अमृत महोत्सव पर भी विशेष कार्यक्रम होगा, भैय्या अजय जी महाराज द्वारा भी प्रस्तुति दी जाएगी। जिन्होंने प्रधानमंत्री मोदी जी के समक्ष भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। अजय महाराज श्री गणेश सेवा मंडल, दिल्ली से प्रथम वर्ष से जुड़े हुए हैं एवं पिछले 20 वर्षों से गणेश जी भगवान के समक्ष अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

इस तरह हुई थी स्थापना

भगवान गणेश के प्रति अपार श्रद्धा के कारण समाजसेवी महेन्द्र लड्ढा के मन में दिल्ली में भी मुम्बई की तरह भव्य गणेशोत्सव आयोजित करने का सपना उत्पन्न हुआ। इसी ने अपने जैसे साथियों का सहयोग लेते हुए साकर स्वरूप लिया। इसके अंतर्गत उन्होंने ''मुम्बई के राजा'' की तर्ज पर ''दिल्ली के महाराजा'' नाम से भव्य गणेशोत्सव आयोजित करने की नींव रखी। इसके लिये श्री गणेश सेवा मंडल दिल्ली (लक्ष्मी नगर) (रजि.) की स्थापना 2002 में महेंद्र लड्ढा द्वारा हुई। पिछले 20 वर्षों से लगातार आयोजित होता हुआ यह कार्यक्रम, 'दिल्ली का महाराजा', देश के सबसे बड़े गणेश महोत्सवों में से एक है। इस

आयोजन को अभी तक केंद्रीय मंत्री पुषोत्तम रूपला, रामदास अठावले, श्याम जाजू, तारक मेहता का उल्टा चश्मा के कलाकार दिलीप जोशी, निर्माण असीत मोदी, अक्षरधाम के संत लोकेश मुनि एवं अन्य वरिष्ठ नेता एवं साधु संतो का सान्निध्य प्राप्त हुआ है।

समाजसेवा में भी समर्पित संस्था

श्री गणेश सेवा मंडल दिल्ली एक आम धार्मिक संस्था नही है। बालगंगाधर तिलक के संदेश को याद में रखते हुए एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से प्रेरणा लेते हुए, यह संस्था सामाजिक, पारंपरिक, देश एवं प्राकृतिक कार्यों में समर्पित है। गौ सेवा, रक्त दान शिविर, स्वास्थ्य चिकित्सा कैम्प, निर्धन कन्या विवाह, इको फ्रेंडली गणपति मूर्ति, Environment Friendly विसर्जन, यह सब कार्य इसकी खासियत है। गणपति का विसर्जन यमुना में ना करके, अपने ही पंडाल में, लाखों भक्त व श्रद्धालुओं के साथ करते हैं। एक बड़े से पानी के हौद में हज़ारों गणेश मूर्त्ति को विसर्जित करके उस पानी का उपयोग पेड़ पौधे उगाने में करते हैं। यमुना में विसर्जन ना करने का संदेश बाकी दिल्ली के मंडलों को भी देते हैं। इससे सड़क पर ट्रैफिक यातायात बाधित नहीं होता और एम्बुलेंस सेवा को भी अड़चन नही आती। मोदी जी की अपील पर प्लास्टिक का भी बहिष्कार किया है। फिर भी यदि प्लास्टिक पानी की बोतल एकत्रित होती है, तो वे उसे टेक्नोलॉजी के माध्यम से पॉलीस्टर यार्न में कन्वर्ट करते हैं।

माहेश्वरी समाज की प्रतिभाऐं विश्व के कोने-कोने में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है। उनमें से ही एक है, विराटनगर (नेपाल) की बेटी डॉ. ईरा सारडा।

चिकित्सा क्षेत्र में विशेषता हासिल करती

डॉ. ईरा सारडा

आसमान को छूती आज माहेश्वरी समाज की बेटियों को देखकर सीना गर्व से बड़ा हो जाता है। हमारी बेटियां चाहे विश्व के किसी भी कोने में हों, लेकिन किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने का कोई अवसर नहीं छोड़ती और पूरे समाज को गौरवान्वित करती हैं। इसी तरह विराटनगर के नेपाल के विराटनगर जैसे छोटे से गांव से अमेरिका में विश्व की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी तक पहुंचने का सफर एक स्वप्न जैसा लगता है। इस सपने को हकीकत में बदलती डॉ. ईरा सारडा ने, नेपाल के शीर्ष सम्मान ''प्रबल गोरखा दक्षिण बाहु- प्रथम श्रेणी'' से विभूषित स्वर्गीय श्री नंदकिशोर सारडा के आंगन में उनके पुत्र-पुत्रवधू सुनील और गिरिजा सारडा (पूर्वांचल संयुक्त मंत्री, अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन) की पुत्री के रूप में 1998 में जन्म लिया और कुल का नाम विभूषित किया।

चिकित्सक के साथ इंजीनियर भी

श्री गंगानगर राजस्थान के स्वर्गीय श्री रामदेव चितलांगिया की दोहिती डॉ. ईरा ने कक्षा 12 तक भारत के मसूरी के वुडस्टाक स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने के बाद इंग्लैंड की न्यूकासल यूनिवर्सिटी तथा डरहम यूनिवर्सिटी के संयुक्त तत्वावधान में एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद यूनिवर्सिटी ऑफ सेन फ्रांसिस्को और यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कली से मास्टर ऑफ ट्रांसलेशनल मेडिसिन की डिग्री प्राप्त की। सिनेमा का एक गाना बहुत फेमस हुआ था 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा, बेटा हमारा ऐसा काम करेगा'। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आजकल हमारी बेटियां भी इसी तरह के काम कर रहे हैं और इसी तरह नाम भी कर रही है। कोई कहता है कि मेरा बेटा डॉक्टर बनेगा, कोई कहता है कि मेरा बेटा इंजीनियर बनेगा पर इस बेटी ने तो डॉक्टर और बायोमेडिकल इंजीनियर दोनों बनकर अपने परिवार को गौरवान्वित किया है। एक आर्टिस्ट, एक अच्छी वक्ता और एक सुहृदय डॉक्टर ईरा, 2 साल के लिए इंग्लैंड में डॉक्टरी प्रैक्टिस कर रही हैं।

लघुकथा

उपयोगिता

उषा सोमानी
चित्तौड़गढ़ (राज.)

दोपहर का समय था और हल्की सर्दी के दिन थे। सुनंदा लॉन में बैठकर हल्की धूप का आनंद ले रही थी तभी उसकी बचपन की पक्की सहेली प्रांजल आई। सुनंदा ने प्रांजल को गले लगाकर गर्मजोशी से उसका स्वागत किया। दोनों गप्पें लगाने लगी। आज दोनों बहुत लम्बे समय बाद जो मिली थीं। बातों ही बातों में सुनंदा ने पूछा, 'और सुनाओ जिंदगी की गाड़ी कैसे चल रही है।'

प्रांजल ने गहरी लंबी साँस ली। वह बोली, 'अरे! जिंदगी की गाड़ी खटारा हो गई है।'

सुनंदा ने माथे पर सलवटें चढ़ाई और बोली, 'क्या कह रही हो? तुम्हारी बात समझ में नहीं आयी। तुम्हारा स्वास्थ्य तो ठीक है ना।'

प्रांजल खींज कर बोली, 'अरे! तुझे क्या बताऊँ। मेरी तो अब घर में कद्र अनुपयोगी सामान की तरह हैं, कोई पूछता भी नहीं।'

सुनंदा हँस कर बोली, 'साठ के पास आकर भी तुम नहीं बदली। स्कूल के दिन याद आ गए। कक्षा में भी तुम ऐसे ही रूठ कर बैठ जाती थी और हर बार मैं तुम्हें मनाती थी।'

दोनों स्कूल के दिन याद कर खिलखिलाकर हँसने लगी। अचानक सुनंदा गंभीर हो गई। वह बोली, 'हम जिंदगी के उस पड़ाव पर है, जहाँ हमें अपनी उपयोगिता बनाकर रखनी होगी। जीवन जीने के मूल मंत्र को समझना होगा।'

प्रांजल चिढ़कर बोली, 'संत-महात्मा की तरह प्रवचन मत दे। सीधे-सीधे शब्दों में बता, कहना क्या चाहती हैं? तुझे पता है न, मुझे आज भी बात....।' वह भोली सी सूरत बनाकर सुनंदा का चेहरा ताकने लगी।

सुनंदा ने प्रांजल की आँखों में झांक कर देखा तो वहाँ उपेक्षा और दुख का गहरा समुंदर था। वह धीरे से बोली, 'पेड़ जब तक छाँव देता है तब तक पथिक उसके नीचे विश्राम करते हैं। सूखे ठूँठ के नीचे कोई नहीं ठहरता। बिलकुल वैसे ही बच्चों के बड़े होने के बाद उनकी आवश्यकताएं और प्राथमिकताएं बदल जाती है। माँ के आस-पास सिमटी छोटी सी दुनिया बाहर की ओर विस्तृत हो जाती है। ऐसे में हमें अपने कौशल से उनकी इस नई विस्तृत दुनिया में जगह बनानी पड़ती है। तभी हमारी उपादेयता रहती है। यही बदलते समय की माँग है। तुझे मालूम है, मैं अपने पोते-पोतियों का साथ पाने के लिए, उनके साथ बैठकर टीवी पर क्रिकेट का मैच देखती हूँ। वे भी मुझे बड़े चाव से क्रिकेट की बारीकियां समझाते हैं। अरे! मुझे कौन सा इस बुढ़ापे में क्रिकेट खेलना है। अब तो घर में बैठे-बैठे ही कमर अकड़ जाती है, दौड़ने के लिए तो नया जन्म लेना पड़ेगा।'

दोनों हँसने लगी फिर थोड़ी देर के लिए वहाँ खामोशी छा गई। इस खामोशी के पीछे बहुत बड़ा तूफान दफन था। प्रांजल ने गहरी साँस ली और बोली, 'सृष्टि का यह नियम जिसे समझ में आ गया उसकी उपादेयता को कोई भी चुनौती नहीं दे सकता।'

सुनंदा खड़े होते हुए बोली, 'चल अंदर बढ़िया अदरक वाली चाय पीकर, नई ऊर्जा से मन को ताजा करते हैं।'

प्रांजल ने महसूस किया, उसके तन और मन में नई स्फूर्ती आ गई थी। आज उसके मन में आत्मविश्वास की नई कोपल निकली थी। वह जल्दी से उठकर सुनंदा के पीछे चल दी।

एक वृक्ष सौ पुत्र समान...

वैसे ही शास्त्रों में एक वृक्ष को 100 पुत्रों के समान नहीं माना गया है। नीमड़ी के रूप में पूजे जाने वाले नीम को ही ले लें। यह यूं ही नहीं पूजा जाता, यह न सिर्फ पर्यावरण को शुद्ध करता है बल्कि इसकी जड़, छाल, पत्ती आदि सभी अवयव औषधीय गुणों से भरे हैं। तभी तो कहते हैं, 100 हकीम=एक नीम।

एक नीम सौ हकीम समान

चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे प्राचीन चिकित्सा ग्रंथों में भी इसका उल्लेख मिलता है। इसे ग्रामीण औषधालय का नाम भी दिया गया है। यह पेड़ बीमारियों वगैरह से आजाद होता है और उस पर कोई कीड़ा-मकौड़ा नहीं लगता इसलिए नीम को आजाद पेड़ कहा जाता है। भारत में नीम का पेड़ ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग रहा है। लोग इसकी छाया में बैठने का सुख तो उठाते ही हैं, साथ ही इसके पत्तों, निंबौलियों, डंडियों व छाल को विभिन्न बीमारियां दूर करने के लिए प्रयोग करते हैं। आयुर्वेद ग्रंथों में नीम के गुण के बारे में चर्चा इस तरह है-

''निम्ब शीतों लघुग्राही कतुर कोअग्नि वातनुत।
अध्यः श्रमतुटकास ज्वरारुचिक्रिमी प्रणतु।।

अर्थात - नीम शीतल, हल्का, ग्राही, पाक में चरपरा, हृदय को प्रिय, अग्नि, परिश्रम, तृषा, अरुचि, क्रीमी, व्रण, कफ, वमन, कोढ़ और विभिन्न प्रमेह को नष्ट करता है।

अमेरिका भी नीम का मुरीद

भारतीय संस्कृति में नीम का विशेष महत्व है। हमारे यहां आम धारणा रही है कि जहां नीम है, वहां रोग व मृत्यु नहीं आती। अमेरिका सहित कई देश इसे पेटेंट कराने में वर्षों से जुटे हैं। विदेशों में नीम को एक ऐसे पेड़ के रूप में पेश किया जा रहा है जो मधुमेह से लेकर कैंसर और न जाने किस-किस तरह की बीमारियों का इलाज कर सकता है। कारण यही है कि नीम के औषधीय गुणों को घरेलू नुस्खों में उपयोग कर स्वस्थ व निरोगी बना जा सकता है। नीम एक चमत्कारी वृक्ष माना जाता है, जो प्रायः सर्व सुलभ मिल जाता है। यह पूरे भारत में फैला है और हमारे जीवन से जुड़ा है। नीम एक बहुत ही अच्छी वनस्पति है जो भारतीय पर्यावरण के अनुकूल है और भारत में बहुतायत में पाया जाता है। भारत में इसके औषधीय गुणों की जानकारी हजारों सालों से रही है। यही कारण है कि नीम हमारे लिए अति विशिष्ट व पूजनीय वृक्ष है। नीम को संस्कृत में निंब वनस्पति कहते हैं।

कई बीमारियों में कारगर

यह वृक्ष अपने औषधि गुण के कारण पारंपरिक इलाज में बहुपयोगी सिद्ध होता आ रहा है। नीम स्वभाव से कड़वा जरूर होता है परंतु इसके औषधीय गुण बड़े ही मीठे होते हैं। तभी तो नीम के बारे में कहा जाता है कि एक नीम और सौ हकीम दोनों बराबर हैं। इसमें कई तरह के कड़वे परंतु स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ होते हैं। इनमें मार्गोसी, निम्बिडीन, निम्बेस्टेरोल प्रमुख हैं। नीम सर्वरोगहारी गुणों से भरा पड़ा है। यह हर्बल आर्गेनिक पेस्टिसाइड साबुन, एंटीसेप्टिक क्रीम, दातुन, मधुमेहनाशक चूर्ण, कॉस्मेटिक आदि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। नीम की छाल में ऐसे गुण होते हैं, जो दांतों और मसूढ़ों में लगने वाले बैक्टीरिया को पनपने नहीं देते हैं। इससे दांत स्वस्थ व मजबूत रहते हैं।

योग-मुद्रा

जैसा कि नाम में समाहित हैं सहयोग अर्थात् कुबेर मुद्रा के लाभ। यह अपने आप में शरीर के समस्त अंगों को परस्पर सहयोग के लिये सक्रिय तो करती ही है, साथ ही समृद्धि भी प्रदान करती है।

सोच को पूर्ण करती है

सहयोग (कुबेर) मुद्रा

शिवनारायण मूंधड़ा
'वास्तु मित्र'
94252-02721

यह मुद्रा आत्मविश्वास पैदा करती है। यह मुद्रा लगाने के बाद सांस भरने से साईनस समस्या में बहुत लाभ मिलता है। बार-बार गहरे लम्बे श्वास लेने से साईनस में जमा श्लेष्मा दूर होता है। बन्द नाक भी खुल जाती है और साईनूसाईटिस के कारण होने वाले सिर दर्द, सिर का भारीपन भी समाप्त होता है। इस मुद्रा के करने से तनाव दूर होता है। मुद्रा लगाने के साथ मन में यह सोचें कि मुझे क्या चाहिए? मेरे लिये क्या अच्छा है? ऐसे सकारात्मक विचार लाएं। जैसा आप सोचेंगे वैसा होना शुरु हो जाएगा। अग्नि, वायु और आकाश तत्त्वों के मिलने से तथा पृथ्वी तत्त्व और जल तत्त्वों को दबाने से आत्म विश्वास बढ़ता है और तनाव में कमी आती है। अंतर्यात्रा और गहरे जाने के लिए, अपने आप में पूर्ण विज्ञान है मुद्राएं। इसमें हमारा कुछ लगता भी नहीं और मिलता बहुत कुछ है। इस मुद्रा से आध्यात्मिक यात्रा सहज होती है। प्यारे-प्यारे अनुभव होने लगते हैं।

कैसे करें : पहली दोनों उंगलियों के अग्रभाग को अंगूठे के अग्रभाग से मिलाएं। बाकी दोनों उंगलियों को सीधा न रखते हुए उन्हें मोड़कर हथेली से लगा लें। बार-बार गहरी लंबी श्वास लें। आयुर्वेद के अनुसार जल और पृथ्वी तत्त्वों के मिलने से ही कफ बनता है। अतः जब पृथ्वी और जल तत्त्वों को कम कर देते हैं, तो कफ के दोष दूर होते हैं।

एक वृक्ष सौ पुत्र समान...

एक वृक्ष सौ पुत्र समान की कसौटी पर पीपल भी शत-प्रतिशत या कहें उससे भी अधिक खरा उतरता है। इसे हमारी संस्कृति में साक्षात् लक्ष्मीनारायण के रूप में पूजा जाता है। इस पूजन का आधार सिर्फ धार्मिक ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक भी है। कारण है इसका संरक्षण क्योंकि यह वृक्ष अपने आप में कई जीवनदायी गुणों से भरपूर है। आईये देखें आखिर क्यों पूजनीय है, पीपल।

क्या लक्ष्मीनारायण का स्वरूप है पीपल

विशिष्ट भारतीय संस्कृति में पीपल वृक्ष को बहुत पवित्र एवं पूज्य माना जाता है। कहा गया है कि पीपल के वृक्ष में देवता निवास करते हैं। इसका अर्थ यह है कि पीपल में अनेक विशिष्ट गुण हैं। पीपल का वृक्ष चौबीसों घंटे प्राणवायु देकर वातावरण को शुद्ध एवं स्वास्थ्यप्रद बनाए रखने का कार्य करता है। अतः यह गुण उसे स्वतः ही पूजनीय बना देता है। पीपल को भगवान शंकर के रूप में भी पूजा जाता है। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार समुद मंथन से प्राप्त विष को भगवान शंकर ने पीकर पृथ्वी को बचाया उसी तरह पीपल का वृक्ष भी वातावरण से जहरीली गैसों को निरंतर पीते रहकर मानव जाति को चौबीसों घंटे ऑक्सीजन देकर कल्याण करता है। यह एक प्रकार से ऑक्सीजन यंत्र ही है। अतः फेफड़ों, दमा व अस्थमा के रोगियों को इसकी छाया में बैठने से आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके संपर्क में रहने वाले व्यक्ति की आयु लंबी एवं शरीर स्वस्थ रहता है। यह सृष्टि का एकमात्र वृक्ष है, जो 24 घंटे ऑक्सीजन देता है। अन्यथा अन्य सभी वृक्ष तो केवल दिन में ही ऑक्सीजन देते हैं। रात्रि में तो सभी कॉर्बन डाइऑक्साईड ही छोड़ते हैं।

धार्मिक रूप से भी अतिमहत्वपूर्ण

पशु-पक्षियों एवं पेड़-पौधों के पर्यावरणीय महत्व को स्वीकार करते हुये हमारी संस्कृति में उनका सम्मान करने के लिये त्योहारों पर उनकी पूजा व अनुष्ठान तक किए जाते हैं। पीपल की पूजा वैसे तो वर्षभर की जाती है लेकिन होलिका दहन के दसवें दिन 'दशा माता पर्व' पर पीपल पूजन का विशेष कार्यक्रम तय है। इसी क्रम में दो दिन पूर्व शीतला सप्तमी या अष्टमी का पूजन भी पीपल के नीचे बने स्थानक के ऊपर रखी खंडित मूर्तियों के पूजन से सम्पन्न होता है। दशा माता उस गृहदेवी को मानते हैं जो परिवार को सुदशा या सुख-समृद्धि प्रदान करती हैं। पीपल की छाया में व्रत-उपवास करके दशा माता का पूजन एक ओर जहां पीपल के जीवनदायी महत्व का सम्मान करना है, वहीं जीवन में धार्मिक अनुशासन एवं मानवीय गुणों का विकास करना भी है। पेड़-पौधों का आदर एवं उनकी रक्षा का संकल्प लेना वास्तव में मनुष्य के लिये स्वयं की रक्षा की व्यवस्था करना ही है। पीपल के पवित्र वृक्ष को धार्मिक, ऐतिहासिक या सार्वजनिक स्थलों पर ही रोपित किये जाने का विधान है। इसे घरों में लगाये जाने की मनाही है क्योंकि वैसा पवित्र वातावरण उसे घरों में नहीं मिल सकता है जैसी कि आवश्यकता होती है।

जीवनदायी है पीपल

इस वृक्ष की अनेक विशेषताओं में से एक यह है कि जब वायु बिल्कुल शांत हो तब भी इसके पत्ते हिलते रहते हैं। साथ ही इसके नीचे पानी के कणों का अहसास होता है जिसके कारण भीषण गर्मी में भी इसकी छाया में शीतलता का अनुभव होता है। शांत हवा होने पर भी पत्तों के निरन्तर हिलने और जल वाष्प के कारण छाया के शीतल रहने के बावजूद भी पीपल के पेड़ के नीचे कभी भी अन्धेरा नहीं रहता। सूर्य की रश्मियाँ सहज ही इसके पत्तों को पार कर धरती पर आती रहती हैं और वातावरण को स्वच्छ बनाती रहती हैं। पीपल के वृक्ष की जड़, टहनियां, पत्ते, फल, छाल, गोंद तथा रस व रेशे आदि सभी अंग मनुष्य को निरोग बनाने में सहायता करते हैं। आयुर्वेद ग्रंथों में इसके चिकित्सीय गुणों को विस्तार से वर्णित किया गया है तथा चिकित्सा शास्त्री मानव को नया जीवन एवं शक्ति देने वाली श्रेष्ठ औषधियां पीपल के अंगों से ही तैयार करते हैं। साधारण लोग भी इसकी अनेक विशेषताओं से परिचित हैं तथा घरेलू ढंग से कई रोगों के उपचार में पीपल के विभिन्न अंगों का प्रयोग करते है। गांवों के वनों में पीपल के वृक्ष इसीलिये ज्यादा लगाये जाते है ताकि वहां का वातावरण स्वास्थ्यप्रद बना रहे। पीपल की छाल पीलिया रोग दूर करती है।

बोधीवृक्ष के रूप में भी पूज्य

पीपल का वृक्ष लम्बी आयु का वृक्ष है इसलिये इसे अति महत्वपूर्ण स्थानों पर रोपित करने की परम्परा रही है। भारतीय इतिहास में तो इसे हर युग में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह वृक्ष अपने नीचे बैठने वाले व्यक्ति को न केवल आरोग्य व बल प्रदान करता है, वरन् उसे विवेकशील, ज्ञानवान व योगी के गुण भी प्रदान करता है, फलस्वरूप उसे सत्य का बोध हो जाता है। बोधत्व प्रदान करने के इस गुण के कारण ही इसे बोधीवृक्ष के रूप में पूजा जाता है। बुद्ध को बोधीवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्ति से लेकर अशोक की पुत्री संघमित्रा का बोधीवृक्ष की डाल लेकर धर्मदूत की मैत्री यात्रा के उद्देश्य से श्रीलंका जाना विश्व इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखी घटना है। बौद्धकाल में राजमार्गों, धार्मिक स्थलों के आसपास व कुंओं के निकट पीपल के वृक्ष लगाने की ही परंपरा थी, जिसके कारण यात्रियों को विश्राम के लिये उत्तम छाया एवं शुद्ध जल की प्राप्ति होती थी।

पर्यावरण अर्थात् प्रकृति हम उसके संरक्षण की बात आमतौर पर ऐसे करते हैं, जैसे आदर्शों का प्रदर्शन कर रहे हैं। लेकिन हकीकत देखें तो हम जो भी करते हैं, अपने लिये ही करते हैं। कारण यह है कि जीवन के लिये प्रकृति का साथ जरूरी भी है। आखिर हम भी तो इस पर्यावरण का ही एक हिस्सा है।

जीवन के लिये जरूरी है प्रकृति का साथ

डॉ. सुलक्ष्मी तोषनीवाल
ब्यावर (राज.)

प्रकृति संरक्षण यह भारतीय संस्कृति का ही अहम भाग है। यहाँ के प्रत्येक त्यौंहार, हमारी दिनचर्या, हमारी पूजन पद्धति आदि सभी पर्यावरण व वृक्षों के साथ जुड़ी हुई है। कभी हम वट वृक्ष की पूजा कर उस पर मोली बाँध लम्बी उम्र की कामना करते हैं तो कभी पीपल, तुलसी को सींचकर सुख-समृद्धि चाहते हैं। कभी बिल्व-पत्र भगवान शिव पर चढ़ा कर उन्हें प्रसन्न करते हैं, तो कभी भारतीय नववर्ष पर नीम, काली मिर्च व मिश्री का सेवन कर स्वस्थ रहने की कामना करते हैं तो सातुड़ी तीज पर महिलाएं नीमड़ी माता (नीम की डाली) की पूजा कर पारिवारिक सुख समृद्धि व लम्बी आयु की कामना करती हैं, तो कभी आँवले के वृक्ष की पूजा तो कभी केले के पौधे की पूजा कर स्वस्थ्य व समृद्ध बने रहने की मंगल कामना करते हैं। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा करना अर्थात् वृक्षारोपण निरन्तर करते रहना, उनको खाद-पानी देकर बड़ा करना फिर उनका सेवन करना आदि बातें मुख्य रूप से बतायी गई हैं। हममें से अधिकांश व्यक्ति इन वृक्षों की पूजा भी करते हैं तो सेवन भी करते हैं। जब हमारी संस्कृति ही पर्यावरण रक्षा से प्रेरित है तो हम भी हमारी सोच में थोड़ा परिवर्तन करें और हमारे सामाजिक रीति-रिवाज के साथ वृक्षारोपण को जोड़ लें तो देखते ही देखते प्रदूषण स्वतः ही समाप्त होता चला जायेगा। हमारे जीवन के तीन मुख्य चरण हैं- जनम, परण व मरण। ये तीनों ही प्रकृति के साथ जुड़े हैं।

जन्म पर प्राकृतिक वंदनवार

घर में नये प्राणी के आगमन के समय कमरे व घर के द्वार पर नीम की पत्तियों की बंधनवार बाँधी जाती है, नीम के पानी का उपयोग करते हैं। इन सबके पीछे मान्यता है कि नीम में इतनी ताकत है कि उसकी छाया व हवा से सभी प्रकार के रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। बच्चे के जन्म के समय जिस प्रकार कई सामाजिक रीति-रिवाजों, भोज आदि का आयोजन करते हैं, उसी प्रकार निश्चय कर लें कि एक वृक्ष भी लगायेंगे, जो बच्चे के जीवन के लिए स्वस्थ्यता का आशीर्वाद होगा।

परण (विवाह) में प्रकृति संरक्षण

परण अर्थात विवाह के समय भी घरों में ताजे पत्तों की वंदनवार बाँधी जाती है। कलश को नीम के पत्तों से सजाया जाता है, तो मण्डप केलों के पत्तों से। जब दूल्हा, दुल्हन के यहाँ पहुँचता है तो स्वागत में पुष्प वर्षा की जाती है, जो सम्मान का भी प्रतीक है। तोरण हेतु भी नीम की डाली का ही उपयोग किया जाता है। इस अवसर पर भी यदि एक वृक्ष लगा दें तो धरती को हरा-भरा बनाने में वर-वधू का भी योगदान रहेगा व सुखद स्मृतियां भी बनी रहेगी। राहगीर व पशु-पक्षियों को छांव मिलेगी तथा उनका आशीर्वाद भी अनजाने में ही प्राप्त हो जायेगा।

मुक्ति की कामना में भी प्रकृति

मरण अर्थात् मृत्यु के समय भी सुखी लकड़ियों से दाह-संस्कार किया जाता है। मुँह में तुलसी पत्र व पवित्र गंगाजल दिया जाता है। अर्थात् मृत्यु के समय भी वृक्षों का उपयोग किसी न किसी रूप में किया ही जाता है। हमारा भी कर्त्तव्य बनता है कि हम कम से कम एक वृक्ष तो हमारे प्रिय परिवारजन की याद में लगाएं, जो फल-फूल व पत्तों से परिपूर्ण हो सम्पूर्ण दुनिया को स्वस्थता का आशीर्वाद होगा। हमारे परिवार में मेरे पिताजी सेठ सुंदरलालजी, माता चम्पादेवी व भ्राता महेंद्र तोषनीवाल की मृत्यु पश्चात हमने उनकी याद में वृक्षारोपण किया। जमीन में गहरा गड्ढा करके उनकी अस्थियों को सम्मानपूर्वक रखकर ऊपर से वृक्ष लगा दिया। यह अस्थि-विसर्जन भी धरती माता की गोद में हो गया जो हम सब की पालनहार है। अस्थियां खाद में परिवर्तित हो उस वृक्ष को पोषित भी करती है। आज भी जब उनकी स्मृति में लगा वृक्ष देखते हैं तो ऐसा लगता है मानों अपने रोम-रोम से पूरी दुनिया को आशीर्वाद दे रहे हैं।

आइये! हम सभी आजादी के इस अमृत महोत्सव पर प्रण करें कि हम हमारे प्रत्येक सामाजिक व पारिवारिक आयोजन पर एक वृक्ष अवश्य लगायेंगे व दूसरे व्यक्तियों को भी इस हेतु प्रेरित करेंगे, यही हमारी प्रकृति के प्रति सच्ची उपासना व पूजा होगी।

हमने अपनी सुविधा के लिये पॉलिथिन तथा डिस्पोजेबल सामग्री का उपयोग प्रारम्भ किया था। लेकिन ये ही हमारे लिये अत्यंत परेशानी का सबब बनती जा रही हैं। कारण यह है कि ये न तो सड़ती है और न ही गलती है। ऐसा रहा तो पूरी पृथ्वी पर मिट्टी की जगह सिर्फ पॉलिथिन ही नजर आऐगा।

पर्यावरण के लिये खतरा पॉलिथिन

बाबूलाल जाजू
(पर्यावरणविद्)
भीलवाड़ा

आज आवश्यकता है कि प्रत्येक नागरिक पॉलिथिन व डिस्पोजेबल सामग्री का उपयोग नहीं कर पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बन घातक बीमारियों से बचे। पॉलिथिन डिस्पोजेबल सामग्री मानव ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों के लिए भी अत्यधिक घातक है। डिस्पोजेबल सामग्री के प्रयोग से शहर की सड़कें, नालियां व सीवरेज लाईने अवरूद्ध हो रही हैं और गंदगी बढ़ गई है, जिससे मच्छरों की भरमार हो गई है। ये मच्छर डेंगू व अन्य खतरनाक बीमारियों का कारण बन रहे हैं। साथ ही डिस्पोजेबल सामग्री से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भी बढ़ गई है। डिस्पोजेबल व पॉलिथिन के उपयोग के कारण कैंसर, चर्मरोग सहित अन्य घातक बीमारियों में तेजी से इजाफा हो रहा है।

सरकार ने क्यों लगाया प्रतिबंध

भारत सरकार द्वारा 1 जुलाई, 2022 से देशभर में पॉलिथिन डिस्पोजेबल सामग्री पर रोक लगाने का क्रान्तिकारी कदम उठाया गया है। इसका समर्थन प्रत्येक देशवासी को करना चाहिए। भारत में प्रतिवर्ष लाखों विवाह समारोहों में अरबों की संख्या में डिस्पोजेबल प्लास्टिक के गिलास, कटोरियां व चम्मच काम में लिए जाते हैं व अरबों डिस्पोजेबल गिलास चाय की थड़ियों पर प्रतिदिन काम में आ रहे हैं जो घातक केमिकल से बने होने के कारण गरम चाय गिलास में डालते ही जहर के रूप में चाय में फैल जाते हैं। पानी की पैक बोतल संस्कृति ने भी अपनी गति बहुत तेज कर दी है, जिसके चलते शादी समारोह व अन्य छोटे-मोटे उत्सवों पर भी मिनरल वाटर की बोतलें स्टेटस सिम्बल के रूप में इस्तेमाल हो रही है। इन फेंकी गई बोतलों से प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। ताजा अध्ययन में यह भी सामने आया है कि पानी की पैक बॉटल्स कैंसर का एक गंभीर कारण बन रही है।

सम्पूर्ण पर्यावरण के लिये खतरा

प्रायः शहर तथा गांव दोनों में शादी व अन्य उत्सवों में फेंकी गई डिस्पोजेबल सामग्री से सड़ांध युक्त वीभत्स एवं नारकीय दृश्य देखने को मिलता है। इसी प्रकार विवाह में बारात के स्वागत एवं अन्य धार्मिक आयोजनों के अवसर पर निकाली जाने वाली शोभायात्राओं में भी लोगों को डिस्पोजेबल सामग्री में खाद्य व पेय पदार्थ दिये जाते हैं। यह खाद्य सामग्री धीमे जहर का रूप धारण कर लेती है। इस जहर के सेवन से मनुष्य के स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। यह डिस्पोजेबल सामग्री उपयोग में आने के बाद यहां-वहां डाल दी जाती है, जिसके कारण सड़कें व नालियां इस प्लास्टिक से पट जाती है और इसमें लगी खाद्य सामग्री को खाने के लालच में पशु डिस्पोजेबल सामग्री को भी खा जाते हैं जो उनके लिए प्राणघातक सिद्ध हो रही हैं।

पॉलिथिन-डिस्पोजल का बहिष्कार ही उपाय

सर्वे के अनुसार देश में प्रतिदिन लगभग 15 हजार गौ-वंश की मौत पॉलिथिन व डिस्पोजेबल खाने से हो रही है। यह सामग्री न तो सड़ती है और न ही गलती है, जिससे मिट्टी में न मिल पाने के कारण धरती की उर्वराशक्ति को कम करने के साथ-साथ अवरोध बनकर वर्षा के जल को जमीन में जाने से रोक देती है। इस सामग्री को नष्ट करने के लिए जलाया जाता है तो वायुमण्डल प्रदूषित हो जाता है। अतः जरूरत है प्रत्येक आमजन को पॉलिथिन व डिस्पोजेबल सामग्री का उपयोग नहीं कर पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनने की।

माहेश्वरी समाज के मूल संस्कारों और रीति रिवाजों से करायेगी पहचान

ऋषि मुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

हमारे संस्कार हमारे रीति रिवाज़

जिसमें पाऐगें आप माहेश्वरी समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों के साथ ही

विवाह संस्कार, जन्म संस्कार, मृत्यु संस्कार तथा
माहेश्वरी परम्पराओं के विशिष्ट पर्वों गणगौर, सातुड़ी तीज
तथा ऋषि पंचमी पर केन्द्रीत विशिष्ट जानकारी।

विशेष छूट के साथ उपलब्ध
~~Rs. 125/-~~
Rs. 100/-

amazon पर उपलब्ध

ऋषिमुनि प्रकाशन: 90, विद्या नगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) 94250 91161, 91799-28991

IS:1786
CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

पाश्चात्यकरण के प्रभाव में कुछ लोग पितृ श्राद्ध से बचने के लिये कई तरह के तर्क देते हैं। लेकिन हकीकत देखें तो श्राद्ध पक्ष का 16 दिवसीय यह पितृ पर्व वास्तव में पितृ की शांति तथा उसके फलस्वरूप मंगलकामना प्राप्ति का पर्व है। इस वर्ष 10 सितम्बर से 25 सितम्बर का समय पितृ पक्ष का है। आईये शास्त्रों के आईने में देखें क्यों, कब और कैसे करें हम अपने पितरों का श्राद्ध?

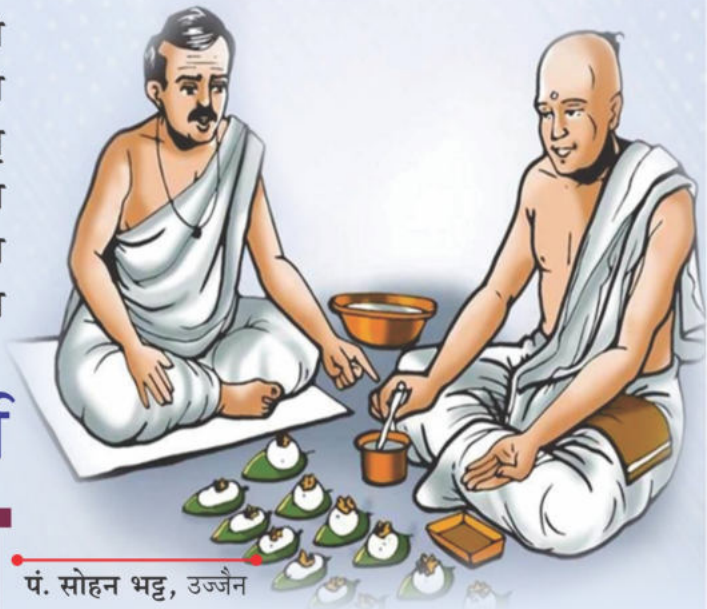

पितृ से मंगलकामना का पर्व

श्राद्धपक्ष

पं. सोहन भट्ट, उज्जैन
94251 95741

वस्तुतः श्राद्ध अपने पूर्वजों तथा माता-पिता, मातामही एवं पितामह का श्रद्धापूर्वक स्मरण करने का ही पर्व है। हिंदु शास्त्रों एवं अन्य धार्मिक ग्रंथों में माता-पिता के प्रति श्रद्धा के उपदेश भरे पड़े हैं। यह व्यावहारिक जगत का सत्य है। जिन माता-पिता ने प्रभु कृपा से यह शरीर दिया एवं अबोध व अवस्था से लेकर समझदार होने तक यथाशक्ति उचित शिक्षा एवं पालन पोषण का भार उठाया, यदि आप इसके लिए उन्हें उचित सम्मान भी जीवन में नहीं दे पाये तो स्पष्ट है, आपके पुत्र एवं प्रपौत्र भी आपकी वृद्धावस्था में यही प्रतिफल देंगे। इससे अधिक आशा करना व्यर्थ ही है। सनातन धर्म की परंपराओं में भादौ महीने की पूर्णिमा से आश्विन माह की अमावस्या तक कुल 16 दिनों के श्राद्ध पक्ष में पूर्वजों को यादकर उनके सुख और शांति के लिए श्राद्ध कर्म कर उनसे स्वयं के जीवन के कष्टों को दूर करने की भी कामना की जाती है। इन 16 दिनों तक सामान्यतः अपने पितृ की मृत्यु तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म किया जाता है। इसके साथ ही उन्हें प्रसन्न कर सम्पूर्ण परिवार के मंगल की कामना की जाती है। यह श्राद्ध कर्म प्राचीन काल से सतत रूप से चला आ रहा है।

शास्त्रों के आयने में श्राद्ध

सनातन धर्म की मान्यता है कि मानव शरीर पंच तत्वों-आग-पानी, पृथ्वी, वायु, आकाश आदि पांच तत्वों तथा कर्म इन्द्रियों हाथ-पैर आदि सहित 27 तत्वों से बना है। किंतु जब मृत्यु होती है तो शरीर पंचतत्व और कर्मेन्द्रियों को छोड़ देता है। किंतु शेष 17 तत्वों से बना अदृश्य और सूक्ष्म शरीर इसी रूप में रहता है। हिंदू शास्त्रों की मान्यता है कि सांसारिक मोह और लालसाओं के कारण यह सूक्ष्म शरीर कम से कम 1 साल तक मूल स्थान, घर और परिवार के आसपास ही रहता है। किंतु शरीर न होने से उसे किसी भी सुख का आनंद नहीं मिलता और इच्छा पूर्ति न होने के कारण वह अतृप्त रहता है। यही कारण है मृत्यु के बाद वर्षभर और उसके बाद भी मृत परिजन को तृप्त करने और जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करने के लिए श्राद्ध कर्म किया करते हैं। श्राद्ध द्वारा भोजन के साथ अन्य सुख, रस आदि सूक्ष्म रूप में मृत जीव आत्मा या अलग-अलग योनि में घूम रहे पूर्वजों को मिलते हैं और वह तृप्त हो जाते हैं। खासतौर पर पितृपक्ष काल में यह माना जाता है कि पूर्वज इस विशेष काल में अपने परिजनों से मिलने जरूर आते हैं।

पंच महायज्ञों में से एक है पितृ श्राद्ध

शास्त्रों में किसी भी व्यक्ति के लिए 5 कर्म-धर्म अर्थात पंचमहायज्ञ जरूरी बताए गए हैं। ये भूतयज्ञ, मनुष्य यज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ व ब्रह्मयज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। इनमें सारे जीवों के लिए अन्न-जल-दान 'भूतयज्ञ', घर आए अतिथि की सेवा 'मनुष्य यज्ञ', स्वाध्याय व ज्ञान का प्रचार-प्रसार 'ब्रह्मयज्ञ' और पितरों के लिए तर्पण व श्राद्ध करना 'पितृयज्ञ' कहलाता है। इनको महायज्ञ कहा गया है और इनसे किसी तरह का दोष नहीं लगता। किंतु पितृयज्ञ से ही पितृऋण से छुटकारा मिलता है। पितृदोष से मुक्ति के लिए श्राद्ध जरूरी बताया गया है। हिंदू धर्मग्रंथों में कई तरह के श्राद्ध अवसर विशेष पर करने का महत्व बताया गया है। इनमें खासतौर पर तिथि और पार्वण श्राद्ध का विशेष महत्व है। तिथि श्राद्ध हर साल उस तिथि पर किया जाता है, जिस तिथि पर किसी व्यक्ति की मृत्यु हुई हो। पार्वण श्राद्ध हर साल पितृपक्ष में ही किए जाते हैं। इसे महालया या श्राद्ध पक्ष भी पुकारा जाता है। हर साल भादौ महीने की पूर्णिमा और आश्विन माह के कृष्ण पक्ष के 15 दिन सहित 16 दिन की अवधि श्राद्ध पक्ष कहलाती है।

क्यों जरूरी है पितृ श्राद्ध

स्कंदपुराण में लिखा है कि मृत्यु तिथि पर श्राद्ध न करने वाले व्यक्ति को उसके पितृगण श्राप देकर पितृलोक चले जाते हैं। ऐसे व्यक्ति के परिवार को पितृदोष लगता है और वहाँ रोग, शोक, दरिद्रता, दुःख व दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है। ब्रह्म और ब्रह्मवैवर्तपुराण में लिखा है कि धन बचाने की लालसा से श्राद्ध न करने वाले का पितृगण रक्त पीते हैं। वहीं सक्षम होने पर श्राद्ध न करने वाला रोगी और वंशहीन हो जाता है। इसी तरह विष्णु स्मृति के मुताबिक श्राद्ध न करने वाला नरक को प्राप्त होता है। वायुपुराण के मुताबिक पितरों के लिए किए जाने वाले श्राद्ध, देवताओं की प्रसन्नता के लिए किए जाने वाले यज्ञ आदि धर्म-कर्मों से भी ज्यादा शुभ फल देते हैं। श्रद्धा से किये श्राद्ध से कई पीढ़ियों के पितृगण प्रसन्न होकर व्यक्ति को आयु, धन-धान्य, संतान और विद्या से संपन्न होने का आशीर्वाद देते हैं। गरुड़ पुराण के मुताबिक इस पक्ष में श्राद्ध से पितरों को स्वर्ग मिलता है। यहीं नहीं जिनका श्राद्ध किया जाता है, उनको प्रेत योनि नहीं मिलती है और वे पितर बन जाते हैं। ये पितर तृप्त हो संतान के मनचाहे काम पूरे कर धर्मराज के मंदिर में पहुंच बड़ा

ही सुख-सम्मान पाते हैं। गुरुड़ पुराण में यह भी बताया गया है कि श्राद्ध करना पवित्र कार्य है क्योंकि मृत्यु होने पर धर्मराजपुर में जाने के चार रास्ते हैं-पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण। पितरों का श्राद्ध करने वाले को स्वयं धर्मराज अपनी सभा में पश्चिम द्वार से ले जाते हैं और स्वयं खड़े होकर उनका स्वागत करते हैं।

कब करें किनका श्राद्ध

पक्ष में मृत्यु तिथि के मुताबिक किसी भी व्यक्ति को पितरों के लिए जल का तर्पण व श्राद्ध करना चाहिए। तिथि न मालूम होने या तिथि विशेष पर श्राद्ध चूकने पर इसी पक्ष में आने वाली सर्वपितृ अमावस्या या महालया पर पूर्वजों के लिए श्राद्ध, दान व तर्पण करना चाहिये। किसी भी दिवंगत परिजन का प्रथम श्राद्ध मृत्यु के वर्ष से तृतीय वर्ष में श्राद्धारम्भ पूर्णिमा को ही पूरे धार्मिक नियमों के साथ किया जाता है। जिन व्यक्तियों की सामान्य एवं स्वाभाविक मृत्यु चतुर्दशी को हुई हो, उनका श्राद्ध चतुर्दशी तिथि को कदापि नहीं करना चाहिए, बल्कि पितृपक्ष की त्रयोदशी अथवा अमावस्या के दिन करना चाहिए। जिन व्यक्तियों की अपमृत्यु हुई हो अर्थात् किसी प्रकार की दुर्घटना, सर्पदंश, विष, शस्त्राघात, हत्या, आत्महत्या या अन्य किसी प्रकार की अस्वाभाविक मौत हुई हो, तो उनका श्राद्ध मृत्यु तिथि वाले दिन कदापि नहीं करना चाहिए। अपमृत्यु वाले व्यक्तियों का श्राद्ध केवल चतुर्दशी तिथि को ही करना चाहिए, चाहे उनकी मृत्यु किसी भी तिथि को क्यों न हुई हो। सौभाग्यवती स्त्रियों अर्थात पति के जीवित रहते हुए मरने वाली सुहागिन स्त्रियों का श्राद्ध भी केवल पितृपक्ष की नवमी तिथि को ही करना चाहिए। संन्यासियों का श्राद्ध केवल पितृपक्ष की द्वादशी को ही किया जाता है, चाहे उनकी मृत्यु किसी भी तिथि को हुई हो। नाना तथा नानी का श्राद्ध भी केवल आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को ही करना चाहिये, चाहे उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो।

कैसे करें श्राद्ध

यथासंभव श्राद्ध अपने घर पर ही किया जाना चाहिए। संभव न हो तो यह किसी भी तीर्थ या जलाशय के किनारे भी किया जा सकता है। दक्षिणायन में चूंकि पितरों का प्रभाव ज्यादा होता है। इसलिए श्राद्धकर्म के लिए हरसंभव स्थिति में दक्षिण की तरफ झुकी हुई जमीन का उपयोग ही करना चाहिए। शास्त्रों के मुताबिक पितृगणों को ऐसी जगह भाती है, जो पवित्र हो और जहां लोगों का ज्यादा आना-जाना होता है। नदी का किनारा भी पितरों की पसंद है। ऐसी जगह पर गोबर से जमीन को लीपकर श्राद्ध करना चाहिए। काले तिल और कुश तर्पण श्राद्धकर्म में जरूरी है। ऐसा माना जाता है कि ये भगवान विष्णु के शरीर से निकले हैं और पितरों को भी भगवान विष्णु का ही स्वरूप माना गया है। अतः इनके बिना पितरों को जल भी नहीं मिलता। श्राद्ध के एक दिन पहले श्राद्ध करने वाला विनम्रता के साथ साफ मन से विद्वान ब्राह्मणों को भोजन के लिए आमंत्रण दे, क्योंकि ब्रह्मपुराण के मुताबिक ब्राह्मणों की देह में पितृगण वायु के रूप में मौजूद होते हैं।

कौन है श्राद्ध का अधिकारी

श्राद्ध का पहला अधिकार पुत्र का होता है। पुत्र न होने पर पुत्री का पुत्र यानी नाती श्राद्ध करे। जिनके कई पुत्र हों तो वहां सबसे बड़ा पुत्र श्राद्ध करें। पुत्र के उपस्थित न होने पर पोता और पोता भी नहीं होने पर परपोता श्राद्ध कर सकता है। पुत्र व पोते की अनुपस्थिति में विधवा औरत को भी श्राद्ध का हक है। मगर पुत्र के न होने पर पति, पत्नी का श्राद्ध कर सकता है। इसी तरह पुत्र होने पर उसे ही माता का श्राद्ध करना चाहिए, पति को नहीं। पुत्र, पोते या दामाद के न होने पर भाई का पुत्र भी श्राद्ध कर सकता है। यहां तक की दत्तक पुत्र या किसी उत्तराधिकारी को भी श्राद्ध करने का हक है।

स्तम्भ

राह जिंदगी की...

महत्ता-आजादी की

प्रो. कल्पना गगडानी, मुंबई

आजादी का पच्चहत्तरवां साल है, इस आजादी की लड़ाई लड़ने वाली वह पीढ़ी प्रायः समाप्त हो गई। जिस पीढ़ी ने उनकी जवानी के किस्से सुने उस भयावहता को उनके चेहरे पर देखा वह पीढ़ी भी वृद्धावस्था के गलियारे में नजर आ रही है। आज की युवा पीढ़ी स्वतंत्र भारत में जन्मी, पली, पढ़ी। कैसा था वो दौर, क्या होती होगी गुलामी, सदियों कितना हुआ शोषण, अत्याचार का अभ्यस्त समाज, भूला हुआ स्वतंत्रता का अर्थ, कैसे उठा उसका विचार, कैसे जगी आजादी की अलख, कितना बड़ा था वो बलिदान, कितनी लंबी थी वो जद्दोजहद, कैसे जमा वो जज्बा, ये आज की युवा पीढ़ी नहीं जानती। थोड़ा बहुत वह ही समझ पाते हैं जो इतिहास के विद्यार्थी हैं। वे ही अब इस प्रकरण के जानकार हैं।

अपनी आजादी का महत्व और उसे पाने का बलिदान हर पीढ़ी को बतलाना और समझाना बहुत जरूरी है। अपने देश को संभालने की जवाबदारी हर देशवासी की है। देश सरकारों से नहीं बनते, सरकारें देश में बनती हैं। सरकारें आती जाती रहती हैं किंतु देश का स्थायित्व हर नागरिक की जवाबदारी है।

जागरूक रहकर हमें देशधर्म निभाना होगा। इंटरनेट और सोश्यल मीडिया के इस युग में पूरे विश्व की जानकारी हमारी मुट्ठी में रहती है। प्रजातांत्रिक देशों में संघीय संघटनाओं वाले राष्ट्रों में, सत्ता का केंद्रीयकरण किस प्रकार लोकतंत्र को अधिनायकवाद की ओर ले जा रहा है इसकी अनेकों नजीर हमारे सामने हैं। बांग्लादेश का ताजा ताजा उदाहरण हमने देखा है। लम्बे संघर्ष से पाई इस आजादी को संभालना और देश को प्रगति पथ पर पहुंचाना हर देशवासी की पैत्रक जवाबदारी है। सरकारों को अपनी जवाबदारी निभाने के लिये निरन्तर प्रेरित करना हमारा राजधर्म है। कमजोर विपक्ष के रहते जन-जन की जागरुकता अपने अधिकारों की मांग देश को अच्छी दशा में ले जाना और सरकारों की व्यवस्था को सुदृढ़ बनवाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

जाने वाले कह गये- हम लाये हैं तूफान से कश्ती निकालकर, इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।

सम्भालिये और अच्छे से सम्भलिये।

हमारे यहां स्त्री और पुरुष दोनों के लिए पृथक-पृथक जिम्मेदारियां मानी जाती रही हैं। इसी के अंतर्गत पत्नी घर की जिम्मेदारी संभालती थी और पुरुष बाहर आजीविका द्वारा घर का खर्च चलाता था। इससे दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ बन जाते थे। वर्तमान दौर में पति-पत्नी दोनों ही कंधे से कंधा मिलाकर अर्थोपार्जन कर रहे हैं। ऐसे में यह विचारनीय हो गया है कि पूर्व की तरह ही स्त्री घर संभाले और पुरुष नहीं अथवा दोनों ही मिलकर समान रूप से जिम्मेदारियों का विभाजन करें। जब दोनों समान रूप से आर्थिक जिम्मेदारी निभा रहे हैं तो क्या हर जिम्मेदारी निभाना भी दोनों का कर्तव्य नहीं है? जिन परिवारों में पति, पत्नी के साथ घर के काम में भी हाथ बटाते हैं, वहां अन्य पुरुष ही नहीं बल्कि कई महिलाएं भी उन पर टीका टिप्पणी करती हैं। ऐसे में चिन्तनीय हो गया है कि पत्नी और पति के बीच जिम्मेदारियों का समान रूप से विभाजन उचित है अथवा अनुचित? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

पति-पत्नी के मध्य ज़िम्मेदारियों का समान रूप से विभाजन
उचित अथवा अनुचित?

जिम्मेदारियों को निभाने का सम्मिलित प्रयास करें

जिस घर में स्त्री और पुरुष दोनों कामकाजी हों उस घर में घर-गृहस्थी से लेकर परिवार की हर छोटी-बड़ी जिम्मेदारी स्त्री-पुरुष दोनों को मिलकर उठानी चाहिए। परिवार को भी समझदारी से नए दौर के नए बदलाव को अपनाना चाहिए। अगर हमें बहू के कामकाज करने में आपत्ति नहीं है तो बेटे को परिवार और गृहस्थी के काम करने पर रोकना-टोकना क्यूँ? बहू भी इंसान है, घर-परिवार और कार्यक्षेत्र की सभी जिम्मेदारियां अकेली उठाएगी तो उसके जीवन की नैया डगमगा जाएगी। पति को खुद आगे बढ़कर कुछ जिम्मेदारियां स्वयं ही संभाल लेनी चाहिए जिससे कि पत्नी को उसका जीवन कोल्हू के बैल के समान ना लगे। माता-पिता को भी बेटे के बचपन से ही परिवार के अन्य आवश्यक कामों में उसका सहयोग लेना चाहिए जिससे आज के एकाकी परिवार के युग में अगर आपके लाडले को किसी अनचाही परिस्थिति से गुजरना पड़ जाए तो उसकी यह दक्षता उसके ही काम आएगी। वैसे गत वर्ष हमने कोविड महामारी के दौरान अच्छा-खासा अनुभव लिया है कि स्त्री हो या पुरुष, बाल हों या वृद्ध सभी को जीवन के आवश्यक कार्य आने ही चाहिए। स्त्री और पुरूष दोनों को अपने समय और योग्यता के अनुसार परिवार के हर कार्य को मिलजुलकर करने की कोशिश करना उचित होगा। इससे पति-पत्नी दोनों ही पारिवारिक जीवन का आनंद ले सकेंगे। पाश्चात्य देशों में तो पति-पत्नी साथ मिलकर ही हर एक जिम्मेदारी को निभाते हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीय दंपत्ति भी बड़े आराम से यह जिम्मेदारी मिलकर निभाते हैं। वैसे भारत के लोगों का नजरिया भी अब धीरे-धीरे बदल रहा है। देखा गया है कि एकाकी और छोटे परिवार होने के कारण आजकल तो माता-पिता भी बचपन से बेटे और बेटी दोनों को शिक्षा के साथ-साथ अन्य कार्यों को करने के लिए उत्साहित करते हैं। आनेवाली पढ़ी-लिखी पीढ़ी निःसंकोच हर कार्य को करने लगी है। यही सोच और समझदारी समय की मांग है और आवश्यकता भी है, जो सुखी दांपत्य जीवन की कुंजी है।

❐ **सौ.सुमिता मूंधड़ा,** मालेगांव (नाशिक)

कहीं शादी समझौता ना बन जाए

विवाह एक ऐसा पवित्र गठबंधन है, जिसमें प्यार, आदर, विश्वास और एक दूसरे के प्रति समर्पण का भाव होता है। हर नवदम्पति, ब्याह के प्रारंभिक दौर में एक दूसरे के अनुकूल होने का प्रयास करता है। जब एक ही माँ की दो संतानें व्यवहार और विचार में मेल नहीं खाती तो दो अजनबी व्यक्तियों का समान आचरण तो असम्भव है ही। अलग अलग होते हुए भी जब दोनों परस्पर प्रेम और आदर से अपने रिश्ते को निभाते हैं, तो यह सम्बन्ध खुशनुमा बना रहता है। छोटे छोटे विषयों पर समस्याएँ हर रिश्ते में आती हैं फिर वो चाहे भाई-बहन हो या माँ-बेटी, तो फिर पति पत्नी तो समान अधिकार रखने वाले, अलग अलग विचारों के व्यक्ति हैं, इनमें अनेक विषयों पर मतभेद होना लाज़मी है। यह स्वीकार्यता दोनों के मन में होना नितांत आवश्यक है। आज के इस दौर में स्त्री और पुरुष दोनों का, घर की आर्थिक और घरेलू, सभी व्यवस्थाओं में बराबर का योगदान है। जब पत्नी, पति के घर और परिवार को अपनाकर पूरी ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ले लेती है, तो ऐसे में पति का भी फ़र्ज़ बनता है कि वो पत्नी को उतना आदर और प्रेम दे, जिसकी वो हक़दार है। बेटा हो या बेटी, हर संतान अपने माता-पिता के लिए अनमोल होती है। पति-पत्नी का अहं रिश्तों में खटास की वजह बन जाता है। सामाजिक प्रावधानों के अनुरूप, लड़कियों को ही यह जिम्मेदारी सौंपी गई है कि वे अपने ससुराल में जाकर, उनके हिसाब से स्वयं को बदल लें। मुझे लगता है हर लड़की को ये स्वीकार्य भी है, पर इंसानियत के नाते उसे भी वो प्यार और आदर अपने पति से चाहिए होता है, जिसके लिये वो अपना घर छोड़कर आयी है। शायद कभी कभी पुरुष, घर की महिलाओं के निस्वार्थ समर्पण को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं या ये तो उनका कर्तव्य है, कहकर टाल देते हैं। अपना सब कुछ परिवार पर न्योछावर कर देने के बाद भी यदि सिर्फ़ आरोप प्रत्यारोप ही उसकी झोली में आये तो फिर निश्चित है कि कमी पत्नी में नहीं, पति की सोच में है। समय के साथ परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है, फिर हम इंसान क्यूँ नहीं अपनी सोच में परिवर्तन को अपनाने का प्रयास करते? एक ज़माना था जब लड़कियों को सिर्फ़ चूल्हे चौके तक सीमित रखा जाता था, अब वक़्त बदल चुका है, इसलिए ज़रूरी है कि हमारी मानसिकता में भी बदलाव आये।

❐ **ऋचा बियानी,** काँटाफोड़ ज़िला देवास

आवश्यकता के अनुसार ही हो उत्तरदायित्वों का विभाजन

कहा गया है कि, समय के अनुसार राग बदल जाता है और तदनुसार आवश्यकता के अनुरूप ही उत्तरदायित्वों का भी विभाजन किया जाना चाहिए। आज जहां एकल परिवारों का वर्चश्व बढ़ता जा रहा है तथा आर्थिक आवश्यकताओं में भी बढ़ोत्तरी होती जा रही है। महानगरों में अथवा छोटे शहरों में भी रहन सहन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर खर्चा बहुत होने लगा है। पति-पत्नी दोनों ही अगर उच्चशिक्षित हैं, और दोनों ही अपनी योग्यता का आर्थिक मूल्यांकन करने के लिए काम करना चाहते हों, अर्थोपार्जन जीविका मात्र के लिए नहीं। चाहे स्वतः के समाधान के लिए भी व्यवसाय, उद्यम, नौकरी आदि करते हों, तो भी जहां तक उत्तरदायित्वों के बंटवारे का प्रश्न है, बंटवारा करना ही चाहिए क्योंकि समय किसी के लिए भी न्यूनाधिक नहीं होता। दिन रात सभी के लिए समान ही होता है। कुछ प्राकृतिक कर्तव्य, उत्तरदायित्व ऐसे होते हैं, जिनका विभाजन असम्भव है, उन्हें छोड़ कर। रही बात कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना। हम स्वतः के बारे में जितना जानते हैं, उतना दूसरा कोई भी नहीं जान सकता। अतः स्वयं निर्णय लें, कि हमारा सम्बन्ध कैसे अधिकाधिक प्रगाढ़ हो ताकि जीवन आनन्दमय हो। अतः उत्तरदायित्वों का समुचित विभाजन समय की आवश्यकता है, समय की मांग है।

❐ **महेश कुमार मारू,**
माहेश्वरी प्रगति मण्डल, मालेगांव

विकृत मनोवृत्ति पर लगाम जरुरी

''स्त्री-पुरूष संसार रथ के समान पहिये'' ऐसी धारणा रखने वाले बुद्धिजीवी समाज में दोनों की जिम्मेदारियों का समान विभाजन होना ही चाहिये। प्रकृति ने नर-नारी निर्मित किये। दोनों बुद्धिमान दोनों कमा रहे हैं, दोनो व्यस्त तो फिर घर के काम में पति ने थोड़ा हाथ बटा दिया तो इतना बखेड़ा क्यों? पुरुष प्रधान संस्कृति का अहंकार घर के काम में ही क्यों आड़े आये? हर क्षेत्र में स्त्री उन्नति के पंख लगाकर उड़ रही है। पुरुषों के कंधे से कंधा लगाकर काम कर रही है फिर भेदभाव क्यों? परिवर्तन संसार का नियम है। प्रगति के सोपान चढ़ने के लिए पुराने ख्यालात बदलें। पत्नी परिवार की धरोहर है, इसलिये टीका टिप्पणी पर ध्यान न देते हुए पत्नी का साथ दें। पुरुष सिर्फ कमायेगा, बैठकर खायेगा, पत्नी घर-बाहर दोनों संभालेगी, ऐसी विकृत मनोवृत्ति पर लगाम देना पड़ेगी। दोनों समान रूप से कर्त्तव्य निभाऐंगे तभी समाज की सर्वांगीण उन्नति होगी। दोनों एक दूजे का हाथ थामे जीवन में आगे बढ़ेंगे तो ही आधुनिक युग का निर्माण होगा।

❐ **छाया राठी,** यवतमाल

हर हाल में बने रहें सहयोगी

पति-पत्नी का रिश्ता दीया और बाती जैसा है। एक दूजे के साथ बिना दोनों ही अपना कार्य नहीं कर सकते है।यही बात हमारे वैवाहिक जीवन में भी लागू होती है। मेरे विचार में पति का पत्नी के कार्यों में सहयोग करना कदापि भी अनुचित नहीं है। जिनकी पत्नी नौकरी या बिजनेस करती है, उनके पति ही जिम्मेदारी में हाथ बटाएं यह धारणा भी गलत है। बल्कि हर पति को अपनी पत्नी के कार्यों में सहयोग करना चाहिए क्योंकि विवाह विश्वास, स्नेह, सहयोग का दूसरा नाम है। सहयोग करने से जहां आपसी रिश्तों में मधुरता और प्रगाढ़ता आती है, वहीं दूसरी ओर हम अपने बच्चों के लिए भी आदर्श बन सकते है। बच्चा वहीं सीखता है जो वो आचरण में देखता है। अपने माता-पिता को कामकाज में सहयोग करते देखेंगे तो बच्चों में भी मदद की भावना प्रबल होगी। परिवार पति-पत्नी दोनों का ही है, तो इस दृष्टि से दोनों को मिलकर ही जिम्मेदारियों का निर्वाह करना चाहिए। लोग क्या कहेंगे, तानाकशी जैसी दकियानूसी बातों की परवाह न करें। ये सब बातें पुरानी हैं, आज के समय सभी की सोच बड़ी हो गई है और होनी भी चाहिए। माता-पिता को भी चाहिए कि वो अपने बेटे को बहू की मदद करने पर ताना न दें बल्कि उसे सहयोग के लिए बढ़ावा दें। जब एक पत्नी प्यार ओर समर्पण से परिवार व बच्चों की देखभाल करती है तो क्या अपने जीवन साथी के सहयोग की हकदार नहीं है? दोनों को अपनी आपसी समझ से कार्यों का विभाजन करना चाहिए जिससे वैवाहिक जीवन की गाड़ी सुचारू रूप से चल सके।

❐ **ज्योति माहेश्वरी,** कोटा (राजस्थान)

मिलकर काम करें बटवारा नहीं

पति-पत्नी के बीच कार्यों का बटवारा अनुचित है। हम देखते हैं पहले के समय में यह परंपरा थी कि पति-पत्नी का कार्य अलग- अलग था क्योंकि उस समय शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था कम थी और हमारी वर्ण व्यवस्था व सामाजिक रीति-रिवाज के तहत कार्यों का एक बटवारा थोड़ा बहुत हो चुका था। फिर भी पुराने समय में हम देखेंगे इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर ने गृहस्थी के साथ-साथ शासन चलाने का कार्य किया और भी कई उदाहरण हैं। हम देखेंगे तो हमें यह प्रतीत होगा कि आज की नारी पढ़ी-लिखी व समझदार है। पति के साथ मिलजुल कर हिल -मिलकर गृहस्थ जीवन को चलाना चाहती है, तो इस वर्तमान युग में पति-पत्नी के बीच कार्यों का बंटवारा कर हमें उनके बीच खाई पैदा नहीं करना चाहिए। आज की नारी पति का साथ हर कार्य में देना चाहती है। उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहती है, तो उन्हें हमें मौका देना चाहिए।

❐ **भीकम गांधी,** राजनांदगांव

पति-पत्नी के मध्य जिम्मेदारियों का समान रूप से विभाजन जरूरी

आज की 21वीं सदी में स्त्री और पुरुष कंधे से कंधा मिलाकर चल चल रहे हैं तो घर की जिम्मेदारी स्त्री अकेले ले, यह तो अनुचित है। वर्तमान में पहले के जैसे संयुक्त परिवार देखने को नहीं मिलते हैं। सभी एकल परिवार रह गए हैं। ऐसी परिस्थिति में पति-पत्नी को समान रूप से एक दूसरे का साथ देना चाहिए। अगर परिवार पर कोई टिप्पणी करता भी है तो एक पति ही अपनी पत्नी को घर में इज्जत दिला सकता है। पत्नी अगर पति का साथ नहीं छोड़ती है तो पति को भी उसके साथ खड़े होना चाहिए। पति-पत्नी को एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। मेरे विचार से आपसी समझ विश्वास के साथ हर जिम्मेदारी का निर्वहन साथ में करना चाहिए। जब स्त्री घर की जिम्मेदारी के साथ घर की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकती है तो पुरुष का भी कर्तव्य बनता है कि स्त्री का मानसिक मनोबल बढ़ाएं।

❐ **ममता मूंदडा,** अमरावती,

साझी जिम्मेदारियाँ समय की माँग

भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी जीवन रथ के वो पहिये हैं जो एक दूसरे के पूरक हैं ना कि एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी। प्राचीन काल में आश्रमों में पति-पत्नी मिलजुल कर कार्य करते थे। माता सीता, देवी द्रोपदी के वनवास के दौरान उनके पतियों ने उनकी हर जिम्मेदारी को साझा किया था। ऐसे उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। पतियों का पत्नियों की जिम्मेदारियों में हाथ बंटाना, टीका टिप्पणी की नहीं, नारी जाति के सम्मान में योगदान और गर्व की बात है। आज के समय में जब दोनों कामकाजी हैं तो यह जरूरी भी है। जिम्मेदारियों को साझा किया जाए तो घर का माहौल भी स्वस्थ रहता है। साझी जिम्मेदारियां आज के समय की जरूरत ही नहीं, बच्चों की परवरिश में भी नितांत आवश्यक है ताकि स्त्री-पुरुष के भेदभाव की संकीर्ण विचारधारा उनमें नहीं पनपे। जिस घर में स्त्री पुरुष के बीच जिम्मेदारियां साझा होती हैं, वहां के बच्चे ज्यादा सकारात्मक व जिम्मेदार होते हैं। समाज के स्वस्थ विकास के लिए यह पूर्णतया उचित है।

❐ **विनीता काबरा,** जयपुर

समय के अनुरूप परिवर्तन जरूरी

समय का परिवर्तन समाज का हर वर्ग देख रहा है। उसमें आर्थिक गतिविधियों में महिलाएं समान रूप से सहयोग करे या नही करें, पर पुरुषों को पूर्व की तुलना में अत्यधिक रूप से घरेलू कार्यों में शामिल कर लिया गया है। इसका बड़ा कारण एक ही शब्द है कि संतान दोनो की, घर दोनो का है, मां बाप दोनो के हैं तो समान ध्यान देना पुरुष का भी दायित्व है। जबकि इसमें महिला के ईश्वर प्रदत्त मातृत्व, करुणा, संवेदना आदि गुणों को भुला दिया गया है। छोटे होते परिवार के कारण या अकेले रहने की मजबूरी के कारण, हर घर-हर परिवार में यह बदलाव आ ही गया है। कुछ प्रतिशत परिवार व्यापार की प्रकृति या संपन्न होने के कारण इसको मैनेज कर लेते है शेष के लिए यह व्यवस्था परेशानी ही है। आवश्कता वर्तमान समय में महिलाओं के समान घरेलू कार्य के लिए पुरुषों को शामिल करने की नही है क्योंकि अब भी समाज में कामकाजी महिला की संख्या पांच प्रतिशत से कम है। कामकाजी महिला पर टिप्पणी का मामला अब नही के बराबर ही है या ऐसे ही परिवारों में हैं, जो घर के बाहर के बदलाव को देखकर अनजान बन रहे है। इसलिए आवश्यकता लड़के-लड़कियों को बचपन से ही घर संचालन के लिए आवश्यक बचत, खर्च में संतुलन, सीमित आय में व्यवस्थित जीवन को सिखाने की है। जिनकी आय बढ़िया है उन्हे समस्या नहीं है परंतु उनकी देखा देखी में मध्यम व निम्न मध्यम वर्ग के खर्च सीमा से अधिक हैं। इस पर कर्ज और किश्त पर चलता जीवन बिना महिला की आर्थिक व्यवहारिक समझ के चल पाना लगभग नामुमकिन है। कर्ज के बोझ में दबे युवा गलत राह की और चलते है, जिसका परिणाम पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है।

❐ **कपिल करवा**
संगरिया, जिला हनुमानगढ़ (राज.)

जिम्मेदारियों का समान रूप से विभाजन सर्वथा उचित

विभाजन को शायद उचित नही माना जाता, पर गृहस्थी की गाड़ी पति पत्नी रूपी दो पहियों से चलती है। अतः उनमे समानता होना जरूरी है। यदि एक मे भी अवरोध हो तो गाड़ी चरमराने लगती है। यहाँ पर विभाजन को एक समायोजन का रूप मानना चाहिए। वर्तमान समय मे स्त्रियां भी आर्थिक क्षेत्र में पुरुषों के साथ खड़ी है। वह भी घर के बाहर शारीरिक एवं मानसिक लड़ाई लड़ रही है। पैसा कमाने में ही वह अपना समय नहीं दे रही है, बल्कि अनेक क्षेत्रों में भी वह अपनी क्षमतानुसार योगदान दे रही है। आज किसी भी कार्य के लिए वह निकलती है, तो घर की व्यवस्था सुचारू रूप से चलाने के लिए पति का सहयोग आवश्यक है। पहले के समय में एक निश्चित दायरे में स्त्री-पुरुष के कार्यों का अलिखित बंटवारा था। जिससे घर एक अनुशासन में बंधा रहता। पर आज ऐसा नही। स्त्रियां जब बाहर निकल रही हैं तो उन पर कार्यों का अतिरिक्त भार हो रहा है। अतः जरूरी है कि पुरुष भी गृह कार्यों में उसकी सहायता करें। एकल परिवार होने से भी घर, परिवार, समाज, बच्चों में अच्छे संस्कारों के लिए भी दोनों का बराबरी से काम करना एवं समय देना दोनों जरूरी है। स्त्रियां भी समझती हैं कुछ कार्य उन्हीं के लिए बने हैं। पर यदि पुरुष स्त्रियों की समस्याओं को समझ कर सहयोग दें, तो वह घर हमेशा खुशियों से भरा रहेगा।

❐ **ज्योति सोनी,** धरमपेठ, नागपुर (महा.)

काम का विभाजन अनुचित

मेरे हिसाब से आपस में काम का विभाजन कभी भी नही होना चाहिये, क्योकि हमेशा परिस्थिति एक जैसी नहीं रहती है। भगवान ना करे आज कोई भी ऐसी परिस्थिति आ जाये कि पत्नी की तबीयत खराब हो जाये या पत्नी को कहीं जाना पड़ जाये तो यदि पति को काम आता होगा तो वो ना तो खुद भूखा रहेगा और ना ही अपने बच्चों व माता-पिता को भूखा रखेगा। आपस में मिलकर काम करने व एक दूसरे के सहयोग से काम व्यवस्थित व समय पर तथा सुचारु रूप से हो जाता है, जिससे घर में खुशियाँ बरकरार रहती हैं, तू-तू मैं मैं की नौबत नहीं आती है। मेरा तो सभी से कहना हैं कि सारे काम दोनों को आने चाहिये। बहुत सी ऐसी मजबूरियाँ आ जाती हैं, जहाँ औरतो को घर चलाना पड़ता हैं। तो पत्नी इस लायक होगी तब ही वह कुछ ऐसा काम करेगी जिससे वो घर को भी संभाल ले और अपने परिवार का भरण पोषण भी सुचारु रुप से कर ले। इसलिये चाहे पति हो या पत्नी दोनो को घर के व बाहर के काम आने चाहिए और आपस में मिलकर काम करने चाहिए।

❐ **भगवती बिहानी,** नाजिरा (आसाम)

मिल बांट कर करें हर काम

कुछ साल पहले तक घर को संभालने की जिम्मेदारी स्त्रियों की थी और बाहर की जिम्मेदारी पुरुष संभालते थे। आजकल लड़कियां भी लड़कों के बराबर पढ़ाई कर लेती हैं। पहले के समय संयुक्त परिवार हुआ करता था, आजकल न्यूक्लियर फैमिली होती हैं। ऐसे में अगर पति-पत्नी आपस में घर की और बाहर की जिम्मेदारी को मिल बांटकर काम करें तो परिवार में प्यार और लगाव बना रहता है। जैसे एक हाथ से ताली कभी नहीं बजती है वैसे ही जिंदगी अकेले नहीं निकलती है। रेलगाड़ी कभी भी एक पटरी पर चलकर तेजी से अपने अंतिम स्टेशन तक नहीं पहुंच सकती वैसे ही जिंदगी में पति पत्नी दो पटरी के जैसे हैं। पति पत्नी एक दूसरे के पूरक है इसलिए जिंदगी एक दूसरे के बिना नहीं निकल सकती है। यदि पति पत्नी हर सुख दुख और सब काम को अपना समझ कर मिल बांट कर करें तो जिंदगी बड़ी ही सरलता से हँसते हुए निकल सकती है।

❐ **निशा माहेश्वरी,** मुंबई

जिम्मेदारियों का समान रूप से विभाजन उचित

दोनों ही हर क्षेत्र में समान रूप से अर्थोपार्जन में लगे हैं। सीमित समय में सारे काम (घर-बाहर) एक के लिये करना असंभव है। ऐसी स्थिति में मिलकर करने से जीवन में चार चाँद लग जाते हैं। उदाहरण स्वरूप रसोईघर का काम, घर की साफ-सफाई, बच्चों की पढ़ाई आदि में अगर दोनों अपने समयानुसार ध्यान देते हैं तो सभी काम अच्छे से भी अच्छा होगा तथा समय भी बचेगा। हाँ, इतना जरुर है कि अगर दोनों में से कोई भी अस्वस्थ हो जाता है तो दोनों में से किसी के भी दिल में यह भावना नहीं आनी चाहिए कि मैं सारे काम क्यों करूँ? अतः दोनों को अपनी जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए काम में लीन होकर आगे बढ़ना चाहिए ताकि कभी भी आपसी कश्मकश का सामना नहीं करना पड़े।

❐ **वीणा थिरानी,** झारसुगुड़ा (ओडीशा)

जिम्मेदारियों का समान विभाजन उचित

पत्नी-पति के मध्य जिम्मेदारियों का समान रूप से विभाजन बिल्कुल उचित है। आज का समय बहुत ही बदल कर एडवांस हो चुका है। आज नारी अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक और धार्मिक हर क्षेत्र में बराबरी से कार्य कर रही है। इसलिए इस कार्य करने वाली गाड़ी के पति-पत्नी रूपी दो पहिए, बराबरी से कार्य करेंगे तो ही गाड़ी सफल रूप से जीवन रूपी लक्ष्य को पार कर पाएगी। पति जीवन रथ का सारथी और संचालक है, तो पत्नी त्रिवेणी संगम है। वह खाना खिलाते समय मां की भूमिका, स्नेह में बहन की भूमिका और सुख-दुख में सहभागिता के साथ अर्धांगिनी बन जाती है और नोट कमाते समय साक्षात लक्ष्मी स्वरूपा सामने मौजूद रहती है। ऐसी पत्नी के साथ हाथ बटाना तो सॉल्यूट मारने बराबर है। इतना तो बनता है। पति और पत्नी के संबंध में प्यार, खुशी और मिठास बढ़ जाती है, जब एक दूसरे के लिए समझदारी और एक दूसरे की जिम्मेदारियां निभाने लगते हैं। पति-पत्नी सामान भागीदार हैं, जबकि उनके पास अलग-अलग जिम्मेदारियां होती हैं। इसलिए पति और पत्नी को परस्पर प्रसन्नतापूर्वक साथ निभाना चाहिए, क्योंकि परिवार से बड़ा कोई धन नहीं, पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं, मां की हाँ से बड़ी कोई भागीदार नहीं, बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक नहीं। इसलिए परिवार से बड़ा कोई जीवन नहीं। अतः काम साथ-साथ करते-करते साथ निभा लो।

❐ **पूजा काकाणी,** इंदौर (म.प्र)

आप भी दे सकते है मत-सम्मत के लिये विषय

''**मत-सम्मत**'' सामाजिक समस्याओं पर चिंतन का ''**श्री माहेश्वरी टाईम्स**'' का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। इसके द्वारा न केवल सम्बंधित विषय पर प्रबुद्ध पाठकों के विचार व सुझाव ही प्राप्त होते हैं, अपितु यह पाठकों को विचार-विमर्श का ''**एक मंच**'' भी प्रदान करता है। अतः पाठकों से निवेदन है कि यदि मत-सम्मत में विचारों का पक्ष-विपक्ष रखने योग्य आपके पास कोई सामाजिक विषय हो तो हमें अवश्य प्रेषित करें। इस विषय पर भी विचार आमंत्रित होंगे। विषय का अंतिम चयन सम्पादक मंडल का होगा, जो सर्वमान्य होगा।

सम्पादक

दोनों निभायें समान ज़िम्मेदारी

हमारी व्यक्तिगत राय यह है पति-पत्नी ज़िम्मेदारी के मापदंड में एक सिक्के के 2 पहलू है। दोनो बराबर रूप से सुख-दुःख के साथी हैं। ज़िम्मेदारी समान रूप से अपनी हिस्सेदारी में लेंगे तभी एक पति-पत्नी का जीवन सकुशल द्रुतगति के साथ आगे बढ़ सकता है। ज़िम्मेदारी सामान रूप से बाटकर आपस में समझ लेने से बेस्ट पति-पत्नी का सिक्का सदैव आपकी जोड़ी पर अटूट बंधन, सामंजस्य, प्यार के साथ चिपका रहेगा। जब दोनों समान रूप से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे, तो किसी पर भी अनावश्यक बोझ नहीं आऐगा। इससे परस्पर एक दूसरे के प्रति सम्मान व प्रेम में वृद्धि होगी। यह वर्तमान दौर की अनिवार्यता है। अतः पुरानी सोच में समयानुसार परिवर्तन जरुरी है।

❐ **राजेश कोठारी,** सूरत

कार्य का बटवारा हमेशा से रहा है

यह प्रथा तो हमारे यहां प्राचीन काल से ही चली आ रही थी। पहले समय में पुरुष कमाई के लिए घर से बाहर जाता था और महिलाएं घर के काम संभालती थी, तो एक संतुलन बना रहता था। पर आज महंगाई के दौर में पति-पत्नी दोनों का अर्थोपार्जन करना जब जरूरी हो गया है। ऐसे में घर की महिला भी पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर धन अर्जन करने में उसकी मदद कर रही है तो निश्चित रूप से पुरुष को भी गृह कार्य में महिला की मदद करनी चाहिए। लेकिन आज भी हमारे समाज की मानसिकता पूरी तरह से बदली नहीं है। आज भी बहुत से पति, पत्नी के जॉब से तो खुश है किंतु वो स्वयं घर के काम करने से बचना चाहते हैं। तो ऐसे में कितनी बार तो महिलाओं के ऊपर ज्यादा जिम्मेदारी आ जाती हैं और उन्हें दोहरी भूमिका निभानी पड़ती हैं। ऐसी समस्याएं एकल परिवारों में ज्यादा आती हैं। तो यहां पर पति की भी पूरी जिम्मेदारी बनती है कि वह घर के कार्यों में, बच्चों को संभालने में, अपनी पत्नी का पूरी तरह से सहयोग करें, तभी जीवन में संतुलन बना रह सकता है, नहीं तो घर बिखरते देर नहीं लगती है। आपसी सहयोग एवं समझदारी से काम लेना चाहिए, जो जिस काम में ज्यादा निपुण हो उसे उस कार्य की जिम्मेदारी ले लेनी चाहिए। ऐसा नहीं कि आप पुरुष हैं तो आप किचन में नहीं जा सकते या बच्चे नहीं संभाल सकते। और आप महिला हैं तो आप ऑनलाइन बिल नहीं भर सकती। काम को काम की तरह से देखें। यह मेरा काम है, यह उसका काम ऐसा भेदभाव ना करें बल्कि घर और बाहर के सारे काम मिलजुल करें। कामकाजी जोड़ों को कभी भी अपने कमाई या कार्य के बीच में अहम नहीं लाना चाहिए। एक आदर्श पति-पत्नी किसी काम का बोझ अपने साथी पर नहीं डालते बल्कि एक दूसरे के हर काम में सहयोग करते हुए जीवन में संतुलन बनाकर रखते हैं।

❐ **उषा भट्टड़,** उज्जैन

इत्र, मित्र, चित्र और चरित्र किसी की पहचान के मोहताज नहीं। ये चारो अपना परिचय स्वयं देते हैं।

पिछले अंक से क्रमशः

हरिप्रकाश राठी
जोधपुर
94141-32483

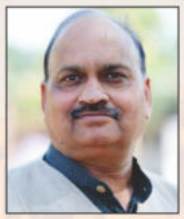

जद जाणूंगी नेह

रूप! बताओ मैं आपके गांव में किस तरह प्रवेश करूं? गीत गाते लंगों के साथ आगे बढ़ूं अथवा नृत्य करती, लचकती नर्तकियों के साथ? ऊंची मूंछों एवं घनी दाढी वाले बारातियों को आगे रखूं अथवा अपनी अदाओं से लुभाती पतुराइनों को? सबसे आगे हाथी, नगाड़ची रखें अथवा रसाले घुड़सवार? बाजे वाले आगे हो अथवा सजी-धजी बैलगाड़ी में पचरंगी पगड़ी पहने नौपत-शहनाई वाले? रूप! हमारे पास हर प्रकार का बंदोबस्त है, बस आपके प्रत्युत्तर का इंतजार है कि मैं आपको वरने, आपके गांव के मुख्यद्वार पर कैसे प्रवेश करूं? मैंने सुना है आपके गांव का मुख्यद्वार बहुत ऊंचा है जिसके मध्य में कुशल कारीगरों द्वारा गढ़ी गणपति की एवं उसके चारों ओर विभिन्न प्रकार के नृत्य करती देवांगनाओं की मनभावन मूर्तियां लगी हैं। मेरी खास इच्छा है वीरपुर में मेरा प्रवेश आपका मनचीता, ऐतिहासिक हो।

पुनः तंबू में जाकर आपकी स्मृतियों में ही खोना है। यह आंखें अब आपको देखे बिना सोने से इन्कार करती हैं।

प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा में
अभिमन्युसिंह

अभिमन्यु ने पत्र पर गुलाब की कुछ पत्तियां रखी, उसे समेटा एवं बाहर आकर चुपके से रणवीर को दे दिया। रणवीर घोड़ी पर चढ़ा, एड देते ही घोड़ी ऐसे दौड़ी मानो वह श्यामगढ़ की युवरानी को देखने कुंवर से अधिक आतुर हो। अभिमन्यु देर तक वहीं खड़ा उड़ते गुबारों को देखता रहा। कुछ देर पश्चात टापों की आवाज बंद हो गई एवं घोड़ी अंधेरे में विलीन हो गई तो अभिमन्यु ने गर्दन ऊंची कर पुनः तारों जड़े आकाश को देखा, फिर कुछ क्षण पश्चात् भीतर चला आया।

दूसरे दिन सुबह सूर्योदय के पूर्व बारात पूरे लवाजमे के साथ आगे बढ रही थी। बाराती कुछ पैदल तो कुछ बैलगाड़ियों में बैठे चुहल कर रहे थे। बैलगाड़ियों में नागौरी बैल जुते थे जिनके सींगों पर चित्रकारी का सुंदर कार्य था। हर बैलगाड़ी के आगे पताका लगी थी एवं चारों ओर मोटा लाल कपड़ा बांध कर छाया का बंदोबस्त किया गया था। पूरी बारात में एक भी औरत नहीं थी। राह में डाकू, धाड़ायती लूट न ले अतः तब औरतों को बारात में ले जाने का प्रचलन नहीं था। दो युवकों के हाथों में खुकरी लगी बंदूके थी एवं वे बारात के ठीक बीच में चल रहे थे। सभी बाराती सुबह पांच बजे उठकर आनन-फानन तैयार हो जाते। सूर्योदय तक तो वे तीन कोस नाप लेते। सवेरे का कलेवा कर दो कोस और तथा इतनी ही ढाई कोसी यात्रा शाम तक कर लेते।

तीसरे दिन भी यही आलम था। बारात सामान्य गति से लगातार आगे बढ रही थी। जेठ का सूरज अंगारे बरसाता पर बारात का उत्साह उसके तेज से भी दूना था। क्षेत्र में गत दो वर्ष से लगातार अकाल था। नदी, तालाब, पोखर सब सूखे पड़े थे। रास्ते में यहां-वहां खेजड़ी के पेड़ सर झुकाये ऐसे खड़े थे जैसे वे भी गांव वालों की तरह गर्दन झुकाये बारात की अगवानी कर रहे हों। कभी-कभी रास्ते में फूस की नुकीली झोपड़ियां भी दिख जाती। इन्हीं के इर्द-गिर्द झाड़ियों के आसपास कभी खरगोश तो कभी मोर आदि पक्षी दिख जाते। एक बार दो चिंकारे चौकड़ी भरते हुए बारात के आगे से निकल गए। इसके कुछ समय पश्चात् एक छोटी ढाणी दिखाई दी जहां हिरणों के झुण्ड भी दिखाई दिए। एक बाराती ने बताया कि यहां के लोग खेजड़ी एवं वन्यजीवों की पूजा करते हैं एवं इनकी स्त्रियां जरूरत पड़े तो हिरन के बच्चों तक को दूध पिला देती हैं। रास्ते में एक जगह पीला पीवणा सांप भी दिखा जिसे किसी बाराती ने लाठी से उठाकर दूर फेंक दिया। एक-दो जगह ठूंठ हुए पेड़ों पर कोयल कूजती हुई भी नजर आई। कुछ गांवों में पक्की मेडियां तो एकाध जगह ऊंची झरोखेदार हवेलियां भी दिखी। एक बार अंधड़-तूफान भी आता दिखा पर सौभाग्य से बारात के आधा कोस दांये से निकल गया। एक बाराती ने बताया कि इसे 'बतूलिया' कहते हैं, यह मिट्टी के वर्तुल बनाकर आगे बढ़ता है। हमारा सौभाग्य है कि हम बच गये वरना बारात पुनः समेटना मुश्किल हो जाता।

मरूभूमि का रज कण-कण शौर्य एवं गौरव-गाथाओं से भरा पड़ा है। विश्वास नहीं होता जहां कुछ नहीं उगता ऐसी रेतीली जमीन शूरवीरों की पैदाइश के लिए इतनी उपजाऊ कैसे बन गई? यहां की संस्कृति भी कितनी महान एवं विविधता लिये हुए है। चप्पा-चप्पा शौर्य, बलिदान से ओत-प्रोत है। यह भूमि शूरवीरों की जननी है। ठाकुर कतई नहीं चाहते थे कि जेठ में कुंवर का ब्याह हो, पर राज ज्योतिषी ने जब कहा आगे पूरे डेढ़ वर्ष मुहूर्त नहीं है तो ठाकुर को झुकना पड़ा।

तीसरी रात तक रणवीर नहीं लौटा तो कुंवर बेचैन हो गया। वीरपुर अब मात्र पांच कोस पर था। रात अभिमन्यु के मन में आशंका तैरने लगी। रणवीर पहुंचा या नहीं? यह भी हो सकता है सूखे के चलते घोड़ी को दाना-पानी नहीं मिला हो, कहीं रूप मुझसे नाराज तो नहीं हो गई आदि-आदि अनेक बातें कुंवर के विचार-व्योम पर वैसे ही उड़ने लगी जैसे गढ़ में दाना डालने पर अनेक पक्षी आकाश में उड़ने लगते थे। तभी घोड़ी की टापों की आवाज सुनाई दी। अभिमन्यु के चेहरे पर हर्ष की रेखा फैल गई। रणवीर उसके तंबू की ओर बढ़ रहा था। पास आकर वह घोड़ी से उतरा, कुंवर को पत्र दिया तत्पश्चात घोड़ी को लगाम से खींचकर दूर चला गया।

कुंवर ने फुर्ती से तंबू के भीतर आकर पत्र खोला एवं पढ़कर दंग रह गया। इस बार पत्र में न गुलाब के पत्ते थे न केसर के छींटे। कुंवर को आशंका हुई, उसने पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया –

प्रिय,
खम्माघणी हुकुम!

आपका पत्र मिलना मेरे लिये ठीक वैसा ही था जैसे किसी तड़पती मछली को पानी मिल जाए। पत्र मिलते ही मैं गढ़ की ओर दौड़ी एवं कमरे में आकर पलंग पर लेट गई। पत्र पढकर तो मुझे नवों निधियां मिल गई। किसी भी स्त्री को पति रूप में आप जैसा प्रेमिल, दृढ़ पुरुष मिलना उसका परम सौभाग्य है। आपके द्वारा पत्र के साथ भेजी गई गुलाब की पत्तियों को मैं बहुत देर तक सहलाती रही। इन्हें छूते हुए लगा जैसे आप मुझे छू रहे हैं। मैं किस तरह बयान करूं कि मैं आपके दर्शनों हेतु आपसे ज्यादा विकल हूं।

प्रिय! मेरी मां ने मुझे अनेक बार समझाया है कि पति से मन की हर बात, जीवन की हर समस्या बांटनी चाहिए और मैं स्वयं ऐसा मानती हूं कि यह बात सौ टका सच है। हुकुम! इन दिनों गढ़-गांव में एक समस्या आ गई है जिसके चलते मेरे पिता एवं तमाम गांव वाले त्रस्त हैं। गांव भर में इस समस्या के समाधान हेतु प्रयास चल रहे हैं पर समस्या सुलझ नहीं रही है।

आप जानते हैं मेरे गांव एवं आसपास के क्षेत्रों में गत दो वर्ष से भयानक अकाल है। अकाल इतना भीषण है कि सारे पोखर-तालाब सूख गए हैं एवं पानी कुओं में पैंदे तक पहुंच गया है। धरती झुलस रही है। पेड़ फकीरों एवं वैरागियों की तरह सूखकर ठूंठ हो गए हैं, पशुओं के पिंजर निकल आए हैं।

मेरे पिता ने आप सबकी आवभगत करने, ठहरने, मेहमानवाजी का पूरा बंदोबस्त किया है पर पानी इतना कम है कि वे सोच में पड़ गए हैं । पानी की कमी के चलते अन्य सारी व्यवस्था व्यर्थ प्रतीत होती है। उन्हें दिन-रात इसी बात की चिन्ता सालती है कि समुचित पानी के अभाव में बारातियों की आवभगत कैसे होगी? हम आपकी मनुहार कैसे कर पाएंगे? उन्होंने आसपास के गांवों से पानी की व्यवस्था का प्रयास किया पर वहां स्थितियां हमसे बदतर है। मेरे पिता यही सोचते अनेक बार सर पकड़कर बैठ जाते हैं। कामदारों, कारिन्दों एवं किसानों के बुझे चेहरे देखकर उनकी चिंता और बढ़ जाती है।

हुकुम! गांव के ठाकुर होने के नाते आप-हम गांव के राजा हैं। प्रजा दुःखी हो, तड़प रही हो तो राजा चैन से कैसे बैठ सकता है? बारात आने में अब मात्र दो दिन रह गए हैं लेकिन तमाम प्रयासों के बावजूद पानी का बन्दोबस्त नहीं हो पाया है। इसी के चलते हम सभी उदास हैं। अगर गांव वालों को डर दिखाकर पानी की व्यवस्था की गई तो लोग प्यासे मर जाएंगे। मेरे पिता प्रजारंजक हैं, वे ऐसा करने की सोच भी नहीं सकते।

हुकुम! इसी समस्या के चलते अत्यन्त विकट अवस्था में मैंने अपना मन आपसे बांटा है। जहां आत्मिक अंतरगंता हो, वहां हृदय के रहस्य स्वतः खुल जाते हैं। अब आप ही हमारी लाज के खेवनहार हैं। हुकुम! रूप आज आपसे एक वचन चाहती है। मुझे उम्मीद है आप अपने प्रेम के खातिर, अपनी रूप की खातिर इसे अवश्य पूरा करेंगे। मैं जानती हूं आप कौल के पक्के एवं बात के धनी हैं। मैं जो कुछ कहना चाहती हूं उसे नीचे कविता में लिख रही हूं , निश्चय ही इसे पढ़कर आप मेरा अभिप्राय समझ जाएंगे। मेरा विनम्र निवेदन है कि आप मेरे गांव में इसी तरह प्रवेश करें। आप अगर इस तरह पधारें तो मेरे गांव के बुझे चिराग घी के चिराग बनकर जल उठेंगे-

भीगी पाग पधारज्यो, जद जाणूंगी नेह,
सबने सुख बरसावता, सागै लाज्यो मेह,
यूँ आवोगे साजणा, जब तुम मेरे गाँव,
तो रक्खूंगी आपको, मैं पलकों की छांव।।
पुनः खम्माघणी हुकुम!

आपकी
रूप

कविता समाप्त कर रूप ने उसमें गांव की मिट्टी के कुछ कण, सूखी घास एवं दो सूखे पत्ते रखे, उन्हें होठों से चूमा एवं पत्र को एक थैली में बंदकर रणवीर को दे दिया।

अभिमन्यु ने पत्र पढा तो उसका चेहरा गौरव-भाव से दीप्त हो उठा, मुख पर पीढ़ियों की आन उतर आई। ओह! रूप कितनी महान है, कितनी प्रजावत्सल! इतनी नाज़-नखरों में पली होने के बावजूद अंतस कपास की तरह उज्ज्वल है। प्रेम के इन मादक क्षणों में भी वह अपने पिता, गांव एवं गांववालों की व्यथा नहीं भूली। ऐसी महान स्त्री मेरे घर आकर समूचे गांव को ही नहीं पीढ़ियों को धन्य कर देगी।

बारात जब गांव से आधा कोस दूर थी तो ठाकुर ने बारात रोककर उसे व्यवस्थित किया। सांझ होने में दो घण्टे शेष थे। ठीक उसी समय दूल्हा अभिमन्यु घोड़े को तेज दौड़ाकर बारात के आगे आया एवं सबसे आगे चलते नगाड़ची को बारात रोकने का इशारा किया। बारात रुकते ही उसने एक पाट मंगवाया, उसे आगे रखा एवं धम्म से उस पर बैठ गया। बारात से किंचित् नजर चुराकर ठाकुर दौड़े-दौड़े आए, क्या हुआ बेटा? बारात क्यों रोक दी? क्षणभर में ठाकुर के मस्तिष्क में सैंकड़ों आशंकाएँ कौंध गई।

'दाता! अब बारात आगे नहीं जायेगी और मैं तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगा जब तक आसमान से बारिश न हो जाये।' अडिग अभिमन्यु ने अपना निर्णय पिता को सुना दिया।

'यह तू कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहा है? आज आधी रात तुम्हारे फेरों का मुहूर्त है, क्या बिना मुहूर्त ब्याह करेगा? कुल की आन का तो ख्याल कर।'' कहते-कहते आगत अनहोनी को भांपकर ठाकुर गुस्से से कांपने लगे। अब तक अन्य बाराती भी वहां आ चुके थे।

अभिमन्यु चुप रहा।

कुछ पल पश्चात् उसने वहीं पाट पर बैठे ध्यानस्थ योगी की तरह आंखें मूंद ली।

बारात में कोहराम मच गया।

सूरज डूबा, मुहूर्त बीत गया, रात ढलती रही पर वह टस से मस नहीं हुआ।

दूसरा दिन पौना बीता तो आकाश के देवता भी सहम गए। वे सभी इन्द्र के पास गये एवं उनसे गुहार की कि यदि आज पानी नहीं बरसा तो संसार में प्रेम की महत्ता मिट जाएगी। भला ऐसे शासक, वचनभट्ट कहां मिलेंगे जो स्वयं से अधिक लोकहित के लिए जीते हों? जिस रूप ने गांव एवं सर्वहारा के लिये ऐसा अनूठा ज़ज़्बा दिखाया, आप क्या उसे पतिविहीन करेंगे? आप तो सबके प्राणदाता हैं, आप कुंवर के प्राण कैसे ले सकते हैं? कुंवर तो मानने वाला नहीं। वह प्राण छोड़ सकता है, वचन नहीं।

प्रेम की दिव्यता के आगे आज इन्द्र भी हार गए। उनकी आंखों से आंसुओं की अजस्र धारा बह निकली। ओह! जिस मिट्टी के लोग इतने ऊंचे, इतने देशभक्त हो, उस देश में भी क्या कभी मेरा कोप ठहर सकता है? कदापि नहीं!

देखते-देखते आसमान काले बादलों से भर गया। तेज बिजलियां चमकने लगी। बादल गरजने लगे। यकायक टप-टप बड़ी बूंदें बरसने लगी। ठाकुर ही नहीं पूरे बाराती झूम उठे। यह किसी चमत्कार से कम न था।

तभी एक दिव्य शक्ति से स्फूर्त अभिमन्यु पाट से उठा, धीरे-धीरे चलकर घोड़े तक आया, रकाब में पांव डालकर घोड़े पर बैठा और बारात को आगे बढने का इशारा किया। बारात तेज गति से बढ़ने लगी।

बाराती वीरपुर पहुंचे तब तक बारिश ने जोर पकड़ लिया।

दूल्हा जब मुख्यद्वार पहुंचा, सभी बाराती ऊपर से नीचे तक भीगे हुए थे। अभिमन्यु की पगड़ी से पानी चू रहा था।

आज सारा गांव नाच रहा था। सबके चेहरे उल्लास से झूम रहे थे। मुख्यद्वार के चारों ओर नाचती नृत्यांगनाएं आज जीवंत हो उठी थी। ऊपर विराजे गणपति बप्पा हर्षविभोर बारात को तकने लगे थे।

घोड़े पर बैठे अभिमन्यु ने वहीं म्यान से तलवार निकाल कर मुख्यद्वार से लटकता तोरण छुआ तो रूप ने झरोखे से फूल बरसाए। उसके मुंह एवं कपड़ों पर भी तेज बौछारें आ रही थी। ख़ुशी का पारावर न था। गांव के उल्लास की प्रतिध्वनि रूप के हृदय में आ बसी थी। हृदय में प्रेम एवं आनन्द समाता न था। तभी तलवार हवा में लहरा कर अभिमन्यु ने रूप को देखा मानो कह रहा हो अब तो मानोगी श्यामगढ़ वाले बात के धनी होते हैं।

रूप के हृदय का उल्लास एवं नेह आंखों में चढ़ गया।

मुस्कुराती रूप ने पलकें झुकाकर उसकी बात को पुष्ट किया।

वह अब भी झरोखों से फूल बरसा रही थी।

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

एक 'आभार' और शेष निर्भार!

खम्मा घणी सा हुकुम आज आपा बात कर रिया हैं आभार, धन्यवाद देवण पर। आजकल आपाणे सबरे जीवन में धन्यवाद केवणो एक आदत में शामिल हूँ ग्यो हैं। हुकुम धन्यवाद, आभार, कृतज्ञता एड़ा खूबसूरत शब्द है जिना अर्थ बहुत गहरा है और इण शब्दों रो अनुभव आपा रोजमर्रा रे जीवन में भी करां।

हुक्म इण शब्दों सूं जुड़ी भावनाओं ने जणे आपा जीवन मे उतारा.. आपणे कार्यशैली में उतारा.. तो इण शब्दां रो उपयोग न सिर्फ आपाणे व्यक्तित्व ने निखारें बल्कि दूसरों ने भी खुशी प्रदान करें।

हुकुम आभार एक एड़ी अभिव्यक्ति है जो जरूरत रे वक्त और सहायता मिलण रे बाद लोगों रे बीच मे पैदा हुवे और प्रेम री कड़ी ने मजबूत करें। जीवन रे हर मोड़ पर मदद लेवणी भी पड़ें और देवणी भी पड़ें।

हुकुम आभार' अपने आपमें एक छोटो सो शब्द है, पर असर में बहुत गहराई छूपयोड़ी है यो एक एडों भाव है जो व्यक्त करण वाळें री विनम्रता ने दर्शावे। आभार-निर्मल हृदय री ऐड़ी अभिव्यक्ति है जो सुणन वाळें अर्थात् आभार ग्रहण करण वाळें ने भीतर तक गद्गद् कर देवे। जो लोग आपाणे हितार्थ कोई कर्म करें, विने प्रति आभार व्यक्त करणों आपाणों नैतिक दायित्व है।

दुनियां भर में कई मनोचिकित्सक टीम इण बात पर सर्च करने या बात साबित करी की जो लोग सबरी मदद करें और जो लोग सबने आभार व्यक्त करें दोनों ने ही नींद अच्छी आवे सकारात्मक सोच रे साथे खुशी रो स्तर भी अधिक तनाव रो स्तर कम मिले और एड़ा लोग जो कुंठित मानसिकता रा हुवे किन्ही जरूरतमंद रो काम करण में आगे नहीं आवे और कोई कार्य कर दे आभार रा भाव नहीं हुवे वे अवसाद तनाव सूं ग्रसित रहवै।

आप दिल सूं 'अपनों' ने आभार व्यक्त करों पछे देखों, विनी सुगंध किकर आपके रिश्तों ने अद्भुत स्नेह सूं सींचे और आपरों जीवन कितो आनंद पूर्ण हूँ जावे।

आपरे दुःख और तनाव रा बोझ भी हल्का हूँ जावे क्योंकि अपनों रो बल आपरे कंधों पर आ जावे। बस एक 'आभार' और शेष निर्भार!

मुलाहिजा फ़रमाइये

ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- जब तक मन में कैकई ना हो...
  कोई भी मंथरा कान नही भर सकती...
- गिरगिट खतरा देखकर रंग बदलता है...
  ओर इंसान मौका देखकर
- कद बढ़ा नहीं करते एड़ियाँ उठाने से...
  उचाइयां तो मिलती है सिर्फ सर झुकाने से...
- मैं उसी का जिम्मेदार हु जो मैंने कहा है...
  उसका नही जो तुमने समझा है...
- जब दोस्त ही शामिल हो दुश्मनों की चाल में...
  तब शेर भी फस जाता है मकड़ियों के जाल में..
- मंज़िले हमारे करीब से गुजरती गई जनाब...
  ओर हम ओरो को रास्ता दिखाने में रह गए

कार्टून कौतुक

श्री हरिकिशनजी बजाज मेमोरियल

संस्था पंजियन क्रं.महा /259/2008 दि.17.03.2008
सार्वजनिक विश्वस्त संस्था पंजियन क्रं. एफ.13700 दि. 24.09.2008

माहेश्वरी शिक्षण विकास संस्था, नांदेड

कार्यालय : मुंदडा पॅथॉलॉजी लॅबोरेटरी, दिलीपसिंघ कॉलनी,वजिराबाद, नांदेड - 431 601.

Registration Details

Society : MAHA/259/2008 NANDED Dt. 17.03.2008	Trust :F-13700 Dt. 24.09.2008
12A : AAITS6101NE20219 Dt. 31.08.2021	CSR : CSR 00025589 Dt. 24.03.2022
80G : AAITS6101NF20217 Dt. 24.09.2021	Darpan UID : MH/2022/0310949

समाज के मेधावी छात्रों को पुरस्कार

एवं

जरुरतमंद छात्रोंको आर्थिक सहयोग द्वारा संपूर्ण शैक्षणिक उत्थान के लिये कटिबद्ध संस्था

बँक अकाऊंट डिटेलस्

Name : Shri Harikishanji Bajaj Memorial Maheshwari Shikshan Vikas Sanstha.
Bank : ICICI Bank | Branch : G.G.Road Nanded.
A/C. No. : 646405004079 | IFSC : ICIC0006464

समाज के उदारमना भामाशाहों से विनम्र निवेदन

समाज के युवाओं में शिक्षा की बढती रुचि और प्रखर प्रज्ञा के होते हुये भी आर्थिक मर्यादाओं के कारण इन युवाओं को शिक्षा में आ रही बाधाओंको दूर करने हेतु वर्ष २००८ मे नांदेड के माहेश्वरी समाज द्वारा श्री.ह.ब.मे. माहेश्वरी शिक्षण विकास संस्था की स्थापना की गयी। स्थापना के समय से ही संस्था प्राप्त धनराशी के ब्याज के माध्यमसे आर्थिक सहयोग कर रही है। किंतु घटते ब्याज और बढती मांग के कारण यथोचित आर्थिक सहयोग करने में कठिनाईयाँ आ रही है।

अतः समाज के भामाशाहों से विनम्र निवेदन है कि वे अपनी संस्थायें, कंपनियों अथवा स्वयं की ओरसे अधिक से आधिक धनराशी प्रदान कर इस ज्ञानयज्ञ में सहयोग की आहुति समर्पित करें।

CRAYONS ADVT.9673288899

विनित

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष	सहसचिव
गोपाल लाल लोया	ओमप्रकाश इन्नाणी	प्रा.किशनप्रसाद दरक	सी.ए.प्रकाशचंद्र गट्टाणी	रमेश डागा
9890616433	9422171273	9422189298	9422187101	9422172499

कार्यकारी मंडल सदस्य

डॉ. राजेंद्र मुंदडा | हरिदास भट्टड | रामप्रसाद मुंदडा | संजयकुमार सारडा | डॉ. लक्ष्मीकांत बजाज | दुर्गाप्रसाद तोष्णीवाल

स्विकृत सदस्य

दिपक बजाज | कैलाश राठी | जगदिश बियाणी | डॉ. शोभा तोष्णीवाल | प्रा दिपा बियाणी

खुश रहें - खुश रखें

केंद्र में परमात्मा - परिधि पर संसार हो

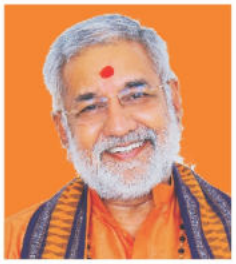

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

डिप्रेशन एक ऐसी स्थिति है जो हर इंसान के जीवन में कभी न कभी दस्तक दे देती है। कई लोग इसकी आहट सुनकर ही इससे बचाव का रास्ता अपना लेते हैं और कई कुछ इसमें इतनी गहराई तक उतर जाते हैं कि बाहर आने का कोई रास्ता उन्हें नजर नहीं आता। आखिर में परेशानियों से जुझते हुए आत्मघात जैसा रास्ता अपना लेते हैं। आए दिन कई ऐसी खबरें सुनने-पढ़ने को मिलती रहती है जब आर्थिक, व्यावसायिक और पारिवारिक परिस्थितियों से तंग आकर कई लोग डिप्रेशन में आ गए और आत्महत्या तक कर ली।

जिंदगी आसान नहीं होती। उसमें सदा समुन्दर की लहरों की तरह उथल-पुथल चलती रहती है। जीवन में शांति और अशांति इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे जीवन के केंद्र में क्या है? यदि जीवन के केंद्र में संसार और परिधि में परमात्मा है तो आप अशांत रहेंगे।

डिप्रेशन क्या है...? यह कोई बीमारी नहीं, एक स्थिति है चिड़चिड़ापन, उदासी, बैचेनी, अकेलापन इन सबको मिलाकर डिप्रेशन कह सकते हैं। वैसे तो डिप्रेशन एक ग्लोबल प्रॉब्लम है। दुनियाभर में एक बड़ी संख्या में लोग इससे ग्रसित है। इसका एक बड़ा कारण आर्थिक अस्थिरता भी है। बात देश की हो या घर की, जब आर्थिक मंदी का दौर आता है तो बेरोजगारी और दिवालिया होने का सीधा परिणाम होता है डिप्रेशन। फिर उसके परिणाम घरेलू हिंसा, अपराध, आतंक और आत्महत्या जैसी बुराइयों के रूप में सामने आते हैं। आज अच्छे-अच्छे समझदार लोग भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं।

डिप्रेशन की इस बीमारी ने लोगों के दिमाग के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है। अनियंत्रित मन भी इसका बड़ा कारण है। हमारा मन नेगेटिविटी का केंद्र होता है। इसकी रुचि गलत कामों में ही होती है। इसलिए अब मन पर अतिरिक्त काम करना होगा। मन स्थिर-नियंत्रित होता है योग से। इसलिए अब योग हमारी जीवनचर्या का हिस्सा होना चाहिए।

एक बात याद रखना होगी कि हम मनुष्य तीन चीजों से मिलकर बने हैं- शरीर, मन और आत्मा। जिसे शांति चाहिए उसे शरीर से होकर मन से गुजरते हुए आत्मा तक पहुंचना पड़ेगा। लेकिन, चूंकि हम शरीर पर टिके हुए हैं, इसलिए आत्मा तक की यह यात्रा करते ही नहीं हैं।

इस विषय को थोड़ा गहराई से समझने की जरूरत है, और इसके लिए भागवत के प्रसंग में प्रवेश करना पड़ेगा...।

भागवत ग्रन्थ क्यों लिखा गया..? इसके लेखक वेद व्यास बहु अच्छे संपादक और घटनाओं को जोड़कर प्रस्तुत करने में दक्ष थे। ब्रह्माजी ने अपना ज्ञान नारदजी को और नारदजी ने व्यासजी को दिया था। व्यासजी ने उस पूरे ज्ञान को चार वेदों में बांटा और अठारह पुराणों की रचना की। व्यासजी महाभारत काल में समकालीन थे। उन्होंने प्रत्यक्ष घटनाएं देखी और लिखीं।

महाभारत लिखने के बाद एक दिन व्यासजी अपने आश्रम में बैठे थे। नारद वहां से गुजरे और देखा तो महसूस किया और व्यासजी थोड़े उदास, थके हुए हैं। नारदजी ने पूछा- क्या बात है, इतना बड़ा-महान ग्रंथ लिखने के बाद आप इस तरह तनाव में दिख रहे हैं? व्यासजी ने कहा- यही मैं आपसे पूछना चाहता हूँ। मैंने सृजन किया है। रचनात्मकता मनुष्य को निश्चिंत बनाती है, प्रसन्न करती है, लेकिन महाभारत जैसी रचना करने के बाद मैं उदास हो गयाा हूँ। भीतर से बैचेन हूँ और अपने आपको अवसाद में डूबा महसूस कर रहा हूँ। ऐसा मेरे साथ क्यों हुआ...?

नारद ने कहा- आपके साथ ऐसा होना था, क्योंकि जो सृजन आपने किया है, जो क्रिया आपकी है, उसके केंद्र में मनुष्य के झगड़े हैं, छल है, कपट है, युद्ध है। आपकी कथा के नायक पांडव हैं, खलनायक कौरव है। ऐसे में आप कभी शांत नहीं हो सकते। शांति चाहे तो केंद्र में परमात्मा को रखिये और फिर कोई सृजन कीजिए। नारद मुनि की बात व्यासजी को जम गई और फिर उन्होंने कृष्ण को नायक बनाकर भागवत की रचना की। नारद उनको एक बात समझा गये थे कि किसी भी गतिविधि के केंद्र में यदि परमात्मा होगा तो परिणाम में शांति मिलेगी। जिस कार्य का केंद्र केवल संसार होगा, नतीजे में अशांति ही पाओगे।

बस, यही बात आज हमें भी भागवत से सीखनी है। हमारी गतिविधियां सतत चलेंगी। तो प्रयास ऐसा करें कि जीवन की हर गतिविधि के केंद्र में परमात्मा हो, परिधि पर संसार हो। फिर शायद आप अशांत नहीं होंगे। मैं माहेश्वरी समाज के ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जिन्होंने जीवन में यह प्रयोग किया है- केंद्र में परमात्मा-परिधि पर संसार....।

केसर जलेबी

सामग्रीः मैदा 250 ग्राम, बेसन 2 टेबलस्पून, तेल 1 टेबलस्पून, दही 3 टेबलस्पून, जलेबी का पीला रंग आधा टीस्पून, चीनी 2 कप, नींबू का रस 1 टीस्पून, केशर 1 टीस्पून, सजाने के लिए - बादाम पिस्ता की कतरन।

विधिः मैदा, बेसन, तेल और दही मिलाकर थोड़ा गर्म पानी डालते हुए हल्के हाथ से अच्छे से फेंट कर पकौड़ी के जैसा थोड़ा गाढ़ा घोल बनाए। यह मिश्रण ढक कर किसी गर्म जगह पर 5-7 घंटा रखें। उसके बाद देखेंगे कि उसमें जाली बन गई है और खट्टी खट्टी खुशबू आने लगी है, तब समझना कि यह मिश्रण जलेबी के लिए तैयार है। इस मिश्रण में जलेबी का रंग मिलाकर अच्छी से फैट ले। (अगर मिश्रण थोड़ा पतला लगता है तो उसमें थोड़ा मैदा मिलाए और अगर गाढ़ा लगता है तो पानी मिलाएं।)

चाशनी के लिएः चीनी में पानी डालकर सिर्फ एक बार उबाल आने तक पका कर चाशनी बनाये। चाशनी में केसर और निंबू का रस मिलाएं।

जलेबी वाली बॉटल में जलेबी का घोल भर लीजिए। एक लोहे की समतल पेंदे वाली कढ़ाई में घी गर्म करके उसके अंदर जलेबी के सांचे से गोल गोल जलेबीयां बनाये। दोनों तरफ से सुनहरी तलने पर घी से निकालकर चाशनी में डालें ।2 मिनट जलेबीयां चासनी में रहने दे। उसके बाद बाहर निकाल कर उस पर मेवा कतरन से सजाएं। और श्राद्ध पक्ष में अपने पित्र देवताओं को गरमा गरम केशर जलेबी का भोग धराये।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

पेड़ एवं राशि

स्वयं राशि को जानिए, फिर रोपें हम पेड़।
रक्षा तन-मन से करे, कभी न कीजै छेड़।।

कृषि व्यवस्था

पेड़ राशि का रोपिये, होंगे इष्ट प्रसन्न।
कष्ट कटेंगे आप ही, मिले आपको धन्न।।

ग्रह साधन हित कीजिए, पेड़ों का सत्कार।
राशि रत्न के फेर में, उलझा हैं संसार।।

Pterocarpus marsupium

वृषभ Taurus चितवन

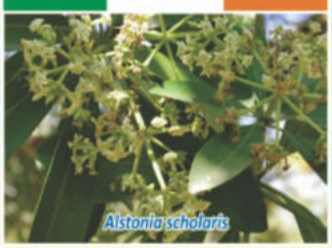
Alstonia scholaris

Michelia champaca

कर्क Cancer सीता अशोक

Saraca indica

मेष Arise विजयसार

मिथुन Gemini चम्पा

12 राशि के 12 पेड़

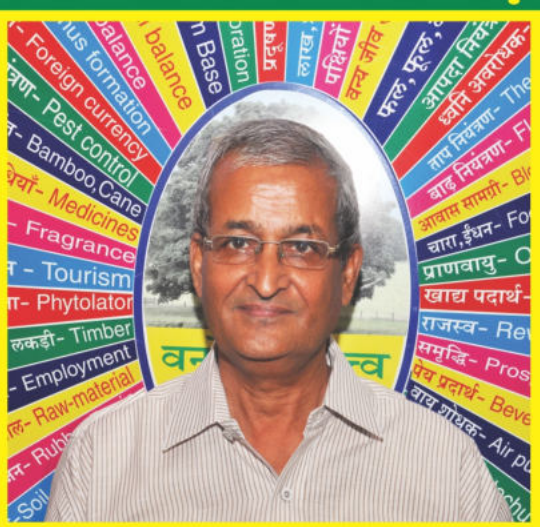

सिंह Leo पाड़ल

Steriospermum seuviolens

कन्या Virgo आम

Mangifera indica

तुला Libra मौलश्री

Mimusops elengi

वृश्चिक Scorpio ढाक

Butea monosperma

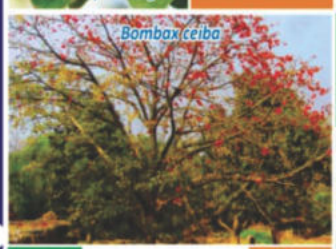
Bombax ceiba

मकर Capricornus शीशम

Dalbergia sissoo

Anthocephalus cadamba

मीन Pisces बेल

Aegle marmelos

धनु Sagittarius सेमल

कुंभ Aquarius कदम्ब

स्वयं राशि के पेड़ की, मानव राख सँभाल।
हरियाली के साथ में, दें छाया की ढाल।।

स्वयं राशि हित में सदा, पेड़ लेत संज्ञान।
ज्योतिष विद्या में छिपा, पेड़ जगत का ज्ञान।।

बिना नीचे की पाँचों मात्राओं (ा ि ी ु ू) के 6 दोहे

संसारी सब कर रहे, राशि रत्न सत्कार।
पेड़ रोपना राशि का, करता बेड़ा पार।।

साभार..
श्री नवल-शारदा डागा
बी-314, हरि मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर - 302 017 (राज.)
9460142430, 9588226351

''फ्रेंडशिप डे'' का दिन नंदवाना ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विदिशा के लिये भी यादगार बन गया। कारण था 85 वर्षीय माहेश्वरी दम्पत्ति श्री राधाकिशन व श्रीमती कमला देवी माहेश्वरी की एक साथ निकली अंतिम यात्रा जिसे देखकर हर किसी की आंखें नम हो गईं। आईये जानें प्रेम व मित्रता की मिसाल रहे इस दम्पत्ति की संक्षिप्त कहानी अंबुज माहेश्वरी की जुबानी!

अंबुज माहेश्वरी, विदिशा

हुजूर साहब पहले मैं जाऊंगी... आप पीछे से आ जाना... निभाया वादा...

अटूट प्रेम था उनमें। एक दूसरे की चिंता में दोनों को बच्चों की तरह झगड़ते देखा जा सकता था। एक तरफ से आवाज आती ''हुजूर साहब...मीठा खाओगे क्या..?'' तो जवाब मिलता, ''अरे जरूर खाऊंगा'' और जोर से ठहाका लगाते। अपने से मिलने वालों को भी प्रेम और स्नेह की फुहारों से दोनों भिगो देते थे। दोनों की कोई संतान नहीं थी लेकिन एक दूसरे में ही पूर्ण परिवार का भाव लेकर मस्त जीवन जिये जा रहे थे। राधाकिशन जी हमेशा कहते ''पहले मैं जाऊंगा'' तो कमला देवी कहतीं, ''हुजूर साहब... इसमें आपकी नहीं चलेगी, पहले मैं जाऊंगी, आप पीछे से आना।''

अभी 24 घन्टे भी पूरे नहीं हुए थे कि साथ-साथ जीने वाले करीब 85 साल के इस दम्पत्ति ने एक-एक करके देह त्याग दी और दोनों का अंतिम संस्कार भी साथ हुआ। प्रेम के सशक्त बंधन की यह कहानी है विदिशा के नंदवाना निवासी श्री राधाकिशन माहेश्वरी और श्रीमती कमला देवी माहेश्वरी की। सुबह तक कमला देवी बिल्कुल स्वस्थ थी लेकिन पास में बिस्तर पर लेटे राधाकिशन जी लंबे समय से बीमार चल रहे थे। पिछले कुछ दिनों से तो चलने-फिरने और सुनने-बोलने तक में असमर्थ हो गए थे। इतने में भी कमला देवी की आवाज भर उनके लिए प्राण वायु का काम कर रही थी। कोविड हुआ, कड़ाके की सर्दी निकली दो बार डॉक्टरों ने जवाब देकर घर भेज दिया लेकिन मानो उनकी सांसे कुछ वजह से बची हुईं थी। दूसरी तरफ कमला देवी जी तो उम्र के इस पड़ाव में भी राधाकिशन जी की पूरी देखभाल करतीं थीं।

शनिवार सुबह कमला देवी जी ने स्नान के बाद राधाकिशन जी के समीप ही प्राण त्याग दिए लेकिन वे इस बात से अंजान थे उन्हें आभास तक नहीं था कि हुजूर..साहब..कहने वाली उनकी दोस्त जैसी पत्नी अब इस दुनिया में नही रही हैं। जिसने सुना आश्चर्य में पड़ गया कि काकाजी की तबियत खराब थी, काकीजी तो अच्छी थीं उन्हें क्या हुआ....? तब कुछ करीब के लोगों ने बताया कि ये कमलादेवी की पुण्याई का फल है, वे सदैव हर पूजा में यही कामना करतीं कि इनके पहले मैं जाऊं। मुझे सुहागन ही बुलाना प्रभु...! सुहागन ही अनंत यात्रा पर निकल गई। कमला देवी की पार्थिव देह घर में रखी हुई थी जिसका अंतिम संस्कार होना था और दूसरे कमरे में राधाकिशन जी की सांसे तो चल रही थी पर जैसे उन्हें सब मालूम था कि अब हुजूर साहब की आवाज नहीं आएगी...उन्हें दुनिया में सबसे ज्यादा प्रेम करने वाली उनकी दोस्त जैसी पत्नी अब इस दुनिया में नही है। रात भी पूरी नहीं निकली और तड़के 4.30 बजे उन्होंने भी देह त्याग दी। दोनों एक दूसरे के साथ खूब जिये, जी भर जिये और जब इस दुनिया से गए तो एक दूसरे को इसकी खबर तक नहीं लगी, 56 साल तक विवाह बंधन में रहे अब अनंत यात्रा पर भी एक साथ ही गए।

राशिफल

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए व्यवसाय की दृष्टि से यह महीना मिला जुला रहने वाला है। आर्थिक दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा। रुका हुआ धन वापस आ सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना स्वयं की केयर करने वाला है। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सजग रहें। पारिवारिक दृष्टि से यह महीना मेष राशि के जातकों के लिए अत्यंत शुभ है। पुराने वाद-विवाद समाप्त होकर परिवार में स्नेह बढ़ेगा। संभवतः परिवार में सहभोज भी आयोजित होगा।

वृषभ

वृषभ राशि के जातकों के लिए यह महीना कैरियर की दृष्टि से शुभ है। व्यापार-व्यवसाय वाले जातकों के व्यापार में वृद्धि होगी एवं नौकरी पेशा जातकों को प्रमोशन एवं अपने सीनियर्स से सहयोग मिलेगा। अनावश्यक बोलने से परहेज करें। आर्थिक दृष्टि से यह महीना वृषभ राशि के जातकों के लिए आकस्मिकता लिए हुए रहेगा। अचानक धन व्यय होने की संभावना या खर्च संबंधी गलत निर्णय का शिकार हो सकते हैं। कृपया आर्थिक मामलों में सोच विचार कर कार्य करें एवं बड़ी खरीदी से बचें।

मिथुन

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह आपको विशेष सजगता रखने का है। दांपत्य जीवन की दृष्टि से यह महीना आपके जीवन साथी से कुछ विवाद उत्पन्न कर सकता है। कृपया एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करें एवं वाद-विवाद से बचें। पारिवारिक दृष्टि से भी यह महीना परिवार के अन्य लोगों से मतभेद उत्पन्न कर सकता है। आपको चाहिए कि पारिवारिक मैटर में अपनी सलाह को अंतिम सलाह न माने।

कर्क

कर्क राशि के जातक जो नौकरी में हैं उनके लिए इस माह का पूर्वार्ध बहुत अनुकूल रहेगा, जो जातक व्यवसाय में हैं उनके विदेश संबंधी कार्य एवं प्रोजेक्ट में सफलता मिलेगी। महीने के उत्तरार्ध में ज्यादा प्रयास करना पड़ेंगे एवं परिश्रम करना पड़ेगा। विद्यार्थियों के लिए सितम्बर अनुकूल रहेगा, एकाग्रता देगा। घर में धार्मिक कार्यक्रम एवं धार्मिक यात्राओं पर जाने के योग बनेंगे। दाम्पत्य जीवन के हिसाब से यह माह मनमुटाव पैदा करने वाला रहेगा। जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। व्यापारिक वर्ग के लिए यह महीना आर्थिक दृष्टि से बहुत बढ़िया रहेगा।

सिंह

सितंबर माह व्यापारी एवं नौकरी पेशा जातकों के लिए कार्य क्षेत्र की दृष्टि से अत्यंत अनुकूल रहेगा। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। सीनियर्स का एवं सहयोगियों का समर्थन मिलेगा। नवीन कार्य योजना बनेगी। विद्यार्थी वर्ग में सिंह राशि के जो जातक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, उन्हें सफलता मिलेगी। महीने के अंतिम सप्ताह में पारिवारिक मनमुटाव जो लंबे समय से चले आ रहे हैं, उनके हल होने की संभावना रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सजगता की आवश्यकता है।

कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए माह सितम्बर में कर्मचारी एवं व्यापारी दोनों ही वर्गों को कार्य क्षेत्र में भाग्य के सहयोग की संभावना है, लंबित कार्य पूर्ण होंगे। नई योजनाएं क्रियान्वित होंगी। विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करना पड़ेगी। खुद के ही विचार दिग्भ्रमित करेंगे। ऐसे में विद्यार्थियों को चाहिए कि अपना लक्ष्य निर्धारित करके चलें एवं अपने कैरियर का ध्यान रखते हुए लक्ष्य पर केंद्रित रहे। दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक वाद-विवाद से बचें।

तुला

तुला राशि के जातकों के लिए सितम्बर माह उतार-चढ़ाव लिए हुए रहेगा। कैरियर में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। आपके लिए आवश्यक है कि इस माह योग्य ज्योतिषी से सलाह लेकर उपचार करें। तुला राशि के विद्यार्थियों के लिए यह महीना अत्यंत अनुकूल है। इस समय का उपयोग करें तथा जो विद्यार्थी विदेश जाकर विद्या अध्ययन करना चाहते हैं, उन्हें भी अपने प्रयास में सफलता मिलने की संभावना है। जिन जातकों का अभी विवाह नहीं हुआ है, उनके संबंध होने की संभावना है लेकिन विवाहित जातकों के संबंधों में तनाव उपस्थित रहेगा। जो जातक पैतृक संपत्ति के लिए प्रयास कर रहे हैं उन्हें भी सफलता मिलेगी।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातक जो नौकरी पेशा हैं, व्यापारी हैं या विद्यार्थी हैं, सभी के लिए सितम्बर माह अत्यंत अनुकूल एवं शुभ फलदाई रहेगा। पारिवारिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि सामंजस्य एवं नई योजनाएं क्रियान्वित होंगी। आर्थिक दृष्टि से यह महीना अपव्यय वाला साबित हो सकता है। कृपया सोच समझकर खर्च करें। इस महिने आप किसी को कर्ज या उधार देने से बचें। सरकारी क्षेत्रो से जुडे लोगो को लाभ हो सकता है। विदेश से भी लाभ हो सकता है।

धनु

कार्य क्षेत्र की दृष्टि से सितम्बर महीना धनु राशि के जातकों के लिए शुभ है। व्यापारी अपने व्यवसाय का विस्तार करेंगे। विद्यार्थियों के लिए यह महीना परेशानियां उत्पन्न कर सकता है। अपने स्वास्थ्य एवं निर्णय के प्रति सजग रहें। परिवार में अनावश्यक विवाद संभावित है एवं दांपत्य जीवन में गलतफहमियां हो सकती हैं। इन परिस्थितियों से बचने की कोशिश करें।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए सितम्बर महीना अत्यंत अनुकूल फलदाई होकर आ रहा है। सितंबर माह के शुरुआती 2 हफ्ते संघर्ष एवं परिश्रम करवाएंगे तथा अंतिम 2 हफ्ते शुभ फलदाई साबित हो सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रयासरत विद्यार्थियों के लिए यह महीना सफलता दायक रहेगा। स्पोर्ट्स की दृष्टि से भी यह महीना सफल साबित होगा। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा।

कुम्भ

कुंभ कुंभ राशि के जातक जो जमीन, मकान, वाहन, प्रॉपर्टी से संबंधित प्रयास में लगे हैं, उन्हें इस महीने सफलता मिलने की पूरी-पूरी संभावना है। एक्सपोर्ट इंपोर्ट से संबंधित व्यापारियों के लिए भी सितम्बर महीना शुभ फलदायी है। विद्यार्थियों में खासकर जो रिसर्च से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह महीना अत्यंत शुभ है। विदेश में जाकर पढ़ाई करने की इच्छा रखने वालों के लिए सफलता के द्वार खुलेंगे। अकस्मात धन प्राप्ति योग भी बनेंगे।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए सितम्बर महीना बहुत शुभ फल लेकर आने वाला है। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे, नवीन योजनाएं बनेंगी एवं क्रियान्वित होंगी। सोच-सकारात्मक रहेगी एवं चारों ओर से सहयोगात्मक माहौल मिलेगा। विद्यार्थियों को आवश्यकता से अधिक श्रम की आवश्यकता है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों को भी रणनीति में परिवर्तन करना पड़ सकता है। परिवार से दूर रहना पड़ सकता है या परिवार में वाद विवाद संभावित है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव
हर घर तिरंगा
13-15 अगस्त 2022

मध्यप्रदेश शासन

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

देश के 76वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त प्रदेशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं

आइये, आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएं,
हर घर तिरंगा लहरायें

तिरंगे के साथ अपनी सेल्फी
harghartiranga.com पर अवश्य अपलोड करें
या इस website पर वर्चुअल फ्लैग पिन करें।

हर घर तिरंगा

D18509/22

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2022

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7,000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 22 Hospitals: 1 million patients treated

Over 75 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant.

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccine in Maharashtra. Over 4,000 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4,500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date - 02 September, 2022

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com